यह पञ्चाङ्ग गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड हो चुका है, अतः कोई महाशय इसके किसी भी मजमून की नकल करने का साहस न करें। रजिस्टर्ड नं० १८८५

॥ ॐ ॥

हृदन्तरज्ञानतमोपितान निवारयं पण्डितमण्डलीभ्यम्।
त्रिषष्ठवर्शि प्रसरन्मयूखं "मार्तण्डपञ्चाङ्ग" मिदं चकास्तु ॥

71

॥ सार्वदेशिक सर्वोत्तम शुद्धपञ्चाङ्ग ॥

श्रीगणेशाय नमः श्रीलक्ष्म्यै नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश। क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमन्महाराजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन।

राजा बुधः मन्त्री शनिः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपगर्दीया (रूपड़) वृत्तीयं सर्वानन्दलाघवीयम्

धर्मशास्त्रसम्मतम्

भारतविख्यात पञ्चाङ्गकर्ता

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पञ्जाब)

BAGHAT STATE PANCHANG

श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्गम्

* श्री विक्रमार्कीय सँव्वत् २००३ शके १८६८ सन् १९४६-४७ ई० *

गुरुवर्य्य श्री ६ पूज्यपाद कं० बा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम.ए.बी.एस.सी., गणकचक्रचूड़ामणीत्याद्युपाधिधारिणां एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित सिद्धान्तपञ्चानन पूज्य श्री ६ पं० केदारनाथ साहित्यभूषण ज्योतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गत कुराली निवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्य्येण श्री मुकुन्दवल्लभ शर्मणा विरचितम् ॥

मिलने का पता— मोतीलाल बनारसीदास पुस्तकां वाले, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर। मूल्य ।॥)

यह पञ्चाङ्ग गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड हो चुका है, अतः कोई महाशय इसके किसी भी मज़मून की नकल करने का साहस न करें । रजिस्टर्ड नं० १८८५

॥ ॐ ॥

हृदन्तरज्ञानतमोपितान निवारयं पण्डितमण्डलीव्यम् ।

त्रिष्वब्दरशि प्रसरन्मयूखं "मार्तण्डपञ्चाङ्ग" मिदं चकास्तु ॥

॥ सार्वदेशिक सर्वोत्तम शुद्धपञ्चाङ्ग ॥

श्रीगणेशाय नमः   श्रीलक्ष्म्यै नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश । क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमन्महाराजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन ।

राजा बुधः

मन्त्री शनिः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपयद्वीया (रूपद्र) बवृत्तीयं सर्वानन्दलाघवीयम्

धर्मशास्त्रसम्मतम्

BAGHAT STATE PANCHANG

भारतविख्यात पञ्चाङ्गकर्ता

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पञ्जाब)

श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्गम्

* श्री विक्रमार्कीय सँवत् २००३ शके १८६८ सन् १९४६–४७ ई० *

गुरुवर्य्य श्री ६पूज्यपाद के०बा०गोविन्द सदाशिव आपटे एम.ए.बी.एस.सी., गणकचक्रचूड़ामणीत्याद्युपाधिधारिणां एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित सिद्धान्तपञ्चानन पूज्य श्री ६ पं० केदारनाथ साहित्यभूषण ज्योतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गत कुराली निवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्य्येण श्री मुकुन्दवल्लभ शर्मणा विरचितम् ॥

मिलने का पता— मोतीलाल बनारसीदास पुस्तकां वाले, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर ।   मूल्य ॥।)

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
सद्यःफलप्रद पञ्चदशीयन्त्र, भावी विचार	१-२
दैनिक लग्नसारणियाँ, चन्द्रोदयास्त इष्टकाल	३-६
प्रसुति लग्न विचार, बालारिष्ट अन्ययोग	६-१२
पुरुष स्त्री भावस्थ ग्रहफल, मातृ-पितृनाशयोग	१३
स्त्रीजातक गण्डमूलादि बालकष्टावली	१४-१६
रोगोत्पत्तौ कुयोगाः, रोगत्रिनाड़ी तिथिवार कष्टावली	१७
नक्षत्रकष्टावली ग्रहदान मंत्रजपादि स्नानौषधि	१८-२०
जन्मकुण्डली से विचार, नक्षत्र-राशिज्ञान, अभिजिन्निर्णय नक्षत्र विषघटी	२१-२२
द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं. २००३	२३-२४
युग व्यवस्था तथा महापुरुषों की कुण्डलियें	२५-२७
ग्रहणनिर्णय, आकाशी कौंसिलादि	२८-३०
राजा मन्त्री आदि संवत्सरफल लाभखर्च	३१-३२

॥ आशीराशंसना ॥

जयन्ति श्रीमहाविद्या पदपङ्कजरेणवः ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥१॥
श्रीदुर्गासिंह वर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः ।
सनातनीं धर्मधुरं, वहन् भागवतोत्तमः ॥२॥
बघाटेशः सोलनाख्य* राजधान्यामुदारधीः ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥३॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदम्पञ्चाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसृत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥४॥

*पुरो नवपलान्यस्ति रेखातः सोलनं पुरम् ।
यत्र रुद्रव्यङ्ग लाद्रि (७।११) मितांगुलपलप्रभा ॥

विषय	पृष्ठ
२४ पत्र (चैत्रादि मास)	३३-५६
सूक्ष्मदैनिकबुध, आयुनिर्णय, खरीद बेचने के नक्षत्र	५७ ५८
शुभ कार्यों के लिए वर्जित काल, ताराबल विचार	५९
आवश्यक मुहूर्त यज्ञोपवीत मंत्रदीक्षा अनुष्ठान मु.	६०-६२
ग्रहमेलापक कन्या, वर वरण नाम बदलना	६३-६६
विवाह द्विरागमन दुकान आदि मुहूर्त	६७-७१
गृहारम्भ मु. स्वरशास्त्र नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त	७२-७३
कूप, तालाब मुहूर्त, अग्निवासादि यात्रा	७४-७६
आवश्यक यात्रा मुहूर्त, घात वारादि, पल्ली पतन फल	७७
अंगस्फुरण, उत्पात फल, तैलाभ्यंग, काकस्पर्श स्वप्न विचार	७८-८०
विंशोत्तरी महादशा, योगिनीदशा, उपयोगी प्रश्न	८१-८३
वर्षफल साधन, लग्नसारणी, दशमलग्न सारणी	८४-८६
शुद्धाशुद्ध विवाहादि मुहूर्त	८७-८८

सूचना—महोदयो ! गत कई वर्षों से लाला मेहरचन्द जी मोगे वाले हमसे अपने नाम वाली **मेहर आलम जंत्री** बनवाया करते थे ! अब हमारा इनसे संबन्ध टूट जाने के कारण मेहर आलम जंत्री का बनाना हमने छोड़ दिया है। गत वर्ष से हमारी **मार्तण्ड आलम जंत्री** बड़ी सज धज के साथ छपकर हजारों की तादाद में हाथों हाथ बिक रही है। हमारी जंत्री चाहने वाले मेहर आलम की जगह **'मार्तण्ड आलम जंत्री'** खरीद करें। **पता—मोतीलाल बनारसीदास**, हिन्दी-संस्कृत पुस्तक विक्रेता, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

भाद्रपद का पहला प्रविष्टा—

गणितस्थानीय देशभेद के कारण सूर्योदय समय की स्पष्ट संक्रांति में प्रायः कुछ पलों के ही आगे पीछे होने से प्रविष्ट में १ दिन का अन्तर होने से व्यवहार में गड़बड़ी हो जाया करती थी यह देखकर सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा की विद्वत्परिषद् ने निर्णय किया था कि—सौरपक्षीय सूर्यसंक्रांति यदि लङ्कार्कोदय-कालिक सूर्य से पहले हो तो उस मास का पहला प्रविष्टा पहले दिन अन्यथा दूसरे दिन लगाना चाहिये। स्टैंडर्ड मान से लङ्का में सूर्योदय सदैव ६ बजकर २७ मिनट पर होता है। अतः इस वर्ष व्यवहारार्थ भाद्रपद का १ प्रविष्टा १८ अगस्त को लगाया गया है। क्योंकि संक्रांति ६।२७ से पहिले है और स्पष्ट संक्रांति वही १७ अगस्त को है। इसीदिन, पुण्यकाल तथा गुरुजनों के मुख से मास नाम श्रवण का माहात्म्य है। विद्वत्परिषद् ने जो निर्णय किया वह ठीक ही है क्योंकि सिद्धान्तशिरोमणि में वारप्रवृत्ति लङ्कोदय काल से मानी है—लङ्कानगर्यामुदयाच्च भानोस्तस्यैव वारः प्रथमं बभूव। (पञ्चाङ्गकर्ता)

हर्ष समाचार—

बड़ी प्रसन्नता के साथ लिखा जारहा है कि इस वर्ष से धर्ममार्तण्ड आदर्श-नृपति श्री १०५ बघाट महीमहेन्द्र जी ने अपनी प्रकृतिसिद्ध उदारता से श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग की सहायता में विशेष वृद्धि करके मेरे उत्साह को बढ़ाया है। श्रीजगदीश्वर, श्रीमान् जी के शुभ संकल्प पूर्ण करें—

राज्यं कल्पान्तमेतत्सकलबुधमतानन्दकीर्तिस्थिरं स्यात् ।
एषा श्रीर्नित्यमेव नृपतिचरणयोरर्जितां सन्निताम्तम् ॥
गोत्रैषा सोलनस्य सकलजनमता वृष्टिनिर्धान्ययुक्ता ।
दुर्गासिंहः स भूयात्सकलनृपवरो विष्टिपेऽस्मिंश्चिरायुः ॥ (पञ्चाङ्गकर्ता)

सद्यःफलप्रद पञ्चदशी यंत्र-विधान ।

सुमुहूर्त में श्री गुरु जी से नवार्णव मन्त्र की दीक्षा और पञ्चदशी (पन्द्रा यंत्र) का विधान समझ कर किसी तीर्थ जल के किनारे पर आत्मशुद्धयर्थ पहले सवा
१ लक्ष गायत्री जपे तदनन्तर सिद्ध पीठादि किसी एकान्त देवस्थान में प्रयोग चक्रानुसार शुभ फलप्रद समय देखकर अनुष्ठान प्रारम्भ करे । यह सामग्री पास रक्खे, सवा पा पक्की दूध की रबड़ी (लप्सी), ११ पूरियाँ, सवा हाथ लंबा चौड़ा फालसे या आम का पटड़ा, शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र में लाई हुई अनार की कल में, रोली चावल गुग्गुल अगरबत्ती, फूल २१, खोपा के २१ टुकड़, तांबूल, मीठा फल, सुपारी २१, प्रथम श्रीगणेशादि पूजन पूर्वक कलश स्थापन कर शुद्ध कम्बलासन पर पूर्वाभिमुख बैठे - अर्घे मे जल लेकर विनियोग छोड़े —ॐ अस्य श्रीपञ्चदशी-मन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः त्रिपुरा देवता मम इह जन्मनि अभीष्टसिद्धये एतावत्संख्यक यन्त्रपूजनपूर्वकजपे विनियोगः । हाथ जोड़ ध्यान करे ।

ॐ बालार्क द्युति-तेजसां त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं ।
नानाभूषणभूषितां सुविमलां रत्नासने संस्थिताम् ॥
हस्तैः पाशधनुःसृणि सुरुचिरं पद्मं मुदा बिभ्रतीं ।
श्रीचक्रस्थित-सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके पटड़े पर रोली बिछावे, फिर पटड़े के शिर की तरफ फूल चावलों पर खड़ी ज्योति (फूलबत्ती) जगाय, अगरबत्ती और गुग्गुल धुखावे, रबड़ी और पूरी आधी २ केले या पलाश के पत्ते पर पटड़े के दाहिने बाएँ धरे । फिर श्री माता जी को दण्डवत् प्रणाम करके अनार की कलम से अङ्कवृद्धि क्रमानुसार (प्रथमं शैलपुत्री च, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी, तृतीयं चन्द्रघण्टेति, कूष्माण्डेति चतुर्थकम् । पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च, सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमं, नवमं सिद्धिदा प्रोक्ता नव दुर्गा, प्रकीर्त्तिताः) एक यन्त्र लिखें, यन्त्र के बीच में त्रिपुरसुन्दरी मन्त्र भी पूजार्थ लिखें, फिर यह साबरी मन्त्र पढ़े—ॐ नमो चामुंडामाई आई धाई भूवि मशालिया उठाई बालक राखे बालिनी कपाल राखे कालिका दाहिनी भुजा नृसिंहवीर राखे बाई भुजा हनुमन्त वीर राखे वीर नकारावीर खेलता आवता, वीर लगावे पाई जो इह घट पिंड की रक्षा करे, न करे तो ढटवेद बाही पर पड़े चलो मन्त्र ईश्वरोवाचा ॥ मन्त्र पढ़ने के बाद यन्त्र पर रोली चावल फूल, १ खोपे का टुकड़ा पान सुपारी चढ़ा कर धूप देवे और

पूजा यन्त्र

८	१	६
सुन्दरी	ॐ	महा
ह्रीं ३	क्लीं ५	त्रिपुर ७
श्रीं ४	स्वाहा ९	ऐं २

नवार्णव मन्त्र (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) पढ़े फिर पटड़े को हिलाय और यन्त्र लिखे पूर्वोक्त प्रकार से फिर सम्पूर्ण जा विधि करे । इस प्रकार २१ दिन तक नित्य २१ यन्त्र लिखे इक्कीसवें यन्त्र के सन्मुख ६ सहस्र नवार्णव मन्त्र का उपांशु जप करे, ऐसा २१ दिन करने से साधक के लिये यन्त्र चैतन्यावस्था को प्राप्त होता है । तदनन्तर ६ कन्या २ वटु पूजन पूर्वक बाईसवें दिन से यन्त्रसिद्धयर्थ सवा लक्ष लेखन का प्रयोग प्रारम्भ करे । धूप धुखाय ज्योति जगाये उसी पटड़े पर अङ्क वृद्धि क्रम से ११ या २१ प्रयोगयन्त्र लिखे, यन्त्रपूरित प्रति पटड़े की संख्या कौलडोडों से गिनती करे । ऐसे सवा लक्ष पूर्ण होने तक प्रति दिन यथाशक्ति ५०० या १००० तक नियम पूर्वक मौन होकर लिखता रहे जितने यन्त्र बाईसवें दिन लिखे ठीक उतने ही रोज लिखे न्यूनाधिक संख्या न करे । पटड़े को यन्त्र पूरित करके हाथ से मिटाना नहीं चाहिये, किञ्चित् हिला देने से रोली के यन्त्र स्वयं मिट जाते हैं फिर हाथ फेर कर सैंकडों वार लिख सकते हैं ऐसे सवा लक्ष पूर्ण करके यथाशक्ति हवनादि कृत्य करने पर यह अद्भुत प्रभावशाली यन्त्र सिद्ध हो जाता है तदनन्तर साधक अभीष्ट सिद्धयर्थ प्रयोग करके कठिन कार्यों में भी सहज में विजय लाभ प्राप्त कर सकता है । प्राप्त सिद्धि की रक्षार्थ नित्य नियम पूर्वक २१ यन्त्र और कम से कम १ माला नवार्णव मन्त्र की करनी अत्यावश्यक है इसमें विघ्न होना सिद्धि में न्यूनता करता है । यन्त्र सिद्धि वाला अभ्यासी साधक जिस कार्य के लिये चाहे प्रयोग करे । विना यन्त्र सिद्ध करे यन्त्रानुष्ठान कदापि सफल नहीं हो सकते, तन्त्रशास्त्र में लिखा है कि विना यन्त्र सिद्ध करे मन्त्रानुष्ठान करना ऐसा है जैसे जीव हीन शरीर से काम लेना । साधक पर अफसर दयालु हो जाते हैं, दूसरे के अटके और बिगड़े हुए वा बिगड़ रहे कार्य भी इसका अभ्यासी सहज में सिद्ध करा देता है । शत्रु उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते, श्रीजगदम्बा की कृपा से बड़े २ घमण्डी भी नतमस्तक हो जाते हैं ।

प्रयोग यन्त्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

यन्त्रानुष्ठान कार्यसिद्धयर्थ

रोगनाशार्थ व बन्दी मोचनार्थ २४ हजार यन्त्र लिखे । खेती अच्छी होय व वन्ध्या के पुत्र हो १५ हजार । शत्रुभय-निवृत्त्यर्थ व किसी की प्रसन्नतार्थ ९ हजार ॥ लक्ष्मी प्राप्त्यर्थ पीपल की कलम से पीपल के ही नीचे बैठ कर २० हजार कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से लिखे ॥

वाक्यसिद्धयर्थ बिल्व की कलम से ५० हजार ॥ अभीष्टसिद्धयर्थ अनार की कलम से वट वृक्ष के नीचे बैठ कर १५ हजार ॥

सरस्वतीप्रीत्यर्थ व परदेशगत मनुष्य के आगमनार्थ २० हजार ॥

लक्ष्मी प्राप्तियन्त्र

२	९	४
७	५	३
६	१	८

ईश्वरप्रीत्यर्थ १६ हजार। मुकद्दमे की विजयार्थ ५४ हजार। साधक को चाहिये कि, साधारण दुःख कष्ट चिन्ता निवृत्त्यर्थ भूर्जपत्र पर अनार की कलम से यन्त्र लिख कर धारण करवा देवे तो भी अद्भुत फल दीखेगा। अपामार्ग (पुठकंडा) रस से भोजपत्र पर लिख कर देने से सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं। बच्चों स्त्रियों के भी कष्ट शीघ्र शान्त हो जाते हैं, 'किम्बहुना' जिस किसी अड़े हुए कार्य के लिये लिख कर देवेगा वह कार्य अवश्य सफल होगा इसमें सदेह नहीं।

सूचना—यन्त्रसाधना के दिनों में मनसा वाचा कर्मणा ब्रह्मचर्य से रहे, स्त्रियों के चेहरे की ओर कदापि दृष्टिपात न करे। एक वक्त भोजन करे, प्रतिग्रह परान्न परापवाद से सर्वथा दूर रहे। यह भी स्मरण रहे कि विना गुरुदीक्षा के साधक सिद्धि को प्राप्त नहीं हो सकता। तन्त्रशास्त्र में लिखा भी है—

मन्त्रदीक्षाविहीनस्य न सिद्धिर्नच सद्गतिः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितो भवेत्॥

एतदर्थ सत्पात्र साधक को चाहिये कि तन्त्रज्ञ सद्गुरु से पहिले दीक्षा लेकर तब इस साधना का साधक बने।

इस यन्त्र के विशेष गुह्यरहस्य गुरुगम्य हैं जिनका लेख द्वारा पूर्ण ज्ञान करा देना असम्भव है।

आप सिद्धि के इच्छुक हो तो दृढ़प्रतिज्ञ और सत्पात्र बनों, असम्भव भी सम्भव हो जायगा।

(शिवमस्तु सर्वजगताम्)

हर प्रकार की पुस्तक प्राप्ति के लिये —
मोतीलाल बनारसीदास
सैदमिट्ठा बाजार लाहौर को सदा याद रक्खें।

* भावी विचार *

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षा काल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढ़ा से पुनवसु, उत्तराषाढ़ा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुणी, पूर्वाभाद्रपद से उफा. उ.भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट करलें जिस से वर्षा का अन्दाज़ा ध्यान में रहे॥

(२) माघ शुक्ल सप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है॥

(३) माघ शुक्ल नवमी को बादल वा वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है॥

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल वा वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघ गर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खैंच ज़रूरी होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायुशास्त्रसम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटे बिजली वा वर्षा हो और मृगशिर में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो वा वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटे न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खैंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बून्दा बान्दी हो जाय तो वायुमण्डल में यदि पहिले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बून्दा बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य रहे तब तक सूर्य अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खैंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खींच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिए, रोहिणी में बून्दाबांदी होने पर वर्षा की खैंच ज़रूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खैंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिर नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है॥

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२८	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
१	९।२२	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।१	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।२	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८|१७	१०|३७	१२|५८	१५|१८	१७|२२	१९|४	२०|३०	२१|५२	२३|२६	१|२०	३|३४	५|५६
२	८|१३	१०|३३	१२|५४	१५|१४	१७|१८	१९|०	२०|२६	२१|४८	२३|२२	१|१६	३|३०	५|५२
३	८|९	१०|२९	१२|५०	१५|१०	१७|१४	१८|५६	२०|२२	२१|४४	२३|१८	१|१२	३|२६	५|४८
४	८|५	१०|२५	१२|४६	१५|६	१७|१०	१८|५२	२०|१८	२१|४०	२३|१४	१|८	३|२२	५|४४
५	८|१	१०|२१	१२|४२	१५|२	१७|६	१८|४८	२०|१४	२१|३६	२३|१०	१|४	३|१८	५|४०
६	७|५७	१०|१७	१२|३८	१४|५८	१७|२	१८|४४	२०|१०	२१|३२	२३|६	१|०	३|१४	५|३६
७	७|५३	१०|१३	१२|३४	१४|५४	१६|५८	१८|४०	२०|६	२१|२८	२३|२	०|५६	३|१०	५|३२
८	७|४८	१०|८	१२|२९	१४|४९	१६|५३	१८|३५	२०|१	२१|२३	२२|५७	०|५१	३|५	५|२७
९	७|४४	१०|४	१२|२५	१४|४५	१६|४९	१८|३१	१९|५७	२१|१९	२२|५३	०|४७	३|१	५|२३
१०	७|४०	१०|०	१२|२१	१४|४१	१६|४५	१८|२७	१९|५३	२१|१५	२२|४९	०|४३	२|५७	५|१९
११	७|३६	९|५६	१२|१७	१४|३७	१६|४१	१८|२३	१९|४९	२१|११	२२|४५	०|३९	२|५३	५|१५
१२	७|३२	९|५२	१२|१३	१४|३३	१६|३७	१८|१९	१९|४५	२१|७	२२|४१	०|३५	२|४९	५|११
१३	७|२८	९|४८	१२|९	१४|२९	१६|३३	१८|१५	१९|४१	२१|३	२२|३७	०|३१	२|४५	५|७
१४	७|२४	९|४४	१२|५	१४|२५	१६|२९	१८|११	१९|३७	२०|५९	२२|३३	०|२७	२|४१	५|३
१५	७|१९	९|३९	१२|०	१४|२०	१६|२५	१८|६	१९|३२	२०|५४	२२|२८	०|२२	२|३६	४|५८
१६	७|१५	९|३५	११|५६	१४|१६	१६|२०	१८|२	१९|२८	२०|५०	२२|२४	०|१८	२|३२	४|५४
१७	७|११	९|३१	११|५२	१४|१२	१६|१६	१७|५८	१९|२४	२०|४६	२२|२०	०|१४	२|२८	४|५०
१८	७|७	९|२७	११|४८	१४|८	१६|१२	१७|५४	१९|२०	२०|४२	२२|१६	०|१०	२|२४	४|४६
१९	७|३	९|२३	११|४४	१४|४	१६|८	१७|५०	१९|१६	२०|३८	२२|१२	०|६	२|२०	४|४२
२०	६|५९	९|१९	११|४०	१४|०	१६|४	१७|४६	१९|१२	२०|३४	२२|८	०|२	२|१६	४|३८
२१	६|५५	९|१५	११|३६	१३|५६	१६|०	१७|४२	१९|८	२०|३०	२२|४	२३|५८	२|१२	४|३४
२२	६|५०	९|१०	११|३१	१३|५१	१५|५५	१७|३७	१९|३	२०|२५	२१|५९	२३|५३	२|७	४|२९
२३	६|४६	९|६	११|२७	१३|४७	१५|५१	१७|३३	१८|५९	२०|२१	२१|५५	२३|४९	२|३	४|२५
२४	६|४२	९|२	११|२३	१३|४३	१५|४७	१७|२९	१८|५५	२०|१७	२१|५१	२३|४५	१|५९	४|२१
२५	६|३८	८|५८	११|१९	१३|३९	१५|४३	१७|२५	१८|५१	२०|१३	२१|४७	२३|४१	१|५५	४|१७
२६	६|३४	८|५४	११|१५	१३|३५	१५|३९	१७|२१	१८|४७	२०|९	२१|४३	२३|३७	१|५१	४|१३
२७	६|३०	८|५०	११|११	१३|३१	१५|३५	१७|१७	१८|४३	२०|५	२१|३९	२३|३३	१|४७	४|९
२८	६|२६	८|४६	११|७	१३|२७	१५|३१	१७|१३	१८|३९	२०|१	२१|३५	२३|२९	१|४३	४|५
२९	६|२२	८|४२	११|३	१३|२३	१५|२७	१७|९	१८|३५	१९|५७	२१|३१	२३|२५	१|३९	४|१
३०	६|१८	८|३८	१०|५९	१३|१९	१५|२३	१७|५	१८|३१	१९|५३	२१|२७	२३|२१	१|३५	३|५७
३१	६|१४	८|३४	१०|५५	१३|१५	१५|१९	१७|१	१८|२७	१९|४९	२१|२३	२३|१७	१|३१	३|५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८|३४	१०|५६	१३|१५	१५|२०	१६|२	१८|२७	१९|५०	२१|२३	२३|१८	१|३२	३|५३	६|१४
२	८|३०	१०|५२	१३|११	१५|१६	१६|५८	१८|२३	१९|४६	२१|१९	२३|१४	१|२८	३|४९	६|१०
३	८|२६	१०|४८	१३|७	१५|१२	१६|५४	१८|१९	१९|४२	२१|१५	२३|१०	१|२४	३|४५	६|६
४	८|२२	१०|४४	१३|३	१५|८	१६|५०	१८|१५	१९|३८	२१|११	२३|६	१|२०	३|४१	६|२
५	८|१८	१०|४०	१२|५९	१५|४	१६|४६	१८|११	१९|३४	२१|७	२३|२	१|१६	३|३७	५|५८
६	८|१४	१०|३६	१२|५५	१५|०	१६|४२	१८|७	१९|३०	२१|३	२२|५८	१|१२	३|३३	५|५४
७	८|१०	१०|३२	१२|५१	१४|५६	१६|३८	१८|३	१९|२६	२०|५९	२२|५४	१|८	३|२९	५|५०
८	८|६	१०|२८	१२|४७	१४|५२	१६|३४	१७|५९	१९|२२	२०|५५	२२|५०	१|४	३|२५	५|४६
९	८|२	१०|२४	१२|४३	१४|४८	१६|३०	१७|५५	१९|१८	२०|५१	२२|४६	१|०	३|२१	५|४२
१०	७|५८	१०|२०	१२|३९	१४|४४	१६|२६	१७|५१	१९|१४	२०|४७	२२|४२	०|५६	३|१७	५|३८
११	७|५४	१०|१६	१२|३५	१४|४०	१६|२२	१७|४७	१९|१०	२०|४३	२२|३८	०|५२	३|१३	५|३४
१२	७|५०	१०|१२	१२|३१	१४|३६	१६|१८	१७|४३	१९|६	२०|३९	२२|३४	०|४८	३|९	५|३०
१३	७|४६	१०|८	१२|२७	१४|३२	१६|१४	१७|३९	१९|२	२०|३५	२२|३०	०|४४	३|५	५|२६
१४	७|४२	१०|४	१२|२३	१४|२८	१६|१०	१७|३५	१८|५८	२०|३१	२२|२६	०|४०	३|१	५|२२
१५	७|३८	१०|०	१२|१९	१४|२४	१६|६	१७|३१	१८|५४	२०|२७	२२|२२	०|३६	२|५७	५|१८
१६	७|३३	९|५५	१२|१४	१४|१९	१६|१	१७|२६	१८|४९	२०|२२	२२|१७	०|३१	२|५२	५|१३
१७	७|२९	९|५१	१२|१०	१४|१५	१५|५७	१७|२२	१८|४५	२०|१८	२२|१३	०|२७	२|४८	५|९
१८	७|२५	९|४७	१२|६	१४|११	१५|५३	१७|१८	१८|४१	२०|१४	२२|९	०|२३	२|४४	५|५
१९	७|२१	९|४३	१२|२	१४|७	१५|४९	१७|१४	१८|३७	२०|१०	२२|५	०|१९	२|४०	५|१
२०	७|१७	९|३९	११|५८	१४|३	१५|४५	१७|१०	१८|३३	२०|६	२२|१	०|१५	२|३६	४|५७
२१	७|१३	९|३५	११|५४	१३|५९	१५|४१	१७|६	१८|२९	२०|२	२१|५७	०|११	२|३२	४|५३
२२	७|९	९|३१	११|५०	१३|५५	१५|३७	१७|२	१८|२५	१९|५८	२१|५३	०|७	२|२८	४|४९
२३	७|५	९|२७	११|४६	१३|५१	१५|३३	१६|५८	१८|२१	१९|५४	२१|४९	०|३	२|२४	४|४५
२४	७|१	९|२३	११|४२	१३|४७	१५|२९	१६|५४	१८|१७	१९|५०	२१|४५	२३|५९	२|२०	४|४१
२५	६|५७	९|१९	११|३८	१३|४३	१५|२५	१६|५०	१८|१३	१९|४६	२१|४१	२३|५५	२|१६	४|३७
२६	६|५३	९|१५	११|३४	१३|३९	१५|२१	१६|४६	१८|९	१९|४२	२१|३७	२३|५१	२|१२	४|३३
२७	६|४९	९|११	११|३०	१३|३५	१५|१७	१६|४२	१८|५	१९|३८	२१|३३	२३|४७	२|८	४|२९
२८	६|४५	९|७	११|२६	१३|३१	१५|१३	१६|३८	१८|१	१९|३४	२१|२९	२३|४३	२|४	४|२५
२९	६|४१	९|३	११|२२	१३|२७	१५|९	१६|३४	१७|५७	१९|३०	२१|२५	२३|३९	२|०	४|२१
३०	६|३७	८|५९	११|१८	१३|२३	१५|५	१६|३०	१७|५३	१९|२६	२१|२१	२३|३५	१|५६	४|१७
३१	६|३३	८|५५	११|१४	१३|१९	१५|१	१६|२६	१७|४९	१९|२२	२१|१७	२३|३१	१|५२	४|१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

दैनिक लग्न सारणी देखने की रीति—

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिण्ट लिखे हैं। वे रेल्वे के व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं। जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे-वैशाख प्रविष्ट १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४६ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४६ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्ति काल १८।६ अर्थात् शाम के ६ बजकर ६ मिनट पर है अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न रहा। ऐसे सर्वत्र जानिये। इस सारणी से लग्न की संधि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

अथ चन्द्रोदयास्त ज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमूनं च युतं मुनाभ्याम्। कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन की रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उसमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्ण पक्ष की हो तो गुणन की हुई अङ्क संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उस में १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्ण पक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिन मान में युक्त करने से जो घट्यादि होवे उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानो।

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति—

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घण्टे मिण्टों को घटाकर जो घण्टे मिनट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक का जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों की घड़ी पल बनाकर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे अर्द्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अङ्क) में जोड़ देने से सूर्योदयात शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन का स्वदेशीय सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिलालें, फिर जितने घण्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट—१ घड़ी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलीन। ४।११।१६।३४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुला दान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत, स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८। ३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।२८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जाप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा,

वामाङ्ग भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया. ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान, मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३.२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्य हृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न वाली चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत्य कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।२६।५५ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में गोदान मृत्युञ्जय जपादि और मूङ्गी के मोदक भोजन कराना श्रेयस्कर है, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज़ क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ व ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५.३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं. दीपक स्वस्थान में टिका रहा. बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिम भाग में प्रसव स्थान, ११.२८।३८।५२। ६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जयजप और तुलादान करना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन. जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया. बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान, २।१०।१८.३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़ दुग्ध वा कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया. घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिका स्थान, ५।१३।२७.३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में रुद्राभिषेक, स्वर्णदान, अन्नदान करना श्रेष्ठ है. यदि इन वर्षों से बचे तो ६५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का पश्चिम को शिर, जीर्ण धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २. १ स्त्री पीछे से आई, उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह, २।२८।३२।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है. इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन. जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान कोण में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह शांति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितुःपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो; इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का, पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या वहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कहि शनौ लोह कहि सोय॥

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान— लग्न पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान । चतुर्थ उत्तर । पञ्चम षष्ठ वायव्य । सप्तम पश्चिम । अष्टम नवम नैऋत । दशम दक्षिण ।
११ एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना ।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचारः—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्नि स्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जल स्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धन स्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए ।। दो० लग्न नाथ जो केन्द्र में तौन दिशा को द्वार । वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च वा मूल त्रिकोण राशि का केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित) ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिका गृह का द्वार होता है । **ग्रहों की दिशा**—सूर्य की पूर्व चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण बुध की उत्तर, गुरु की ईशान. शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत ।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीपक, के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्म काल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना । सो०-तनुस्थान शशि आई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि । सित शनि दशनें धाम पञ्चम तनु पै चन्द्रमा, शिशु जन्में तब वाम, दीप तैल सों युक्त कहि ।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें ।

चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना । परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो उसके अंश देखे । यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसको गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े । इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हो, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े । लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा । इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रह लग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यंत होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में. और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना । उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हो वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे ।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार—

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषड्ढान्त्येषु पादाः । लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत, ७।८ में पश्चिम, ६ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ़ जानना । तीसरा छठा, नौवां बारहवां स्थान पाये जानना । इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना ।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान । वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परिमाण ।। भानु तथा सौरी तनु धन कुज कंटक चन्द । बालक के षट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द । तनु स्थान पे शुक्र हो अष्टम जावे राहु । वामकर्ण वा मस्तके अवश जिह्न दरशाहु ।। सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न । वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ।। नौमें पांचमें भृगु बसे तनुत्रा चौथे मन्द । मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भयांद ।।

बालारिष्ट—

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, वरहै शशी जो खीन ।
कण्टक शुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन ।।

बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भौन में पाप । एक मास में शिशु मरे मातु पिता सताप ।। लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप । एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ।। लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव । बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ।।

अथ काण योगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम । वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम ।। सार्क शुक्र तनुनाथयुत भवन बसे त्रिक जाय । जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय ।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ । सार्क शुक्र त्रिक भवन में, ताहि नयन नहिं साथ ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान । भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ।।

मूक योगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौन-पतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक त्रिके गुरुसिंह अज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं हुधकृन करत प्रकाश॥

दुःखद योगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अङ्ग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु दुःख विश्वावीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परे लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रजताय॥

बन्धन योगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निवसे कारागार॥

सुखद योगाः—अङ्गधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गेह में परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीबयोगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्फ षट मन्द बसे क्लिब भानु॥

कुष्टयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्णा कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुधत्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुज कहि दून॥

केमद्रुम—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रहकोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारै खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन का उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मङ्गल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्म काल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा जन्म काल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब ही मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनि देकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐ मुक्ता पाशविमुक्ताश्च मुक्ता सूर्येण रश्मयः। मुक्ता सर्वभयाद्गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसा यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

तीसा यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ठ्या भानुभानु प्रकीर्तिता। नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात्॥

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह बारह घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं। यदि अमावस्या का स्पष्ट घट्यादि मान ६० घड़ी से न्यूनाधिक्य हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक्य जाने।

अथ मात सुख नाशयोगाः—(१) पाप ग्रह से युक्त

❊ अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रह फलानि ❊

भावाः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१३ तनु १	शूर अगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	निरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुखी	सुखभोगी	दुखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म ९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान	संपत्तिमा.	संपत्तिमा.	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

❊ अथ स्त्री जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रह फलानि ❊

भावाः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीनः	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदत्ता	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणाज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	बन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणाढ्या	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	निरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृ सुख नाशयोगाः—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मङ्गल होवे (५) चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिये।

पितृनाशयोगाः (१) सूर्य मङ्गल दशमें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो॥

भ्रातृनाशयोगः—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम सङ्ग त्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृ हीन नर होय॥

संतान सुख नाशयोगः—

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव॥ पुत्र धर्म अरु लग्न पति, जाय परे त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र को हान॥

रोगिणी स्त्रीयोगः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन मे क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जातमन साई॥ सिंह लग्न ज.मे शिशु सप्तम शनि विकाल। म्लेच्छ होइ कुछ दिवस में यद्पि ब्रह्म को बाल॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विरा.न। लहे सर्वदा राज सुख, होवे वेश्याबाज॥

जारज योगाः—भानु चन्द्रत ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथि चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कही परार।

अथ स्त्री जातक— रूलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहिउ कोय॥ जाके कुज दशमें बसे स्वामी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहें कुज नीच॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निधन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजै तमारि॥ छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अङ्क। भौम आठ भवन में सो पति करिहै भङ्क॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे तनु धाम। रण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि॥

वैधव्य (विष कन्या) योगाः—चौ०—रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥ १॥ कृतिका होय शनिश्चर वार। साते तिथि का करो विचार॥ २॥ होय शतभिषा मङ्गलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय॥ ४॥ जन्म लग्न द्वै शुभ ग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥ ५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥ ६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय॥ ७॥ परे शतभिषा मङ्गलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो सोय॥ ९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥ १०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान॥ ११॥

वैधव्य (विषकन्या) भंग योगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादि योगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई—केंद्रधाम नभग शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ है सुत वाके॥ चंद्रज तुङ्ग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में सोई॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सौमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपआवपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है॥ माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तल्लक्षण दान कर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है। **बालक की दन्तोत्पत्ति मास फल**—

१	२	३	४	५	६	मास
शरीर नष्ट	छोटा भ्राता नष्ट	भगिनी नष्ट	भ्राता नष्ट	ज्येष्ठ भ्राता नष्ट	बहुत भोग	फल
७	८	९	१०	११	१२	मास
पिता से सुख	पुष्टता	धनी	सुख	सुख	धनी	फल

यदि बच्चे के सर्वप्रथम ऊपर की दन्तपंक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो, सदन्तोर्ध्वपंक्ति वाला बालक जन्मे तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है, शान्ति करनी चाहिये। **अथैकनक्षत्रजनन फलम्**—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता का एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

कन्याजन्मनि नक्षत्र फलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	बिशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सासनाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः॥

मौन । सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होइ है तौन ॥

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः । तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः ॥

अथ गण्ड मूल नक्षत्राणि

अश्विनी । आश्लेषा । मघा । ज्येष्ठा । मूला । रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिएं तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
७	८	१०	११	१२	५	४	३
मूल नाश	वंश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभः	राज मन्त्री	राज प्राप्ति	अल्प आयु

अथ मूल निवास चक्रम्

जन्ममास	वै० ज्ये० मार्ग० फा०	आषा० आ० मा० भा०	चै० श्रा० का० पौ०
जन्मलग्न	२।५।८।११	१।४।७।१०	३।६।९।१२
मूलनिवास	पाताले	स्वर्गे	भूमौ
फल	शुभ	शुभ	कुलहानि

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता । शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत् । शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतिपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ । शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः । जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते । तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत् । शतछिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति । जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः । मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूल विचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति ह्यभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपसमान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल।

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में	समय
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	फल

मघा पाद फलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश। तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका । न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा ॥

रेवतीपादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृ हानि	मातृ हानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धन हानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखे कि जन्म किस भाग में है तदनुसार फल जाने, अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे ॥ सिनीवाली= जिस अमावास्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू=जिसमें चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

बाल कष्टावली चक्रम्

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़े और बलि को सात बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन हो कर रख आवे॥

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है ?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचंदन, तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दुष्टग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसन, गोशृङ्ग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यानता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात, सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्ण पोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
पञ्चम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठः चामुण्डे सर्वेरि चण्डिके ठःठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हँसना कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ सिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर।	योगिनीविधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरस्ते पर मौन होकर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	गेहूंकीरोटी, मसूरकीदाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन हन हुं फट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घीभूने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिणमें चौरस्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमाञ्च, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ शोषय २ हुं ३ हन २ दुष्टानां ह्रां हुं फट् स्वाहा।	

सकल बालग्रह विनाशक धूनी—१ मोर की चंद्रिका, २ नीम के पत्ते, ३ कटेरी के फल, ४ सिरस, ५ हींग, ६ जटामांसी, ७ बिनौले, ८ बकरे के रोम, ९ सांप की कांचली, १० बिल्ली की बिष्ठा वा रोम, ११ हाथी दांत का चूर्ण १२ सिंह रोम वा मांस; इन १२ चीजों को पीसकर घृत में मिला घर में धूनी देवे। इससे पूतना के अलावा अन्य बालग्रह पिशाच व राक्षस इनके सर्वमूर्च्छादि उपद्रव व ज्वर दूर होते हैं।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से
१७ आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी व अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मङ्गलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता आर्द्रा व धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनि बारों को ४।६।६।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु वा मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप कराना कल्याणप्रद है॥

अथ रोग त्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू. फा.	उ फा	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल.	श्रवण	पू. भा	अश्वि	रो	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा.	स्वा.	पू षा.	उ.षा.	उ. भा	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र वा नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ी चक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उस दिन निस्सन्देह रोगी को मृत्यु कहे। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ां) होती हैं। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयन्त्र

ओं

प	त	क	॰
३	४६	८	३३
३५	८७	५	३६
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहिले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिख कर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिख कर आटे की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे।

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शकराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलिचित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलिपीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलि रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदे	७	मोदकान्नबलिपीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलिश्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि चौदशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्न. ो.

वार कष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदाः
श	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

यस्मिनृक्षे यदा नृणां रोगःसंजायते तदा । तद्विष्णुपूजाकर्तव्या तत्पतीश्वरतुष्टये ॥ खवोशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिंगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः । वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं शिवाय ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्रौ)	६	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वर अर्द्धगात्रपीड़ा निद्राभंग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्प घृत-गुग्गलधूप घृतदीप क्षीरमोदकगुड़नैवेद्य	गुड़ौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृत कुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुःप्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥१॥	५ हज़ार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेकरोग तीव्रज्वर आलस्य दर्द्दरोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गल-धूप घृतदीप गुड़ोदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापात्र ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वासवितामध्वानक्तु । पृथिव्याःसꣳस्पृशस्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोसियमायनमः ।२।	१० हज़ार
कृत्तिका (अग्निः)	६	११	१६	२८	कर्पास-मूलम्	उरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा ।	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गल-धूप घृतदीपतिलमाषान्न बड़ाघीकानैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ꣳ रेताꣳसि जिन्वति । ॐ अग्नये नमः ॥ ३ ॥	१० हज़ार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	६	१८	२०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीड़ा कुक्षिशूल शिरपीड़ा, प्रलाप ।	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य क्षौद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णागो-दान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः । सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ॐब्रह्मणेनमः ।४।	५ हज़ार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	६	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीड़ा. महा-कष्ट. त्रिदोष ।	श्वेतचंदन गन्ध, कमल पुष्प दशांगधूप घृतदीप पायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्यन्न	दधिपायस	दधि तण्डुल सवत्सा-गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐइमंदेवाअसपत्न ꣳ सुवध्वंमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशएषवोऽमी राजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ ॐचन्द्रमसे नमः ॥५॥	१० हज़ार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वर सर्वांगपीड़ा त्रिदोष, अनिद्रा ।	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूप घृतदीप पायसौदननैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	कृष्ण वृषभ कृष्ण वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ६ ॥	१० हज़ार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वर शिरपीड़ा, कटिपीड़ा ।	हरिद्राकुंकुम गन्ध सेवन्तिकापुष्प अष्ट-गन्धधूप घृतदीप घृताक्तपीतवर्णान्ननैवेद्य	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् । ॐ अदितयेनमः ।७।	१० हज़ार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुवार-मूलम्	ज्वर शूल महा-कष्ट ।	कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गलधूप घृतदीप घृतपायसशर्करानैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥८॥	१० हज़ार
आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वांगपीड़ा पादपीड़ा मृत्युसमकष्ट ।	कुंकुमअगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गलधूप घृतदीप घृतक्षीरनैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छाया-पात्र ब्राह्मणभोजन	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥ ६ ॥	१० हज़ार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृंगराज-मूलम्	अर्द्धगात्रपीड़ा तथा शिरपीड़ा ।	श्वेतचन्दनगन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गलधूप घृतदीपघृतमिष्टान्ननैवेद्य	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधा नमःअक्षन्पितरो मीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॐपितृभ्यो नमः॥१०॥	१० हज़ार
पू. फा (भगः)	०	१४	०	३०	कण्टकारि-मूलम्	ज्वर शिरपीड़ा गात्र-व्यथा	श्वेतचंदनगंध मालतीपुष्प घृतबिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु(कंगनी) तिल घृत	पित्तल यव माषान्न स्वर्ण-गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमांधियमुदवाददन्नः । भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ ॐ भगायनमः ॥ ११ ॥	१० हज़ार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल, शिरपीड़ा, ज्वर अतिकष्ट ।	कर्पूरकेसरगंध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्र रजत स्वर्णान्न गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ देव्यावध्वर्यू आगत ꣳ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वायज्ञ ꣳ समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ॐअर्यम्णे नमः ॥१२॥	१० हज़ार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा उदरशूल सर्वांगपीड़ा प्रस्वेद ।	रक्तचन्दनकेसरगंध कमलपुष्प घृत गुग्गलधूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्ण पयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् । वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाःपुपोषपुरुधाविराजति ॥ सवित्रे नमः	५ हज़ार

कर्मठगुरुः—यह कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थ रत्न है। जप, मन्त्र, पुरश्चरणादि के अनेकों विधान और सिद्धिप्रद तांत्रिक प्रयोग भी दिये गये हैं। सिद्ध पुष्टि विधि और कई अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं। टिप्पणी में प्रमाण से सब बातें स्पष्ट कर दी हैं, जिससे सन्देह का कोई स्थान ही नहीं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक कहीं नहीं छपा। मू० २)

नक्षत्र कष्टावली

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जप संख्या
१९ चित्रा (विश्वकर्मा)	११	६	६	१६	मलय-मूलम्	विचित्रानेक रोग, अतिकष्ट।	केसरअगरगंध विचित्रवर्णपुष्प घृत गुग्गलधूप घृतदीप विचित्रान्नमोदक नै०	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुड़विचित्रवृषभछाया-पात्रदान ब्राह्मणभोजन	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना। द्विपदाछन्दऽइंद्रिय मह्यागौर्नवयोदधुः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥	१० हज़ार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३०	०	आति-मूलम्	नाना कष्ट	चन्दनगंध दमनकपुष्प अगर गुग्गल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्राह्मणभोजन	ॐ वायोयेते सहस्रिणो रथासस्ते भिरागहि नियुत्वान्सोमपीतये॥ ॐ वायवे नमः ॥१५॥	१० हज़ार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१२	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूल सर्वांगपीड़ा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृतधूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्र कृष्णावृषभ छायापात्रदान विप्रभोजन	ॐ इंद्राग्नी आगतꣳ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्यपातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥ १६॥	१० हज़ार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	३०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगंध कमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य गुड़ माषान्न	यवाज्य	स्वर्णगोछायापात्रदान ब्राह्मण भोजन	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतꣳ सपर्यत दूरदृशे देवजाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशꣳसत्।ॐमित्रायनमः॥१७॥	१० हज़ार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५६	६	६	४	अपामार्ग-मूलम्	व्याकुलता चित्तरोग कम्पन	श्वेतचन्दनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूरधूप घृतदीप मनोहरचित्रान्ननैवेद्य	दध्योदन सुपुष्प	तिल तण्डुल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्रदान ब्राह्मणभोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः। ॐशक्राय नमः॥१८॥	५ हज़ार
मूलम् (राक्षसः)	०	६	१५	६	मन्दार-मूलम्	उदर तथा मुख रोग, सन्निपातभय	कृष्णाअगरगन्ध,नीलोत्पलपुष्प घृतदीप कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्ननैवेद्य।	सहवि माषान्न	घृत कन्द मूल	स्वर्णवस्त्रकृष्णागो छाया-पात्रदानकुमारीपूजाविप्रभो.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निꣳस्वेयोनावभारुखा। तां विश्वैर्देवै ऋतुभिःसंवदानःप्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिऋतयेनमः।१९॥	५ हज़ार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कर्पास-मूलम्	शिरपीड़ा कम्पन महाकष्ट।	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्नहवि	तिल तण्डुल घृत	स्वर्णवस्त्रतिलतण्डुलजल-कुम्भगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अपाघमप किल्बिषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदप दुःष्वप्न्यꣳसुव॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥२०॥	५ हज़ार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कर्पास-मूलम्	ऊरुशूल कटिपीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मणभोजन	ॐविश्वेदेवाः शृणुतेमꣳहवंमेयेअन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठायेअग्निजिह्वा उतवायजत्राआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्ॐविश्वेभ्योदेवेभ्योनमः।	१० हज़ार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	६	अपामार्ग-मूलम्	अतिसार सर्वांगपीड़ा त्रिदोष भय	श्वेत चन्दनगंध मालतीपुष्प कर्पूर गुग्गल धूप घृतदीप षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापात्रदान ब्राह्मणभोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णवे नमः ॥२२॥	१० हज़ार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृङ्गराज-मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वरकंपन रक्तातिसार	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्प गुग्गल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायस मोदका-पूपतिलपिष्ट	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐवसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः वसुभ्योनमः॥	१० हज़ार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल-मूलम्	सन्निपातभय वातज्वर कष्ट	केसर अगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचंदन-धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलाजपदअश्व छायापात्रगोदानकुमारी पूजा ब्राह्मणभोजन	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्यसी वरुणस्यऽऋत सदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हज़ार
पू. भा. (अजैकपात्)	०	१२	२१	१६	भृंगराज-मूलम्	शरीरपीड़ा त्रिदोष व्याकुलता वमन।	केसरचन्दनगन्ध श्वेतार्कपुष्प शतौषधि मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनैवेद्य	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजतअजश्वेतवस्त्र छायापात्रदानब्राह्मणभोजन	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधोहुवानाः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः॥	१० हज़ार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	१०	२०	६	१५	अश्वत्थ-मूलम्	शूल ज्वर वात-व्याधि अतिसार कामला रोग।	चन्दन कर्पूरगन्ध कमलपुष्प बिल्व गुग्गलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजत तिलकृष्णावस्त्र दान ब्राह्मणभोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तुमामा हिꣳसीः। निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हज़ार
रेवती (पूषा)	१८	१०	६	२०	अश्वत्थ-मूलम्	चित्तभ्रम ऊरुशूल ज्वर वातपित्तभय	रक्तचन्दनगंध, मंदारपुष्प घृतगुग्गल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्रपैत्तलपात्रवृषभ छायापात्रदान ब्राह्मणभोजन	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि॥ ॐ पूष्णे नमः ॥२७॥	५ हज़ार

ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येक ग्रहाणां दानपदार्थाः												जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णागो	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्या.	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खडग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथीदांत	मुंथेशरत्न	मुन्थेश मन्त्रः	मुन्थेशकाले	

सूर्यादि ग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलट्ठी	सुवृत्तला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदन्त
खश	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

सप्त धान्य—उड़द १. मूंगी २, कणक (गेहूँ) ३, छोले (चणों) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७ ॥

अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी जव. सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधि. लोध इन औषधियों के जल से तत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है ॥ गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपति) ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां गिरिजां गयाम् ।

शनि विचार.—गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः । द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये द्यूनादौ च विलोमतः ॥ फलं—नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृदये मानसी व्यथा । चरणे भ्रमणं देशे देशे संचारयेच्छनिः ॥ अथ लघु कल्याणी (ढया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे । व्याधिं बन्धुविरोधदेशगमन क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं । लोह शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढ़सती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनि। नाना क्लेश करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् । हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् । रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥ २ ॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्ट शुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव
२१ का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तब भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा ल०—तृ०=शे० । द० + मं०=यो. शे.—यो=शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मङ्गल इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्ण-दर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योग फल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) शु० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता को खतरे का समय जानना—(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेषराश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १ । २ । ७ । १२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अङ्क में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष पल रहें उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। "लग्नांशप्राणांशपदैक्यता स्यात्" लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं॥

अथ नक्षत्र राशि ज्ञान चक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०

राशयः	कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	०	हू	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च०	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च०	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाति	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू. षा.	उ. षा.
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे
द्वितीय च०	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०
तृतीय च०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०

राशयः	मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि विचार में स्मरण रहे कि श और स में व और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त याने जुड़ा हुआ हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करना (सँयोगाक्षरजे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

नाम्नि ऋलृक् अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद् भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥ १ ॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषिते येन. येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वरः स एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योर्प्रधानता निर्णीयते—विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥

अभिजित निर्णयः—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति तिथि भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो. उसको अभिजित् का एक २ चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक २ चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उनके चार भाग करो, उसको श्रवण का १-१ चरण मानो ॥ इस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है । अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधान कल्पलता" 'मोतीलाल बनारसीदास सैदमिट्ठा, लाहौर' से मंगाइये । मूल्य १)

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये, क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञान चक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवाङ्क लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना, यथा-जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवाङ्क को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी का प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है, इनका भी स्पष्ट करना ज़रूरी है । उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवाङ्क ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना ।

टिप्पणी—(१) ज्ञ्योज्ञः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः । क्षसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः । श्यालारामस्य कुम्भराशिः (२) यथा-ऋषभदेवः अनन्तरामः लक्ष्मणः । (३) गर्भाधान पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमणाशनं क्रमात् । चूड़ोपनयनं वेद व्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान-मेघजान्मोक्षौ विवाहः षोडशक्रिय ...

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००३ वि०

राशि	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	भ्रातृ व शत्रु चिन्ता, कारोवार में तरक्की. धन लाभ, भूमि-सुख.	बंधु चिंता, अकारण शत्रु बढ़ें, स्वास्थ्य मध्यम लाभ-खर्च सम	कारोवार की चिन्ता, लाभ से खर्च विशेष, स्थानान्तर गमन	लाभ होगा, परन्तु व्यर्थ की अड़चन प्रकृति अस्वस्थ	बन्धुओं से वैमनस्य, चोट भय कारोवार-मध्यम, पशु भय,	लाभ साधारण, विवाद में पराजय, मित्र विरोध वायु पीड़ा।
वृष	कारोवार में रुकावटें, बन्धुओं से चिंता संतान संबन्धी सुख	कारोवार मध्यम, संतानपक्ष में खर्च, नेत्र व मस्तक में रोग	कारोबार ठीक, बन्धुओं से विवाद. धर्म कृत्य में अरुचि.	लाभ खर्च सम, बंधु विरोध, साम्पत्तिक अड़चन, पशु लाभ,	व्यर्थ खर्च शरीर-निर्बल, शत्रु भय हो, वाहन सुख।	लाभ होगा, परन्तु व्यर्थ का अड़चन हो, बन्धु कष्ट. यात्रा,
मिथुन	स्वास्थ्य चिंता, उदासी, सफर में कष्ट, काले व्यापार से लाभ	कारोवार कुछ ढीला, छाती व शिर में कष्ट. मित्र की चिंता	लाभ मध्यम, राजभय ऋण लेना पड़े मित्र से सन्तोष.	लाभ में रुकावट, घरू चिंता मुकद्दमे के मामले का फिकर	लाभ साधारण, सन्तति-चिंता मित्र वियोग, स्वास्थ्य में गड़बड़	अकस्मात लाभ, तुरंत खर्च भी उदर में विकार, चित भ्रम,
कर्क	स्वास्थ्य व स्त्री चिंता, कारोवार में थोड़ी तरक्की, बन्धुओं से सुख	कारोवार में परेशानी, लाभ दीखते हुए भी हानि, रक्तपीड़ा,	राजपक्ष से भय, लाभ कम, चित्तभ्रम, मासान्त में कुछ ठीक	लाभ हो, पर खर्च हैरानी करेगा निजी व्यवसाय की चिन्ता,	किसी कार्य के बिगड़ने की चिंता वायुपीड़ा, लाभ से खर्च ज्यादा	यात्रा में कष्ट. निजी कार्य की सफलता की चिंता विवाद भय
सिंह	नौकर व पड़ोसी से विवाद, सुलाभ, वाहन भय, गुप्त चिन्ता	स्वास्थ्य बिगड़े, पशु भय, धन चिन्ता. यात्रा हो. बन्धु-सुख	गत मास की अपेक्षा कुछ ठीक वृथा यात्रा, धर्म में रुचि,	मास के मध्य व्यापार उद्योग में तरक्की, विवाद में समझौता।	जमीन जायदाद की चिन्ता, लाभ मध्यम, शरीर कुछ अस्वस्थ	गुप्त चिंता, कारोवार ढीला, शिर वा उदर पीड़ा, व्यर्थ खर्च
कन्या	लाभ, स्वास्थ्य ठीक, राजपक्ष से विजय, मास में शत्रु भय	कारोवार उत्तम, यात्रा में हानि. मित्र मिलाप हो, यश की वृद्धि,	सुस्वास्थ्य, सुलाभ अकस्मात यात्रा, बन्धु चिन्ता, पशु लाभ	नौकरों से हानि का भय कुटुंबीय चिन्ता, विवाद में जीत	लाभ हो. व्यवसाय भी ठीक चले पर घरू फिकर रहे।	यद्यपि खर्च अधिक होगा, परन्तु कार्य में सफलता होगी,
तुला	चौर व शत्रु से भय, कारोवार मध्यम, अकस्मात चिन्ता	बन्धु कष्ट, मित्र सुख, शुभ में व्यय, कारोवार ठीक, राजभय	व्यापार-उद्योग ठीक, शत्रु-स्त्रीपुत्रचिन्ता विवाद में मेल	शत्रु की कायत, यात्रा में कष्ट स्वास्थ्य में बिगाड़, लाभ ठीक,	बन्धु सुख धर्मकार्य का विचार लाभ अच्छा, उदर विकार	बन्धु चिंता, कार्य में खर्च, वायु-पीड़ा. कारोवार साधारण।
वृश्चिक	ऋणभय, कारोबार ढीला, लाभ से रुकावट, मित्र से सन्तोष,	कारोवार में गिरावट, रोग-भय, स्त्री-पुत्र की चिन्ता,	लाभ में अड़चन, कुटुम्बीय शिकायत नौकरादि से खिन्नता	लाभ से खर्च अधिक, व्यर्थ चिन्ता, उदर विकार यशहानि	नये कार्य का विचार, कारोवार मध्यम, शिर वा नेत्र में कष्ट।	ख्यालात बदलते रहें, धर्म में अरुचि, कारोवार कुछ ठीक,
धनु	लाभ में अड़चन, कारोवार ठीक स्त्री-पुत्र चिन्ता, वृथा यात्रा।	स्त्री व जायदाद की चिन्ता लाभ अच्छा, रक्तपित्त पीड़ा	लाभ तो होगा पर यात्रा में कष्ट भी होगा, स्वास्थ्य मध्यम	लाभ यश का सुयोग मानसिक कुछ खेद, वायु पीड़ा।	यात्रा में कष्ट, चौर वा राज-भय, लाभ कम, खर्च ज्यादा	विचारे हुए कामों में विघ्न, कारोवार ढीला, मित्र से प्रसन्नता
मकर	शत्रुहानि, कार्यसिद्धि, यात्रा से लाभ, व्यापार की चिन्ता	शत्रुनाश, राजपक्ष शुभ, स्त्रीचिन्ता, मित्रमिलाप,	लाभ साधारण, संतान-बन्धु-वृद्ध जनों को क्लेश, स्त्री सुख	व्यर्थ विवाद, शत्रूपद्रव, पुत्र द्वारा व्यय, लाभ भी हो।	नीच से विवाद, लाभमें रुकावट उदर वा कण्ठ में रोग।	बन्धु सुख, स्त्री चिंता, कारोवार गत मास से कुछ ठीक, यात्रा
कुंभ	कुस्वास्थ्य, कारोवार अच्छा, विवाद से लाभ की आशा कम	कारोवार उत्तम, वृथा विवाद. चित्त भ्रम, राजपक्ष शुभ,	जमीन जायदाद से क्लेश, बंधु सुख, पराक्रम में सफलता.	राजपक्ष से विजय, स्त्री या मित्र से अनबन, लाभ कम।	शत्रुनाश, स्त्री पुत्र की चिंता उद्योग धन्धे से लाभ, पशुभय,	मानसिक प्रसन्नता, विजय, पैर वा पीठ पर कष्ट, यश वृद्धि
मीन	दिल उदास पुत्र व पशु-हानि कार्य की चिन्ता व्यर्थ विवाद	कहीं जाने का प्रसंग बने. हानि से चिन्ता गुप्त शत्रु पैदा हो	पुत्र चिन्ता, यात्रा में कष्ट, शत्रु शिकायत लाभ ठीक पशुलाभ	लाभ मध्यम, उदर वा मस्तक में पीड़ा, मकान की चिन्ता,	बुद्धि भ्रम, मित्र से विवाद, कारोवार कुछ ठीक धर्म में रुचि	लाभ में रुकावट, पशु भय, पुत्र चिन्ता. नये कार्य का विचार

नोट—उपरोक्त द्वादश राशियों का फल स्थूल रूप से मिलता है. सूक्ष्म ठीक २ मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये ॥

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००३ वि०

राशि	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	लाभ कम, मान हानि भय, कारोबार मध्यम, घरू चिंता,	लाभ साधारण, सन्तान बन्धु एवं वृद्ध जनों को क्लेश, स्त्रीसुख	स्त्री सुख, लाभ होकर फिर हानि वा व्यय विशेष, पशु पीड़ा।	लाभ मध्यम, निजी व्यवसाय वृद्धि का विचार मकान चिंता	शत्रु भय, अचानक यात्रा, मित्र बंधुओं से विरोध, लाभ कम।	स्थान मानकी चिंता, वृथा यात्रा। लाभ से खर्च विशेष, पशुपीड़ा।
वृष	शिर व उदरव्याधि, व्यापारादि से लाभ, पुत्र-बन्धु से हानि।	यात्रा में सुख, व्यय विशेष, लाभ का मौका हाथ लगे।	विवाद भय, प्रियवस्तु का नाभ, शिखा छाती में कष्ट,	धन लाभ, स्वास्थ्य में गड़बड़ी, संतान की चिन्ता, शुभ खर्च	मासान्त में व्यवसाय से लाभ अच्छा, वृथा विवाद, पशु सुख	उत्साह वृद्धि, परिवार से संतोष लाभ कम, शुभ कार्य में खर्च।
मिथुन	नये काम का उत्साह, नीच से लाभ, चौर व शत्रुभय, दुःस्वप्न	व्यापार की चिंता, स्वास्थ्य में गड़बड़, लाभ से खर्च विशेष	चौर वा अग्नि से भय, कार्य सिद्धि में विलम्ब, सन्तान की खुशी	लाभ व शरीर सुख मध्यम, संतान द्वारा व्यय, यात्रा में कष्ट	लाभ कम, खर्च अधिक, अग्नि जल से भय, स्वास्थ्य से बिगाड़	कार्य में विघ्न, शत्रु की चिंता, वायु पीड़ा, लाभ मध्यम।
कर्क	सफ़र में हानि, स्त्री चिंता, राज से भय, लाभ कम, वायु पीड़ा	बन्धु शिकायत, व्यर्थ विवाद अदूरदर्शिता से हानि।	किसी बड़े पुरुष की नाराजगी रोग भय, कारोबार ढीला।	गत मास की अपेक्षा कारोबार ठीक, विवाद भय, चित्तभ्रम,	व्यापार में लाभ देखकर पीछे हानि, शत्रु-चिन्ता, चित्त भ्रम।	कुछ लाभ, मित्र मिलाप, वायु-पीड़ा, पशु कष्ट, पुत्र से खुशी।
सिंह	पुत्र-स्त्री सुख, उत्तम लाभ से खर्च विशेष, वाहन सुख,	लाभ तो हो, परन्तु खर्च हो, यात्रा से हानि, वायु पीड़ा।	लाभ होकर भी पूरा हाथ न आवे, बन्धु व पुत्र की चिन्ता।	लाभ कुछ ठीक, बंधु वर्ग की चिंता, किसी मित्र से वियोग	कारोबार मध्यम, नौकरों से भय, वृथा यात्रा स्त्री चिन्ता।	शत्रु भय, वायु विकार मास के मध्य में लाभ, व्यर्थ खर्च।
कन्या	ठग्गी का भय, धर्म में रुचि, कष्ट, यात्रा, मासान्तमें लाभ.	कार्य में सफलता, लाभ मध्यम बन्धुओं से सन्तोष, चौर भय	व्यवसाय से धन लाभ, शत्रु नाश, शिर वा मस्तक में कष्ट.	ज्वरादिसे कष्ट, साधारण लाभ लेन देन की चिन्ता, पशु सुख	जायदाद बढ़े, शरीर स्वस्थ, राज्य से विजय, शुभ में खर्च	कारोबार में उलझन, वस्तु गुम हो पीछे मिले, संतति सुख
तुला	शत्रु चिंता, यात्रा में कष्ट, लाभ में विघ्न, कारोबार मध्यम,	उद्योग, व्यापार से लाभ कम, स्वास्थ्य ठीक, व्यर्थ खर्च,	अग्निभय, शरीरआरोग्य, यशो-वृद्धि, लाभ अच्छा, यात्रामें कष्ट	शिर में कष्ट, जमीन मकान की चिन्ता, लाभ ठीक, धर्म में रुचि	लाभ अच्छा, चिन्ता दूर, वायु पीड़ा, गुप्त शत्रु बिगाड़ करे।	रोग भय, कारोबार अच्छा, पुत्र की चिंता, उदर विकार
वृश्चिक	मित्र बन्धुओं से प्रसन्नता, शुभ में व्यय, कारोबार ठीक, यात्रा।	लाभ में विघ्न, व्यर्थ परिश्रम करना पड़े। यात्रा में कुछ कष्ट	क्रोध में कमी अनुभव हो, मास के मध्य में लाभ उत्तम।	स्त्री से अनबन होकर शीघ्र दूर, रोग भय, लाभ न्यून,	विवाद चिन्ता, परिणाम शुभ जुकामादि से कष्ट, लाभ हो।	जमीन, जायदाद की चिंता, बन्धु सुख, पशु भय, लाभ कम
धनुः	वृथा खर्च, प्रिय वस्तु का वियोग कारोबार से कुछ लाभ,	कार्य में विशेष हानि न होगी, गुप्त चिंता से दुर्बलता।	गतमासकी अपेक्षा लाभ अच्छा मित्र बन्धुओं से उदासीनता।	कारोबार अच्छा, खर्च विशेष, मित्र सुख, मास के अंतमें कष्ट	स्वास्थ्य ठीक, शुभ में खर्च, व्यवसाय वृद्धि, स्त्री सुख, मान	कारोबार अच्छा, मासान्त में गुप्त चिंता, यात्रा, शत्रु भय।
मकर	यात्रा में हानि, स्त्री कष्ट, निजी काममें सफलता, विवाद में जय	नये कार्य करने के संकल्प, मित्रों से उत्साह, लाभ मध्यम।	व्यवसाय में लाभ श्रेष्ठ, मस्तक वा पैर में कष्ट, वृथा व्यय।	सन्तानचिन्ता, यात्रा से लाभ, और कष्ट भी, बड़े पुरुष से प्रेम,	मित्र बंधुओंकी तर्फ़ से प्रसन्नता कारोबार ठीक, स्त्री कष्ट।	लाभ से खुशी, मित्रों से वृथा विवाद, नया फिकर, शुभ खर्च
कुंभ	पुत्र वा बन्धुओं द्वारा व्यय, लेन देन कीचिंता, मासान्त में लाभ	किसी से धोखे का भय, बिगड़े कार्य का सुधार, धर्ममें रुचि,	शत्रु नाश, धर्म में रुचि, विवाद में जय, कमर टांग में रोग।	आरोग्य कुछ ठीक, शत्रु वृद्धि, मित्र वियोग, लाभ श्रेष्ठ	राजपक्ष शुभ, कार्यसिद्धि की खुशी, लाभ भी हो, अग्नि भय.	विचारा हुआ नफा न मिलने से खेद, मास के अंत में लाभ
मीन	गृह में क्लेश, कारोबार की चिंता स्थानांतर कार्यांतर की इच्छा.	अपनी ही बातचीत से बंधुओं में अनबन, अकस्मात यात्रा	शरीर कुछ अस्वस्थ, राजपक्ष की चिंता, लाभ भी कुछ होवे.	लाभ मध्यम, यात्रा, मित्र से संतोष, दुष्ट भय, उदासीनता	रोग भय, बन्धु मिलाप, लाभ अच्छा व्यवसाय में वृद्धि	कारोबार ठीक, पशु सुख मनोरथ सिद्धि, नये विचार।

नोट—उपरोक्त द्वादश राशियों का फल स्थूल रूप से मिलता है, सूक्ष्म ठीक २ मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये ॥

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । सँव्वत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥ २ ॥ सम्यक् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥ ३ ॥ अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥ ४ ॥ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ॥ ५ ॥ प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद्ध्वजारोपणं, स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः सार्द्धं सुपूजोत्सवम् । देवानां गुरुयोषिताञ्च शिरवोऽलङ्कारवस्त्रादिभिः, सम्पूज्यो गणकः फलं च शृणुयात्तस्मात्त लाभप्रदम् ॥ ६ ॥ पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥ ७ ॥ मरीचिर्हिंगुलवणमजमोदा सशर्करैः । तिंतिडीमिलनं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये ॥ ८ ॥ पञ्चाङ्गस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दं, सन्तोष्यानेकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वाभिनिष्टम् । शृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं संक्रमेत, क्रीडन् स्त्रीभिश्च सार्द्धं त्वहनि निशि नरो यावदब्दं सुखी स्यात् ॥ ९ ॥ ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः । ते दुःखदारिद्र्यदगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥ १० ॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं सँव्वत्सरस्याढ्यतां, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदम् । धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रपु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदम् ॥ ११ ॥ इति सँव्वत्सरादिफलश्रुतिः ॥

सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका— समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है । अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है । इस दिन की १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुकी हैं । मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्षसंख्या ४३२०००० है । इस प्रकार के एक हज़ार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है (ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है, रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है) ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, यह छे मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाईसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये, और यह २८ वां कलियुग है ॥

अथ युगकाल व्यवस्था—**सतयुग**—कार्त्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायण के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चोर शङ्खासुर को मार कर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये । श्रीवराह जी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया । श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की । इस युग में धर्म अपने चारों पैर से कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्नों का परस्पर व्यवहार था । इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बो कर २१ बार काटते थे । ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी, परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे । शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे । स्त्रियें पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं । शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को औरसपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे । वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवा धर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे । इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था । **त्रेतायुग**—वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए । श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर में समग्रपृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया । श्री परशुरामजी ने कर्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का नाश करके २१ बार ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था । श्री रामचन्द्रजी ने महा अभिमानी राक्षसराज

रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चान्दी के पात्र
और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बो कर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री
परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियें चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा
वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।
द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण
श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का
उपदेश दिया। श्री बलदेव जी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएं दो वक्त घटपूर्ण
दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न बीज कर
३ वार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभमुक्त वाक्यसिद्धि
वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियें शङ्खिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने
अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री पर-द्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय
आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलङ्क) हैं,
जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुके, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा;
इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायगा।
गौ दूध कम देंगी, मृण्मय पात्र और ताम्रमयी तथा कर्गल मुद्रा प्रायः चलगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का सञ्चार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य
तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म कर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने
लगेंगे, शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेगें, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसङ्करत्व बढ़
जायेगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियें ज्यादे हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं कहीं देखने में
आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का
माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग
में प्रधान तीर्थ गङ्गा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ अथ कलिमाहात्म्यम्—धर्मः प्रव्रजितस्तपः
प्रचलितं सत्यं च दूरेगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम्। राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः, साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ
दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गेगताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्रा पितुर्द्वेषिणो, हा! कष्टं खलु वर्तते
कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जना शिष्टा नष्टा अहह!
कलिकालो विलसति ॥ कलौ गङ्गायाः स्थितिः—पृथिवी गङ्गया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुङ्गव। भगीरथं प्रति गङ्गावाक्यञ्च—यावद्धरण्यां
तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं वडवानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम, नान्येषु कलिष्विति ॥

२७

अवतार तथा दिग्विजयी विश्वविख्यात महापुरुषों की कुंडलियें

श्री गणेश जी

गु. ज्ञान के अधिष्ठाता आदिपूज्यता, गौरव-प्राप्त, सू. म. महान् प्रभावशाली तेजस्वी ।

श्री हनुमान जी

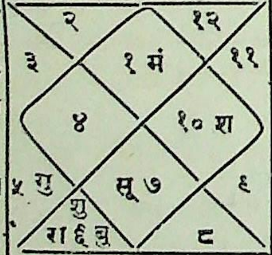

गु.-बुद्धिमतां वरिष्ठ श. मं. वीराग्रणी, तेजस्वी बु. शु. सू. स्त्रीवियोगी, ब्रह्मचारी, निस्पृह ।

श्री महावीर स्वामी

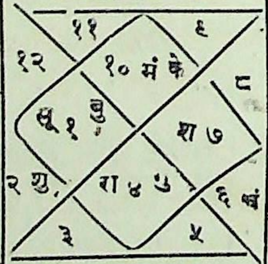

म. गु. शु. श. सू. महान् त्यागी ज्ञानागार, वन्द्य, धर्मप्रतिष्ठापक, तेजःपुञ्ज, चिरकीर्ति

श्री गुरुनानक देव

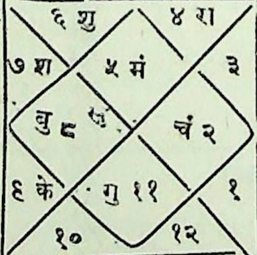

गु. शु. चं. नव मतप्रवर्तक योगनिष्ठ, उपदेष्टा, महापुरुष, सिद्धियुक्त । गु. मं. वन्द्य अमरकीर्ति

श्री स्वामी रामतीर्थ

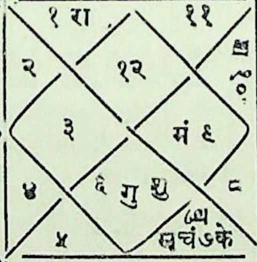

गु. शु. मं. श. तत्त्व-चिन्तक, योगनिष्ठ, ज्ञानागार तेजस्वी, निर्लिप्त चं. सू. जलसमाधि ।

श्री स्वामी विवेकानन्द

गु. श. चं. शु. बु. प्रतिभासम्पन्न महान् योगी तत्त्वज्ञ तार्किक, उपदेष्टा, तेजस्वी, यात्री

महाराणा प्रताप,

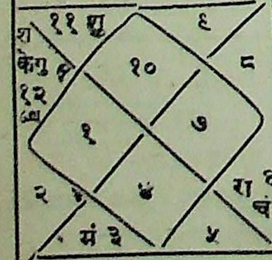

श. मं. सू. गु. रा. वीराग्रणी, तेजस्वी, त्यागी, कष्टसहिष्णु धार्मिक, शु. चं. शुद्धान्तःकरण, ज्वलन्त देशभक्त स्वाभिमानी

श्री पृथ्वीराज चौहान

श. रा. शु. बु. तेजस्वी शासक, संघर्षरत चं. सू. मं. आप्त मित्र पारिवारिक एवं शत्रु द्वारा आवृत, तथा विपत्तिग्रस्त, गुरु चं. राजयोग भंग ।

लोकमान्य तिलक

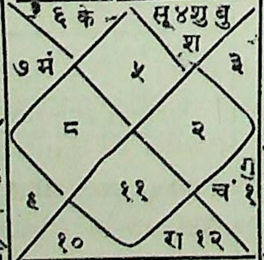

गु. चं. विविधशास्त्रज्ञानागार, तेजस्वी, बन्द्यवीर यशस्वी, मं. गु. जननायक, राष्ट्रनिर्माता, संघर्षरत, सू. रा. सरोग शरीर ।

श्री भक्त नामदेव जी

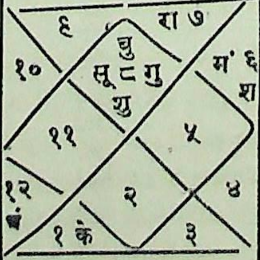

चं. गु. बु. शु. निर्मलमति, भक्ति एवं दया सम्पन्न, जीवनमुक्त, निरपेक्ष

श्री छत्रपति शिवा जी

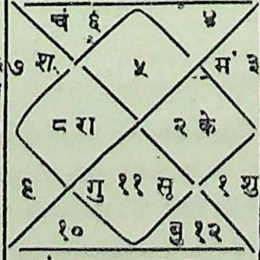

मं. श. गु. शु. सू. राजयोग, चं. शु. गु. उदार, सफल लोकशासक गुरुभक्त धर्मनिष्ठ, नरसिंह

महात्मा ईसामसीह

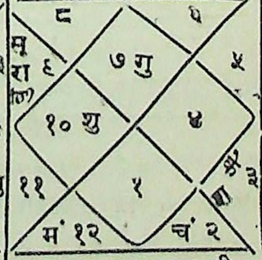

गु. शु. महान् त्यागी, दयालु, तत्त्वचिन्तक नवमतप्रदर्शक, चं. शूल-मरण राज-विरोध ।

ग्रहण-निर्णयः

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुड़े विषभक्षणम् । शैवे घटवती दीक्षा कौलके ग्रहनिग्रहौ ॥

सं. २००३ विक्रमी में ५ ग्रहण होंगें, जिन में २ चन्द्रमा के और ३ सूर्य के।

१-खण्डग्रास सूर्यग्रहण ज्ये. कृ. ३० गुरुवार ३० मई १९४६ को होगा, जो आस्ट्रेलिया जापान और चीन के पूर्वीयभाग में ही दृश्य होगा, भारत में दृश्य न होगा।

२-खग्रास चन्द्रग्रहण ज्ये. शु. १५ भृगुवार ता. १४ जून १९४६ को होगा, यह खग्रास ग्रहण भारत में सर्वत्र दीखेगा, चीन, जापान वर्मादि में भी दीखेगा।

स्टैण्डर्डमानेन, स्पर्शादिकालाः सायंकाले रात्रौ

स्पर्शादि काल		स्पर्श	सम्मीलन	मध्य	उन्मीलन	मोक्ष	सर्वपर्व
रेलवे	घण्टा	१०	११	१२	१२	२	३
	मिनट	१५	२५	१०	५४	४	४६

ग्रहण मध्यकाले ग्रासस्वरूपं स्पर्शादिस्थान प्रदर्शनञ्च।

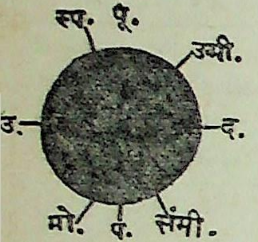

चन्द्रग्रहण का सूतक (वेध) समर्थ धार्मिक पुरुषों को स्पर्श घण्टा मिनट से ३ पहर (९ घण्टे) पहले और अशक्त गृहस्थियों, रोगी, बाल, वृद्धों को १ प्रहर (३ घण्टे) पहले मान कर भोजनादि त्याग देना चाहिये, ऐसी शास्त्राज्ञा है।

ग्रहण का प्रभाव—व्यापारी, योद्धा, वैद्य इन को पीड़ा। लालरंग की वस्तुओं का नाश। प्रजा में चोर, युद्ध आदि का भय। चांदी, मोती, श्वेतवस्त्र इनका भाव तेज रहे।

इस ज्येष्ठ शुक्ल १५ के ग्रहण का राशिफल।

मेष	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मीन	राशि
मान हानि	रोग भय	स्त्री चिंता	सुख	चिंता	हानि	लाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	शुभ	फल

यह ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र वालों को विशेष अशुभ है, शान्त्यर्थ दान जप करें और ग्रहण न देखें।

३—खण्डग्राससूर्यग्रहण—आषाढ़ कृ० ३० शनिवार ता० २९ जून १९४६ ई० को होगा। यह दक्षिण अमेरिका के दक्षिणभाग और पर्जन्यक (पैसफिक) महासागर में ही दिखाई देगा। भारत में नहीं।

४—कङ्कणग्राससूर्यग्रहण—मार्गशीर्ष कृ० ३० शनिवार ता० २३ नवम्बर १९४६ को होगा, यह एटलांटिक, (अतलान्तक) और पर्जन्यक (पैसफिक) महासागर में ही दिखाई देगा। भारत में किञ्चिन्मात्र भी नहीं दीखेगा, क्योंकि एशिया में उस समय रात्रि होगी।

५—खग्रासचन्द्र ग्रहण—मार्गशीष शु० १५ रविवार ८ दिसम्बर १९४६ को सम्पूर्ण भारत में दीखेगा और ब्रह्मा, चीन, जापान, अफगानिस्तान, लंका में भी दिखाई देगा। सूतक का विचार पहले ग्रहण में लिखे के अनुसार है।

स्टैण्डर्डमानेन, स्पर्शादिकाला रात्रौ।

स्पर्शादि काल		स्पर्श	सम्मीलन	मध्य	उन्मीलन	मोक्ष	सर्व पर्व
रेलवे	घण्टा	९	१०	११	११	१२	३
	मिनट	४२	५२	२०	४९	५९	१७

ग्रहण मध्यकाले ग्रास स्वरूप स्पर्शादि-स्थान-प्रदर्शञ्च।

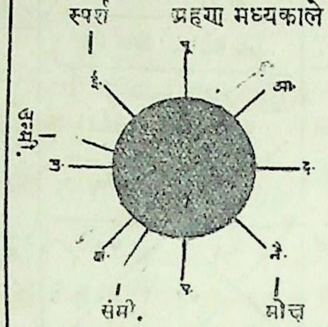

ग्रहण का प्रभाव—पर्वतवासी, गोपाल, कृषक, राज्याधिकारी, पशु इनको कष्ट। मकई, सुवर्ण, पीतल तेज। घृत, तैल, चांदी मन्दे। यह ग्रहण रोहिणी नक्षत्र को विशेष अशुभ है, शान्त्यर्थ दान, जप करना, व ग्रहण को नहीं देखना चाहिये।

नोट—ग्रहण फल प्रायः ६ मास तक हो जाया करता है।

मार्गशीर्ष शु० १५ के चन्द्रग्रहण का राशि फल।

मेष	वृ.	मि.	क.	सिं.	कन्या	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मीन	राशि
हानि	घात	हानि	लाभ	शुभ	मान हानि	रोग भय	स्त्री चिंता	धन सुख	चिंता	हानि	धन लाभ	फल

दृश्य ग्रहणे कृत्यम्—ग्रहण के स्पर्श होते ही स्नान करके जप करें, मध्य में हवन, उसके बाद दान, और मोक्ष के बाद पुनः स्नान करें। ग्रहण में शास्त्रकारों ने जप दान होम तीर्थस्नान का विशेष फल माना है। ग्रहण में शयन करने से आयुकम व रोग, मूत्र त्याग से दरिद्री, मल त्याग से कीट, मैथुन करने से सूकर व कुष्ठी, भोजन करने से नरक मिलता है।

कांग्रेस वर्ष कुण्डली

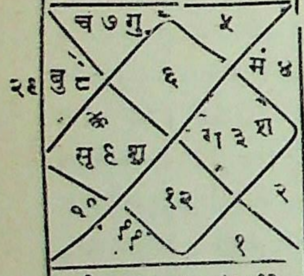

वर्ष प्र. ६१ १६ (१६ $\frac{१२}{०५}$

ॐ

अकाशी कौंसिल का विचार

आस्मिन्वर्षे राजकीयं
धार्मिकञ्च समाजगम्।
वक्ष्ये शुभाशुभफलं
शास्त्रमाश्रित्य यद्भवेत्॥

विकारी वर्षारम्भ कुण्डली

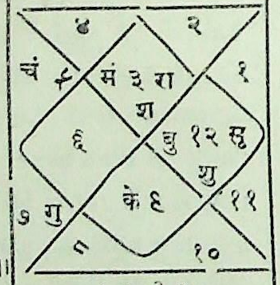

(१७ $\frac{३}{५६}$)

इस वर्ष आकाशी कौन्सिल के राजा मन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्ष विचार के साथ वर्ष-वर्षेशादि लग्नों एवं ग्रहयोगों के आधार पर विशेष ऊहापोह करने से ज्ञात होता है, कि यह वर्ष भारतीय और वृटिश राजनीतिज्ञों की कड़ी परीक्षा लेने आ रहा है, भारत की उलझी हुई समस्या को परस्पर हल करने के लिये कई उच्चाधिकारियों को भी द्वीपान्तरों से दौड़-धूप करते हुए, यहां आना पड़ेगा। कई अन्यदेशीय मन्त्रिगण स्वदेशीय समस्याओं को सुलझाते हुए स्वयं उलझ जावेंगे। वर्षलग्न में गुरुशुक्र का दृष्टि सम्बन्ध सूचित करता है कि भारतीय नेताओं की दूरदर्शिता से भारत को उत्तम लाभप्रद राजनैतिक स्वतन्त्रता मिलेगी, भारतीय राजनैतिक हार होने का योग नहीं है, श्रीगान्धी जी तथा श्रीनेहरू जी की जन्मपत्रियों के द्वारा भी खासी सफलता के योग बन रहे हैं। इस समय बार्हस्पत्यमानानुसार विकारी संवत्सर है, इसका आरम्भ सं० २००२ फा० शु० १५ रविवार को १२ घड़ी २४ पल पर मिथुन लग्न के ४ अंश पर हुआ है, उस समय की कुण्डली ऊपर लिखी गई है, वहां लग्नेश बुध अस्तवक्री होकर उच्च भृगु के साथ राज्यस्थान में पड़ा है। चन्द्रमा पराक्रम भवन में और गुरु पञ्चम भवन में बैठ कर भाग्य-भवन को देख रहा है, अतः भारत के लिये यह वर्ष कई बातों में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। स्वराज्यांश की प्राप्ति भी अवश्य होगी, मुसलिमलीग आदि स्वार्थी सकुचित विचारों की संस्थाओं का महत्त्व बहुत जगह गिर जायगा, कांग्रेस की वर्षकुण्डली के गुरु चान्द्री योग से तो स्पष्ट है, कि इस वर्ष कांग्रेस के प्रभाववृद्धि के कारण पाकिस्तान की योजना व्यर्थ सिद्ध होगी, प्रतिपक्षियों को बहुत नीचे गिरना पड़ेगा, और उन्हें मानहानि के साथ सार्वजनिक जीवन से सदा के लिये अलग होना पड़ेगा, भारतीय स्वतन्त्रता की नींव मजबूत होगी, और हमारे देश के कुशल राजनीतिज्ञ, मन से तो नहीं, तन से सन्तोष प्रकट करेंगे, क्योंकि अभी जो क्रमिक शासन-व्यवस्था बनेगी उससे सम्पूर्ण भारतवासी सन्तुष्ट तो नहीं होंगे, किन्तु फिर भी उसका परिणाम भारत की स्वतन्त्रता के लिये अच्छा होगा दासता की शृङ्खला ढीली पड़ेगी, और उसी के आधार पर आगे चलकर भारत राजनैतिक भविष्य उज्ज्वल होगा। कांग्रेस जन्म कुंडली के आधार पर भारत को पूर्णस्वराज्यप्राप्ति क्रमशः वि.सं. २००८ तक हो जायगी।

वर्षलग्न और विकारी वर्षारम्भलग्न दोनों का ही मिथुन है, और लग्न में क्रूरत्रयी शनि, मङ्गल, राहु बैठे हैं, जनता को भले ही यह वर्ष शान्तिप्रद नजर आता हो, परन्तु ज्योतिश्शास्त्रदृष्ट्या सम्पूर्ण विश्व में शान्तिप्रद कदापि सिद्ध न होगा, क्रूरत्रयी (मं. श. रा.) की मन्त्रणा व योजना के कारण कहीं तो षड्यन्त्र द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति में बाधा उपस्थित की जावेगी, कहीं इनके प्रकृतिसिद्ध स्वभाव के कारण विग्रह, कहीं गृहकलह, फूट, विद्वेष, कहीं स्वार्थपरायणता के कारण युद्ध की चिनगारियों का संहारक रूप प्रकट होकर गुरु की सौम्य दृष्टि के कारण फिर मिटता रहेगा। शनिभौम युद्ध का कहीं गुप्त कहीं कुछ प्रकट आयोजन रचते ही रहेंगे (युद्धदौ शनिमाहेयौ) राहु का इनके साथ पड़ना, अग्नि या अग्निवर्षक शस्त्रों के भय का सूचक है (राहुः स्यादग्निकारकः)। परन्तु गुरुदृष्टिवशात्, आर्यावर्त को इस वर्ष हानि नहीं, अन्यत्र भय की पूर्ण सम्भावना है। श. मं. रा. की स्थिति के कारण राष्ट्रों में स्वार्थपरायण बुद्धि की जागृति बढ़ेगी, जिस के कारण कोई अपने को सरपञ्च बनाने की धुन के साथ २ सागरों पर आधिपात्य आदि महत्वाकाङ्क्षाएं बढ़ा कर प्रेमसूत्र को ढीला कर देगा (प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम्) और सब अपनी २ ओर की खैंचातानी करेंगे, भौम के कारण राष्ट्रीय सरहद्दों और भूखण्डों के झगड़े पड़ेंगे, जिससे अशान्ति का वातावरण बनता दीखेगा, वहां पूर्णचन्द्रमा की नर्म नीति से काम लेने पर भी सफलता न मिलेगी, अन्त में खूनखराबी के बाद शान्ति दृश्य होगी, यहीं मन्त्रीमण्डलों में आमूल परिवर्तन भी कई जगह होंगे। वृटिश वज़ारत में भी तबदीली के आसार नज़र आयेंगे। अब ईरान के यहाँ की स्थिति अशान्ति युद्ध की ओर अग्रसर हो रही है।

वर्षलग्न में वैज्ञानिक ग्रह शुक्र गुरुचर राशियों में पड़ कर दृष्टिसम्बंध कर रहे हैं। जो चर राशि के कारण वैज्ञानिक गण स्वदेश से इतर अन्य देशों में बैठ कर

भयानक योजनाएं विचारेंगे जिसका कुफल वि० स० २००४ के अन्त में, और विशेष भयंकर फल वि. सं. २०२० से २४ तक विश्वव्यापी युद्ध रूप में प्रकट होगा। वहा गुरु-शनि-भौम की स्थिति ऐसी होगी के महाभारत की तरह तात्कालिक सभ्यता संस्कृति का पूर्णरूपेण विनाश हो जायगा। यहाँ रक्तपात एशिया से प्रारम्भ होगा। संसार का बहुत सा भाग नष्ट हो जाएगा। तदनन्तर ७६ वर्ष तक विश्व में पूर्ण शान्ति विराजेगी। आस्तिक मत का प्रसार होगा। विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत होगी। राष्ट्रों के परस्पर मनोभाव शुद्ध होंगे।

इस वर्ष—भारत में कंट्रोलर भौमग्रहवशात वस्त्रादि गत वर्ष की अपेक्षा कुछ अधिक आकर भी सीमित मात्रा में ही मिलेगा, अर्थात् वस्त्र-कष्ट कुछ रहेगा ही, रसेश गुरुवशात् गुड़ खंड की दिक्कत नहीं रहेगी, तैल तिल भी सस्ते रहेंगे।

भाद्रों के बाद व्यापारीवर्ग लाभ अच्छा उठावेगा। रूई का जो भाव १८ वैशाख को होगा, वर्षान्त में उस खण्डी के ऊपर करीब १४० टके की तेजी धीरे २ आजानी अनिवार्य है। माघ से रूई ज़्यादा तेज रहेगी। सुवर्ण ८६ से ४६ के मध्य दुतर्फा रङ्ग दिखायेगा। इसी तरह चान्दी करीब १३६ से ६५ के मध्य खेलेगी। अन्न का रुख भी प्रायः तेज़ी में रहेगा। भाद्रपद से पौष तक तांबा, जिस्त-पित्तल सस्ता रह कर पीछे तेज रहें। पशु, सूत, कपड़ा तेज हो। वर्षारम्भ में गुड़-घी-तेल मिर्च संग्रह करने से ५ मास में लाभ होगा। लोहा रंग सस्ते होंगे।

भारतीय बृटिश व्यापारिक समझौता कुछ नर्म शब्दों में होगा, पर भारतीय व्यापारेश विकारी वर्षारम्भ में अस्त है, सो विदेशियों की नीति भार-ीय व्यापार के लिये घातक ही दीखती है। कारखानों के उद्योग में भारतीय मनोयोग से काम करने पर उतारू होंगे। परन्तु इसमें विशे शीघ्र सफलता व पूर्णता के योग नहीं हैं, शनि-भौम कई उपयुक्त वस्तुएं पर्याप्त रूप में नहीं मिलने देंगे। बेकारी की कुछ बढ़ती देखने में आवेगी, परन्तु गुरुदृष्टिवशात् किसी विशेष कारण से तुरन्त रुक जावेगी। मृत्युस्थान का मालिक शनि गुरु से दृष्ट है, एतदर्थ-मृत्युदण्ड के अपराधी भी कुछेक को छोड़ कर सब मृत्युदण्ड से बच जा`गे। सांप्रदायिक दङ्गों का योग भी कहीं २ दंगे करवावेगा परन्तु स्थिति शीघ्र ही काबू में आती रहेगी। चैत्र वैशाख में किसी मरुदेशाधिपति की मृत्यु. और आश्विन में सर्पपीड़ा बहुत होगी। ज्येष्ठ में कोई उत्पात हो, वंग देश में विग्रह जलभयादि से कष्ट, खुरासान में पीड़ा। भारत के पूर्व दक्षिण प्रदेश में दुष्काल, आसाम-बरेली और गंगा किनारे कष्ट। अन्य द्वीपान्तरों के निवासियों को भी खाद्य संकट का सामना करना पड़ेगा। कई कांग्रेसी नेताओं का स्वास्थ्य बिगड़े तथा मृत्यु भी हो। एशिया के किसी भाग में भूकंप से हानि हो। अत्तार हकीम प्रायः सर्वत्र लाभ में रहगे। आषाढ़ में लालरंग की वस्तु तेज हों, कहीं युद्ध चौराग्नि भय-व्यापेगा, वर्षा इस वर्ष प्रायः सर्वत्र अच्छी रहेगी, परन्तु २४ ज्येष्ठ से २३ आषाढ़ तक और १६ भाद्रपद से २८ भाद्रपद तक कई प्रान्तों में वर्षा के अवरोध से कुछ कष्ट का अनुभव होगा, आश्विन प्रविष्टे ११ से १५ तक जलप्लावन, नदियों के समीपवर्ति जनपदों में भारी हानि के समाचार मिलेंगे, माघ-फाल्गुण में वर्षा समय पर अच्छी होवेगी।

सहोदयो! श्री प्रभुकृपा से ज्योतिश्शास्त्रदृष्ट्या ग्रहगति का जो परिणाम दीख पड़ा, वह यथामति लिख दिया है, आगे भविष्य के निर्माता सर्वज्ञ सर्वेश्वर जो चाहेंगे, वही होकर रहेगा, उनकी प्रबल माया के सन्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य कथन कर सकते हैं।

(शुभेच्छुः पञ्चाङ्गकर्ता)

श्रीमार्तण्ड-यज्ञमण्डल

इस मण्डल के कर्मठ वेदपाठी सदाचारी विद्वानों द्वारा गृह-कूप-वापी-आराम तथा देवप्रतिष्ठा इच्छित-कार्यसिद्धयर्थं छोटे तथा बड़े २ अनुष्ठान जैसे शतचण्डी सहस्रचण्डी शैव वैष्णव सौर गाणपत्य यज्ञ सफल-पुत्रेष्टि लक्ष्मीप्रयोग सप्ताह-नवाहादिकर्म यजमानों की श्रद्धा व परिस्थिति के अनुकूल सकाम एवं निष्काम रूप में शास्त्रविधिपूर्वक जहां चाहें वहां कराए जाते हैं। मुकद्दमे (राजभय शत्रुभय) बिमारी विपत्ति गुप्तचिन्ता धनहानि शत्रुकृत मंत्रयंत्र प्रयोग आदि से बचने के सिद्ध प्रयोगपाठ भी चमत्कारी होते हैं। अब आपको कर्मठ सुयोग्य विद्वानों के लिये इधर उधर दूर देशान्तरों में दौड़ धूप कर विशेष खर्च करने की जरूरत नहीं, घर बैठे पत्रव्यवहार करके यज्ञमण्डल से अपने सम्पूर्ण कृत्यों में सहायता प्राप्त कीजिये। आपका—राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र

अध्यक्ष श्रीमार्तण्ड यज्ञमण्डल, कुराली (पञ्जाब)।

अथ श्रीमन्नृपति धर्ममूर्ति—विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवत्नाभिधः २००३ श्रीनृपतिचक्रचूडामणि-शकजातीय-यवननिर्वीजक शालिवाहनराज्याद् गतहायनानि तत् शकाभिधः १८६८ श्रीकृष्ण-जन्म सं० ५१८२ श्रीमहावीरनिर्वाण (जैन) सम्वत्सरः २४७२।७३ ईस्वी सन् १९४६-४७ हिजरी सन् १३६५-६६ फसली सन् १३५२ वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादिषष्ठ्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशत्यां विकारी नाम (त्रिखण्डमण्डनः) श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच्चान्द्र-मसतुषु, तदभावे तु सौरतुष्विति ज्योतिर्विदां मतम् । तथा आर्षिषेणिः—स्मरेत्सर्वत्र कर्मादौ चान्द्रसम्वत्सरं सदा । नान्यं यस्माद्वत्सरादौ प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तिता । नाम्नः सम्वत्सरस्तस्य फलम्—विकार्यब्देऽखिला लोकाः सरोगा वृष्टिपीडिताः । पूर्वसस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम् । विकारी सम्वत्सरे चन्द्रः स्वामी अ महर्घं सर्ववस्तुमहर्घता द्विजाः सुखिनः चैत्रादिमासत्रये धान्यमहर्घता आषाढे श्रावणे महान्मेघः सुभिक्षं भाद्रपदे स्वल्पमेघः आश्विने सर्पभयं केतूदयः अन्नं कलसिका प्रतिफदिया दश १० लभ्यन्ते सर्ववस्तुमहर्घता कार्तिकादिमासद्वये धान्यं समर्घं पौषे रोगपीडा लोकः सुखी । फाल्गुने धान्यमहर्घता । अथात्र वर्षे राजा बुधः मन्त्री शनिः सस्येशो भौमः धान्येशो रविः मेघेशः शुक्रः रसेशो गुरुः नीरसेशो भौमः फलेशः शुक्रः धनेशो भौमः दुर्गेशः शनिः । अथैषां फलानि—राजा बुधस्तस्य फलम् (सर्वदेशेषु) बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहमङ्गलम् । प्रकुर्वते दानदयां जनोऽपि स्वास्थ्यं सुभिक्षं धनधान्यसंकुलम् । मन्त्री शनिस्तस्य फलम्—रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनयसंरहिता बहुदुःखदाः न जलदा जलदा जनता पदा जनपदेषु सुखं धनदं क्वचित् ।

सस्येशो भौमस्तस्य फलम्—प्रथमधान्यपतौ धरणीपतौ गज-तुरंग-खरोष्ट्र-गवामपि । प्रभवदा बहुरोगघनो जलं न समसौख्यकरं तुषधान्यहृत् । धान्येशो रविस्तस्य फलम्—(नर्मदातटे मध्यदेशे च) पश्चाद्धन्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदा नहि । विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम् ॥ मेघेशो भृगुस्तस्य फलम्—(मालवदेशे) भृगुसुते जल-दस्य पतिर्यदा जलयुतो जलदादिविशोभना: । धननिधान्ययुता द्विजपालका नृपतयो जनता सुखदायकाः । रसेशो गुरुस्तस्य फलम्—(कोङ्कणमागधयोः) यदि गुरौ रसपे जन-सौख्यदे कमलवन्ति सरांसि तृणानि च । जनपदा द्विजपूजनतत्परा गजसवाजिरथोष्ट्रयुता नृपाः ॥ नीरसेशो भौमस्तस्य फलम्—(मालवदेशे) नीरसेशो यदा भौमः प्रवालारक्त वाससाम् । रक्तचन्दनताम्राणामर्घवृद्धिर्दिने दिने ॥ फलेशो भृगुस्तस्य फलम्—(सर्वदेशे) यदि फलस्य पतौ भृगुजे धरा मृदु कुमार महीरुह राशयः । बहुपथा नरनाथ सुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठपरायणाः । धनेशो भौमस्तस्य फलम्—(सर्वत्र) असमसौल्यकरो धरणीसुतः शरदि तापकरस्तुषधान्यहृत् । सहसिमासि भवेद्विगुणं सदा नरपतिर्जनशोक-विधायकः ॥ दुर्गेशः शनिस्तस्य फलम्—(सर्वदेशे) रविसुते गढपालिनि विग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जनाः । विविधवैरिविशेषितनागराः कृषि धनं न लभेद्ध्रुवि कश्चन ॥ नवमेघानां मध्ये पुष्करनाम मेघ राजस्तस्य फलम्—नैव कन्द फल मूल वृद्धिर्जायते विविध पातक वृद्धिः । रोगतो जनक्षतत्वमनल्पपुष्करे जलधरे जलमल्पम् ॥ १ ॥ द्वादशनागानां मध्ये नरेन्द्र नागराजस्तस्य फलम्—यत्र सम्वत्सरे नागो नरेन्द्रो नामतः शुभः । तदास्याखिला पृथिवी प्रभूता जलपूरिता ॥२॥ सप्तवातानां मध्ये वायु नाम्नः वायु ॥ सम्वत्सर विश्वे ८ । अथात्र वर्षे रोहिणी निवासः तटे तस्य फलम्—यदि विधिधिष्ण्यं पतति तटस्थं शुभजलवृष्टिर्धनधान्यवृद्धिः ॥ ३ ॥ वर्षनिवासो रजकगृहे तस्य फलम्—रजके वृष्टिरुत्तमा । समयवाहनः शृगालः । ग्रहणे द्वे चन्द्रमसो ज्येष्ठे मार्गशीर्षे च । सोमावत्यौ अमावस्ये २ भाद्रपदे पौषे च । शनिदृष्टिः पूर्वे दक्षिणे च । वर्षा विं १३ धान्य १७ तृण १३ शीत १३ तेज १३ वायु ७ वृद्धि १५ क्षय १५ विग्रह ११ क्षुधा ६ तृषा १३ निद्रा ३ आलस्य १५ उद्यम ५ शान्ति ११ क्रोध ११ दम्भ ११ पाखण्ड ६ लोभ ७ मैथुन ६ रस १३ फल ११ उत्साह ६ उमस्व ६ पाप ११ पुण्य ३ व्याधि ७ व्याधिनाश ११ आचार १ अनाचार १५ मरण ५ जन्म ७ देशोपद्रव ७ देशस्वास्थ्य ७ चौरभय ६ चोरनाश १५ अग्नि ६ अग्निशान्ति ६ टिड्डी १५ तोता ६ मूषक ५ सोना १६ ताम्बा ११ स्वचक्र ७ परचक्र ११ अतिवृष्टि १६ अनावृष्टि १६ उद्भिज ७ (तरुगुल्माद्याः) जरायुज ३ (नृगवाद्याः) अण्डज १३ (पक्षिसर्पाद्याः) स्वेदज ६ (कृमिदंशाद्याः) ॥ नव वर्ष प्रवेशः—सम्वत् २००३ चैत्र कृष्ण ३० भौमवार को इष्ट घटि ६।५८ पर मिथुन लग्न में नव वर्ष का प्रवेश होता है सो राजाओं में संघष हो, पूर्व में खेती बिगड़े, उत्तर दक्षिण में वर्षा और धान्य बहुत हो पश्चिम में वर्षा कम तथा विग्रह हो, मध्य देश में आधी उत्पत्ति और पशुओं में रोग हो।

वर्षेशलग्न—सं २००३ चैत्र शुक्ल १२ शनैश्चर बार को इष्टघटी ३१।१५ पर तुल लग्न में सूर्य नारायण मेष राशि पर प्रवेश होंगे। लग्नेश भृगु सूर्य के साथ सातवें बैठा है और दसवें नीच राशि का मङ्गल भी पड़ा है अतः इस वर्ष में पौष माघ यह दो मास प्रजा के लिये अनिष्टप्रद हैं, कई जगह आधी खड़ी खेती की हानि होगी पुरुषों को रक्तविकार से प्रायः कष्ट रहेगा ॥

जन्म लग्न से शुभाशुभ विचारः—जन्म लग्न व वर्षलग्न से वर्षेश लग्न यदि ८वाँ १२वाँ हो तो वह वर्ष उस पुरुष के लिये अशुभ ही रहेगा।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश सामयिक फलविचार—सं० २००३ वि० आषाढ़ कृष्ण ७ भृगुवार को इष्ट घ० ५६।० पर वृष लग्न से सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश होंगे, उस समय तात्कालिक ति० ८ पू.भा. नक्षत्र, आयुष्मान् योग, बालव करण है, इनका फल निम्न लिखित है—ति० फ.—अन्न वस्त्र का मूल्य बढ़े वर्षा कम। वा.फ.—मनुष्यों में शान्ति व स्वस्थता रहे। न. फ.—प्रजा में सर्व सुखों का उदय हो। यो. फ.—राजा लोग रोग रहित होकर अपने कर्तव्य पालन में तत्पर हों। क. फ.—बाल वृद्धों को कष्ट। समय फ.—दुःख रोग भय हो। प्रवेश कुण्डली से सूर्य चन्द्र परस्पर दशवें चौथे बैठे हैं चन्द्रमा जल राशि में गुरु से दृष्ट है अतः सम्पूर्ण धान्यों की उत्पत्ति उत्तम हो। कन्याराशिस्थ गुरुफल—वर्षा उत्तम सुभिक्ष। तुलाराशिस्थ गुरुफल—सुभिक्ष, किसी २ देश में अन्न महंगा हो। वृश्चिकराशिस्थगुरुफल—स्वल्प वृष्टि दुर्भिक्ष, पाप उपद्रव हों। मिथुनराशिस्थ शनिफल—दुर्भिक्ष, युद्धभय। कर्कराशिस्थ शनिफल—मध्य देश में सुभिक्ष अन्य जगह दुर्भिक्ष भय रहे। अथ वर्ष स्तम्भ चतुष्टय विचार—चै. शु. १ को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क होने से जलस्तम्भ, वै. शु. १ को भरणी का सम्पर्क होने से तृणस्तम्भ, ज्ये. शु. १ मृगशिर का सम्पर्क होने से वायुस्तम्भ, आषाढ़ शु. १ को पुनर्वसु नक्षत्र होने से धान्यस्तम्भ होता है, इस वर्ष जलस्तम्भ का योग ठीक है क्योंकि गत पञ्चाङ्ग की अमावस ६।५८ के उपरान्त प्रतिपदा में रेवती का ही सम्पर्क है, तृणस्तम्भक का योग पौना है, वायुस्तम्भ का योग तृतीयांश के आसन्न है, धान्यस्तम्भ का योग आधे के लगभग है। अतः इस वर्ष जल तृण से पशु पक्षी सुख पावेंगे, धान्योत्पत्ति आधी होगी, वायु का सञ्चार विशेष नहीं होगा। आर्षमान विचार—जिस वर्ष में अक्षय तृतीया को रोहिणी न हो, श्रावण शु. १५ को श्रवण न हो, कार्तिक शु. १५ को कृतिका न हो, और पौष की अमावस को मूल न हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, यह ४ योग आर्षमान के अनुसार वर्ष के चार रक्षादुर्ग (किले) हैं चारों में से एक भी रक्षा दुर्ग न हो तो अवश्यदुर्भिक्ष पड़ता है, ऐसे विचार करना चाहिये।

अथ लाभ व्यय चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
२	११	२	११	१४	०	११	२	१४	८	८	१४	लाभः
५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८	व्ययम्

अथ लाभव्यय चक्रात्फल विचारः—

लाभव्ययौ समौ कृत्वा एकहीनन्तु कारयेत्॥ अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्॥१॥
१ लाभं, २ सौख्यं तथा ३ क्लेशं, ४ रोगं, ५ लोकापवादनम्।
६ सम्मानं, ७ विजयं, ० हानिः कथितं पूर्वसूरिभिः॥२॥

अथ वर्ष लग्नम्

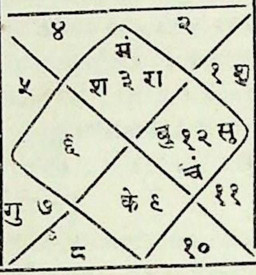

वर्षेशलग्नम् (जगल्लग्नम)

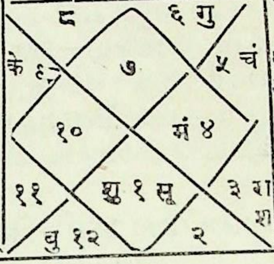

आर्द्राप्रवेश लग्नम्

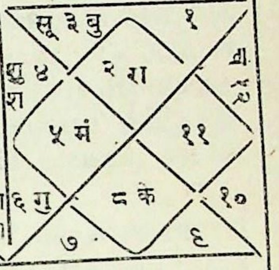

कर्मठ गुरु

यह कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थरत्न है। जप, मन्त्र पुरश्चरणादि के अनेकों विधान और सिद्धिप्रद तांत्रिक प्रयोग भी दिये गये हैं। सिद्धपुत्रेष्टि विधि और भी कई अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं, टिप्पणी में प्रमाण से सब बातें स्पष्टकर दी हैं जिससे सन्देह का स्थान ही नहीं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ नहीं छपा। मू० २) रु०

राशयभिधान-कल्पलता।

इस पुस्तक में प्रत्येक नक्षत्र के चरणानुसार बालक व बालिकाओं के अनेकों शास्त्रशुद्ध व सुन्दर नाम लिखे गये हैं। बाल बच्चों वाले सद्गृहस्थों व ज्योतिषियों कर्मकाण्डियों के बड़े काम की वस्तु है आज तक ऐसी पुस्तक कहीं भी नहीं छपी, शास्त्रमर्यादानुसार इस पुस्तक की सहायता से बच्चों का नाम रखने से उनकी आयुवृद्धि के साथ बुद्धि का विकास भी होता है तथा संसार में नाम भी रोशन होता है, हजारों बढ़िया अर्थपूर्ण नाम आपको इसमें मिलेंगे। मूल्य १।) रु०

मिलने का पता—मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

संवत् २००३ शाकः १८६८ चैत्र शुक्लपक्ष १ | हि. | अं | मु. | चन्द्र | सू.उ. | सू.अ. | सूर्यस्पष्टः | (सन् १९४६ ई०) [illegible]

(सन् १९४६ ई०) उत्तरायण [illegible]

सँवत् २००३ शकः १८६८ चैत्र शुक्लपक्ष १

दि. मा.	ति	वा	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हिं.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चार:	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
३१।३	१	बु	२।५	अ	५३।३४	वै	३८।२२	व	२।५	२१	३	२६	मेषे	६।१५	६।४१	११।१६।४०।२३
अवम	२	बु	५६।५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
३१।७	३	गु	५१।३८	भ	४६।३४	वि	३०।११	तै	२४।१७	२२	४	१	मेषे	६।१४	६।४२	११।२०।३६।३६
३१।१२	४	शु	४५।४१	कृ	४५।११	प्री	२३।३१	व	१८।६	२३	५	२	वृषे. ३।२६	६।१३	६।४३	११।२१।३८।३०
३१।१६	५	श	४०।६	रो	४१।१८	आ	१५।५४	बा	१२।५३	२४	६	३	वृषे	६।१२	६।४३	११।२२।३७।३०
३१।२०	६	र	३४।४०	मृ	३७।२६	सौ	८।२८	कौ	७।२३	२५	७	४	मि. ६।२४	६।१०	६।४३	११।२३।३६।२४
३१।२४	७	चं	२६।४१	आ	३४।८	शो	५०।५८	ग	२।१०	२६	८	५	मिथुने	६।६	६।४४	११।२४।३५।१६
३१।२८	८	मं	२५।१८	पुन	३२।१७	सु	४८।२६	व	२५।१८	२७	९	६	क. १७।२४	६।८	६।४४	११।२५।३४।१४
३१।३२	९	बु	२१।४४	पु	२६।३६	धृ	४३।४	कौ	२१।४४	२८	१०	७	कर्के	६।६	६।४४	११।२६।३३।२
३१।३६	१०	गु	१९।००	श्ले	२८।४३	शू	३८।२८	ग	१९।००	२९	११	८	सिं. २८।४३	६।५	६।४५	११।२७।३१।४९
३१।४१	११	शु	१७।२७	म	२८।५८	गं	३४।४५	वि	१७।२७	३०	१२	९	सिंहे	६।४	६।४६	११।२८।३०।३८
३१।४५	१२	श	१६।५०	पू	३०।२६	वृ	३०।२७	व	१६।५०	१	१३	१०	कं. ४६।३	६।३	६।४७	११।२९।२९।१९
३१।५०	१३	र	१७।३६	उ	३३।३	ध्रु	२८।४७	तै	१७।३६	२	१४	११	कन्यायाम्	६।१	६।४७	००।००।२७।५५
३१।५५	१४	चं	१९।४०	ह	३६।४५	व्य	२७।४७	व	१९।४०	३	१५	१२	कन्यायाम्	६।१	६।४८	००।१।२६।३५
३२।००	१५	मं	२२।५१	चि	४१।५४	हृष	२७।५१	व	२२।५१	४	१६	१३	तु. ६।२५	६।०	६।४९	००।२।२५।१६

चैत्र शु० १५—यूरेनस. १।२१।२६।१३, नेपच्यून ५।१३।४७।५६

१० २ रवि १९।२४ चन्द्रदर्शनम् चान्द्रसंवत्सरारम्भः नव रात्रारम्भः*
[* अभिजिन्मुहूर्ते घट स्थापनं तैलाभ्यङ्गः वर्षफल श्रवणम्
मत्स्य जयन्ती गणगौरी पू. मन्वादि जमादिलावल मु. ५,
म. १८।६ उ. ४५।४१ या. कर्के भौमः २७।०

मार्गीबुधः ३४।६ मेला माईसरखाना
म. २६।४१ उ. ५७।३० या. वक्रग. चि. २ कन्याया गुरुः २६।४६
श्रीदुर्गा ८ मेला श्रीमनसा देवी
मर. शुक्रः ६.०० श्रीराम ९ सर्वेषाम् (मध्यान्हव्यापिनी ग्राह्या)
म. ४७।३० उ.
म. १७।२७ या. कामदा ११ व्र.
बुध्ये सौमः ४६।४६ अश्वि. सं. मेषेऽर्कः ३१। १५ मु. ४५ पुण्यम् †
उ. फा. ऽसू ।।।।।।।। दि. ल. २ आवश्य के ल. ५
म. १९।४० उ. ५१।१५ या. सत्यव्र.
वैसाख स्नान प्रा. चैत्री १५ मन्वादिः
| † मध्यान्होत्तरम् प्रदोषव्र. मेला वैसाख.

चैत्र शु० ८ भामेष्टं ०।० दिनगणः ३३१४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	११	५	००	२	२	८
२५	१	४	२६	११	२५	१	१
३४	२५	३७	५५	५५	२३	२०	२०
१४	५४	२१	१२	२८	५३	४६	४६
५८	२२	२	८	७३	१	३	३
५५	६	००	४०	३०	६	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
रे. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृ.	मृ. १

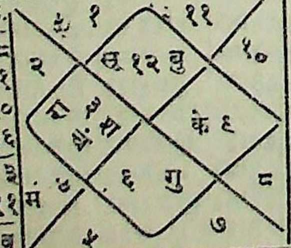

इस पक्ष में प्रायः सब प्रकार के अनाज तेज रहेंगे। गुड़ चन्दन तिल तेल सरसों भी महंगे हों फिर भी व्यापारियों को लाभ कम, घोड़ा ऊंट भैंस आदि पशु भी तेज बिकेंगे। मिथुन में शनिराहु का फल-अग्निकांड खलवाडों में कई जगह होंगे परस्पर फिसाद भी हों, बच्चों को रक्तविकार कष्ट देवे, राजाओं के भंडार में कमी का अनुभव हो, कृषकों और साधुओं को पीड़ा हो। ति. १ से ४, ६, १२ को वायु का जोर कहीं उत्तर में बूंदा बांदी हो।

शकुन विचार—

चैत्र शुदि जो पंचमी दक्षिणपूर्व बाय, वर्षा भी होव [illegible] भादों तेज बिकाय
चैत्रशुदा जो त्रयोदशी धूल उड़े दरदया न आगे वर्षा होनहीं एसा जोतम जान

चैत्र शु० १५ भौमेष्टम ०।० दिनगणः ३३२१

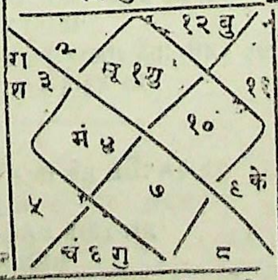

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	३	११	५	००	२	२	८
२	४	१	२६	२०	२५	००	००
२५	१३	४५	४	३२	३७	५८	५८
१६	३७	१८	३७	५०	१	३१	३१
५८	२४	२६	८	७३	२	३	३
४०	१०	००	१५	००	५२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स.	[illegible]	[illegible]	सू.

चैत्र मास में दूध दही और मिष्टान्न स्वयं न खाकर ब्राह्मणदम्पति की पूजा कर बारीक वस्त्र और मिठाई उनको देवे; यह गौरीव्रत कल्याणकारक है ॥ यदि कोई रामनवमी का व्रत न रखकर अन्य व्रत रखता है तो उसे उनका भी फल नहीं मिलता क्योंकि यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है। व्रत की विधि यह है—उपवास रखकर मध्याह्न समय स्वर्णप्रतिमादि में श्रीराम का विधिवत् आवाहन कर पुरुषसूक्त से षोडशोपचार पूजा करे और पुष्पजलयुक्त शंख से "दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। दानवानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥ परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ!" इस मन्त्र से अर्घ्य देवे ॥

जन्म लग्न से शुभाशुभ विचारः—जन्म लग्न व वर्षलग्न से वर्षेश लग्न यदि ८वाँ १२वाँ हो तो वह वर्ष उस पुरुष के लिये अशुभ ही रहेगा।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश सामयिक फलविचार—सं० २००३ वि० आषाढ़ कृष्ण ७ भृगुवार को इष्ट घ० ५६।० पर वृष लग्न से सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश होंगे, उस समय तात्कालिक ति० ८ पू.भा. नक्षत्र, आयुष्मान् योग, बालव करण है, इनका फल निम्न लिखित है—ति० फ.—अन्न वस्त्र का मूल्य बढ़े वर्षा कम। वा.फ.—मनुष्यों में शान्ति व स्वस्थता रहे। न. फ.—प्रजा में सर्व सुखों का उदय हो। यो. फ.—राजा लोग रोग रहित होकर अपने कर्तव्य पालन में तत्पर हों। क. फ.—बाल वृद्धों को कष्ट। समय फ.—दुःख रोग भय हो। प्रवेश कुण्डली से सूर्य चन्द्र परस्पर दशवें चौथे बैठे हैं चन्द्रमा जल राशि में गुरु से दृष्ट है अतः सम्पूर्ण धान्यों की उत्पत्ति उत्तम हो। कन्याराशिस्थ गुरुफल—वर्षा उत्तम सुभिक्ष। तुलाराशिस्थ गुरुफल—सुभिक्ष, किसी २ देश में अन्न महंगा हो। वृश्चिकराशिस्थगुरुफल—स्वल्प वृष्टि दुर्भिक्ष, पाप उपद्रव हों। मिथुनराशिस्थ शनिफल—दुर्भिक्ष, युद्धभय। कर्कराशिस्थ शनिफल—मध्य देश में सुभिक्ष अन्य जगह दुर्भिक्ष भय रहे। अथ वर्ष स्तम्भ चतुष्टय विचार—चै. शु. १ को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क होने से जलस्तम्भ, वै. शु. १ को भरणी का सम्पर्क होने से तृणस्तम्भ, ज्ये. शु. १ मृगशिर का सम्पर्क होने से वायुस्तम्भ, आषाढ़ शु. १ को पुनर्वसु नक्षत्र होने से धान्यस्तम्भ होता है, इस वर्ष जलस्तम्भ का योग ठीक है क्योंकि गत पञ्चाङ्ग की अमावस ६।५८ के उपरान्त प्रतिपदा में रेवती का ही सम्पर्क है, तृणस्तम्भक का योग पौना है, वायुस्तम्भ का योग तृतीयांश के आसन्न है, धान्यस्तम्भ का योग आधे के लगभग है। अतः इस वर्ष जल तृण से पशु पक्षी सुख पावेंगे, धान्योत्पत्ति आधी होगी, वायु का सञ्चार विशेष नहीं होगा। आर्घमान विचार—जिस वर्ष में अक्षय तृतीया को रोहिणी न हो, श्रावण शु. १५ को श्रवण न हो, कार्तिक शु. १५ को कृतिका न हो, और पौष की अमावस को मूल न हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, यह ४ योग आर्घमान के अनुसार वर्ष के चार रक्षादुर्ग (किले) हैं चारों में से एक भी रक्षा दुर्ग न हो तो अवश्यदुर्भिक्ष पड़ता है, ऐसे विचार करना चाहिये।

अथ लाभ व्यय चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
२	११	२	११	१४	०	११	२	१४	८	८	१४	लाभः
५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८	व्ययम्

अथ लाभव्यय चक्रात्फल विचारः—

लाभव्ययौ समौ कृत्वा एकहीनन्तु कारयेत्॥ अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्॥१॥

१ लाभं, २ सौख्यं तथा ३ क्लेशं, ४ रोगं, ५ लोकापवादनम्। ६ सम्मानं, ७ विजयं, ० हानिः कथितं पूर्वसूरिभिः॥२॥

अथ वर्ष लग्नम्

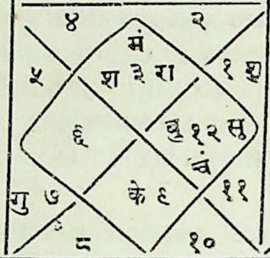

वर्षेशलग्न (जगल्लग्न)

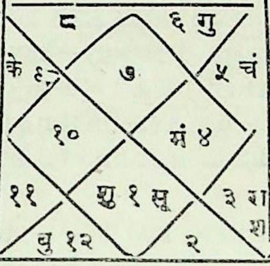

आर्द्राप्रवेश लग्नम्

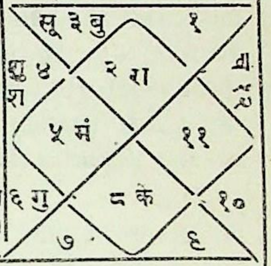

कर्मठ गुरु

यह कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थरत्न है। जप, मन्त्र पुरश्चरणादि के अनेकों विधान और सिद्धिप्रद तांत्रिक प्रयोग भी दिये गये हैं। सिद्धपुत्रेष्टि विधि और भी कई अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं, टिप्पणी में प्रमाण से सब बातें स्पष्टकर दी हैं जिससे सन्देह का स्थान ही नहीं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ नहीं छपा। मू० २) रु०

राश्यभिधान-कल्पलता।

इस पुस्तक में प्रत्येक नक्षत्र के चरणानुसार बालक व बालिकाओं के अनेकों शास्त्रशुद्ध व सुन्दर नाम लिखे गये हैं। बाल बच्चों वाले सद्गृहस्थों व ज्योतिषियों कर्मकाण्डियों के बड़े काम की वस्तु है आज तक ऐसी पुस्तक कहीं भी नहीं छपी, शास्त्रमर्यादानुसार इस पुस्तक की सहायता से बच्चों का नाम रखने से उनकी आयुवृद्धि के साथ बुद्धि का विकास भी होता है तथा संसार में नाम भी रोशन होता है, हजारों बढ़िया अर्थपूर्ण नाम आपको इसमें मिलेंगे। मूल्य १।)रु०

मिलने का पता—मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

संवत २००३ शाका १८६८ चैत्र शुक्लपक्ष १ | हिं | अं | मु | चन्द्र | सू.उ. | सू.अ. | सूर्यस्पष्टः | (सन् १९४६ ई०) ...

संवत् २००३ शकाः १८६८ चैत्र शुक्लपक्ष १

दि. मा.	ति	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चार:	सू.उ. रेल्वे	सू.अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
३१।३	१	बु	२।५	अ	५३।३४	वै	३८।२२	व	२।५	२१	३	२९	मेषे	६।१५	६।४१	११।१९।४०।२३
क्षयम्	२	बु	५६।५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
३१।७	३	गु	५१।३८	भ	४९।३५	वि	३०।५१	तै	२४।१६	२२	४	१	मेषे	६।१४	६।४२	११।२०।३९।३६
३१।१२	४	शु	४५।४१	कृ	४५।११	प्री	२३।३१	व	१८।९	२३	५	२	वृषे. ३।२९	६।१३	६।४३	११।२१।३८।३०
३१।१६	५	श	४०।६	रो	४१।१८	आ	१५।५४	बा	१२।५३	२४	६	३	वृषे	६।१२	६।४३	११।२२।३७।३०
३१।२०	६	र	३४।४०	मृ	३७।२६	सौ	८।२८	कौ	७।२३	२५	७	४	मि. ९।२५	६।१०	६।४३	११।२३।३६।२४
३१।२४	७	चं	२९।४१	आ	२४।६	शो	१।५० १८।३८	ग	२।१०	२६	८	५	मिथुने	६।९	६।४४	११।२४।३५।१६
३१।२८	८	मं	२५।१८	पुन	३१।१७	सु	४८।२९	व	२५।१८	२७	९	६	क. १७।२४	६।८	६।४४	११।२५।३४।१४
३१।३२	९	बु	२१।४४	पु	२९।३६	धृ	४३।४	कौ	२१।४०	२८	१०	७	कर्के	६।६	६।४५	११।२६।३३।२
३१।३६	१०	गु	१९।००	श्ले	२८।४३	शू	३८।२९	ग	१९।००	२९	११	८	सिं. २८।४३	६।५	६।४५	११।२७।३१।४९
३१।४१	११	शु	१७।२७	म	२८।५८	गं	३४।४५	वि	१७।२७	३०	१२	९	सिंहे	६।४	६।४६	११।२८।३०।३८
३१।४५	१२	श	१६।५०	पू	३०।२९	वृ	३०।२७	व	१६।५०	१	१३	१०	कं. ४६।३	६।३	६।४७	११।२९।२९।१९
३१।५०	१३	र	१७।३६	उ	३३।३	ध्रु	२८।४७	तै	१७।३६	२	१४	११	कन्यायाम्	६।१	६।४७	००।००।२७।५५
३१।५५	१४	चं	१९।४०	ह	३९।५७	व्य	२७।४७	व	१९।४०	३	१५	१२	कन्यायम्	६।१	६।४८	००।१ ।२६।३५
३२।००	१५	मं	२२।५१	चि	४१।५४	हृष	२७।५१	व	२२।५१	४	१६	१३	तु. ९।२५	६।०	६।४९	००।२ ।२५।१९

(सन् १९४६ ई०) उत्तरायण ...

चैत्र शु० १५—यूरेनस. १।२१।२९।१२, नेपच्यून ५।१३।४७।५६

रे० २ रवि १९।२४ चन्द्रदर्शनम् चान्द्रसंवत्सरारम्भः नव रात्र.रम:*
[* अभिजिन्मुहूर्ते घट स्थापनं तैलाभ्यङ्गः वर्षफल श्रवणम्
मत्स्य जयन्ती गणगौरी पू मन्वादि जमादिलावल मु. ५,
भ. १८।९ उ. ४५।४१ या. कर्के भौमः २७।०

मार्गीबुधः ३४।९ मेला माईसरखाना
भ. २९ ४१ उ. ५७।३० या. वक्रग. चि. २ कन्यायां गुरुः २९।४६
श्रीदुर्गा ८ मेला श्रीमनसा देवी
भर. शुक्रः ९.०० श्रीराम ९ सर्वेषाम् (मध्यान्हव्यापिनी ग्राह्या)
भ. ४७।३० उ.
भ. १७।२७ या. कामदा ११ व्र.
पुष्ये भौमः ४६।४६ अश्वि. सं. मेषेऽर्कः ३१ । १५ मु. ४५ पुण्यम् †
उ. फा. ऽस् ||||||| दि. ल. २ आवश्य के ल. ५
भ. १९।४० उ. ५१।१५ या. सत्यव्र.
वैसाख स्नान प्रा. चैत्री १५ मन्वादिः
| † मध्यान्होत्तरम् प्रदोषव्र. मेला वैसाख.

चैत्र शु० ८ भौमेष्टं ०।० दिनगणः ३३१४

सू.	चं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
१	३	११	५	००	२	२	८
२५	१	४	२९	११	२५	१	१
३४	२५	३७	५५	५५	२३	२०	२०
१४	५४	२१	१२	२८	५७	४६	४६
५८	२२	२	८	७३	१	३	३
५५	९	००	४०	३०	१६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मू. ३	मू. १

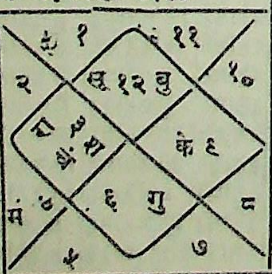

इस पक्ष में प्रायः सब प्रकार के अनाज तेज रहेंगे । गुड़ चन्दन तिल तेल सरसों भी महंगे हों फिर भी व्यापारियों को लाभ कम, घोड़ा ऊंट भैंस आदि पशु भी तेज बिकेंगे । मिथुन में शनिराहु का फल-अग्निकांड खलवाड़ों में कई जगह होंगे परस्पर फिसाद भी हों, बच्चों को रक्तविकार कष्ट देवे, राजाओं के भंडार में कमी का अनुभव हो, कृषकों और साधुओं को पीड़ा हो । लि. १ से ४, ६, १२ को वायु का जोर कहीं उत्तर में बूंदा बांदी हो ।

शकुन विचार—

चैत्रशुदि जो पंचमी दक्षिणपूर्व वाय, वर्षा भी होव … मादों तेज बिकाय
चैत्रशुदी जो त्रयोदशी धूल उड़े दरद्या न आगे वर्षा होनहीं एसा लोतम जान

चैत्र शु० १५ भौमेष्टम ०।० दिनगणः ३३२१

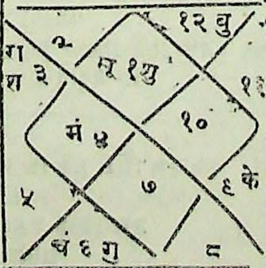

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	३	११	५	००	२	२	८
२	४	५	२९	२०	२५	००	००
२५	१३	४५	४	३२	३७	५८	५८
१९	३७	१८	३७	५०	१	३१	३१
५८	२४	२९	८	७३	२	३	३
४०	१०	००	१५	००	५२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.	[illegible]	[illegible]	मू. १

चैत्र मास में दूध दही और मिष्टान्न स्वयं न खाकर ब्राह्मणदम्पति की पूजा कर बारीक वस्त्र और मिठाई उनको देवे; यह गौरीव्रत कल्याणकारक है ॥ यदि कोई रामनवमी का व्रत न रखकर अन्य व्रत रखता है तो उसे उनका भी फल नहीं मिलता क्योंकि यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है । व्रत की विधि यह है—उपवास रखकर मध्याह्न समय स्वर्णप्रतिमादि में श्रीराम का विधिवत् आवाहन कर पुरुषसूक्त से षोडशोपचार पूजा करे और पुष्पजलयुक्त शंख से "दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च । दानवानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥ परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ !" इस मन्त्र से अर्घ्य देवे ॥

सँम्वत २००३ शकः १८६८ वैशाख कृ०पक्षः २

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प	न	घ प.	यो	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
३२।४	१	बु	२७।१	स्वा	४७।४८	व	२८।४२	कौ	२७।१	५	१७	१४	तुलायाम्	५।५६	६।५०	००। ३।२३ ५५
३२।६	२	गु	३१।५७	वि	५४।११	सि	३०।१	ग	३१।५७	६	१८	१५	वृ ३७।३७	५।५७	६ ५०	००। ४।२२।३१
३२।१५	३	शु	३६।११	अ	६०।००	व्य	३१।४८	व	४।३४	७	१९	१६	वृश्चिके	५।५६	६।५१	००। ५।२०।५६
३२।१६	४	श	४२।१५	अ	००।४६	व	३३।७	व	६।४३	८	२०	१७	वृश्चिके	५।५५	६।५२	००। ६।१९ २१
३२।२३	५	र	४६।५०	ज्ये	७।७	प	३४।१८	कौ	१४।३२	९	२१	१८	ध. ७।७	५।५४	६।५३	००। ७।१७।४६
३२।२८	६	चं	५०।३९	मू	१२।४६	शि	३४।५३	ग	१८।४३	१०	२२	१९	धनुषि	५।५३	६।५४	००। ८ १६।९
३२।३१	७	मं	५३।११	पू	१७।३४	सि	३४।३५	वि	२१।५३	११	२३	२०	म. ३३।३०	५।५२	६।५४	००। ९।१४।३१
३२।३५	८	बु	५४।३८	उ	२१।१७	सा	३३।२७	बा	२३।५४	१२	२४	२१	मकरे	५।५१	६।५४	००।१०।१२।५७
३२।३९	९	गु	५४।४५	श्र	२३।४०	शु	३१।१७	तै	२४।४६	१३	२५	२२	कु. ५४।१३	५।५०	६।५५	००।११।११।८
३२।४२	१०	शु	५३।३५	ध	२४।४६	शु	२८।७	व	२४।१०	१४	२६	२३	कुम्भे	५।४९	६।५६	००।१२।९ ।२७
३२।४६	११	श	५१।११	श	२४।४२	ब्र	२३ ५६	व	२२।२३	१५	२७	२४	कुम्भे	५।४८	६।५६	००।१३। ७।४०
३२।५०	१२	र	४७।४	पू	२३।३२	ऐं	१८।५४	कौ	१६।२८	१६	२८	२५	मी. ८।५०	५।४७	६।५६	००।१४।५ ।५१
३२।५३	१३	चं	४३।२६	उ	२१।३०	वै	१३।५	ग	१५।३५	१७	२९	२६	मीने	५।४६	६।५७	००।१५। ४।२
३२।५७	१४	मं	३८।२१	रे	१८।३६	वि	६।३७ ५८।३३	वि	१०।५३	१८	३०	२७	मे. १८।३६	५।४५	५।५८	००।१६।२ ।८
३३।१	३०	बु	३२।१४	५अ	१५।०५	आ	५२।१९	च	५ ३५	१९	१	२८	मेषे	५।४५	६।५८	००।१७।००।१३

(सन् १९४६ ई०) उत्तरायणगोलौ, सा. वृषा, ग्रीष्मर्तुः

वैशाख कृ० ३०—यूरेनस १।२२।२२।२१, नेपच्यून ५।१३।२६।२१

स्वा. ।।।ऽमू ।ऽ।।दि. ल. ५ आवश्यके

म. ४।३४ उ. ३७।११ या. सा. वृषे भानु. ५८।३६ गुडफ्राईडे ❀
श्रीगणेश ४ व्रतम् [❀ अगस्तास्तम् ४४।२१
कृ. भृगुः १।४८ ईस्टर संडे
म. ५०।३६ उ
म. २१।५३ । या वृषे भृगुः ४१।२१

म. २४।१० उ. ५३।३५ या
मर. रवि १२ ३६ रेवत्यां बुधः ७।५० वरूथिनी ११ व्र. स्मा. वै.
वरूथिनी ११ निम्बा.
म. ४३।२६ उ. उभा. ।ऽ।।ऽ चा ।।।। दि. ल. २
म, १०।५३ या
रोहि. भृगुः ५०।२२ मई ५ ता. ३१ मेला पञ्जपुर (पञ्जौर)

वैशाख कृ० ८ बुधघ्रम् ०।० दिनगणः ३३२९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	५	१	२	२	८
१०	७	१३	२८	००	२६	००	००
१२	३६	१२	४	२२	३	२९	९
५७	११	४५	१९	३८	५१	६	६
५८	२६	९२	७	७२	३	३	३
१८	४२	४८	३०	५१	२	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ४	पुष्य	उभा. ३	चि २	कृ २	पुन २	मृ. ३	मू. १

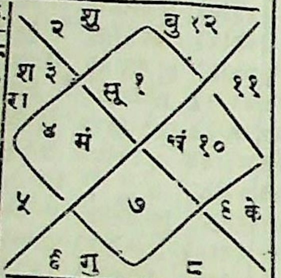

इस पक्ष में अलसी गेहूं पहले तेज रहकर फिर मन्दा होवे। रूई चांदी सुवर्ण के भाव में तेजी। पूर्वीय उत्तरीय प्रदेशों में कुछ उत्पात होवे। सवारी की दुर्घटना हों। यहाँ शनि राहु का राशि सम्बन्ध छूटते ही अनेक लोहे के कारखाने उन्नति करेंगे, जनता नये २ उद्योग धंदों में लगेगी। गर्मी अधिक तेज होने लगेगी। ति. १ से ६,१२,१४ को मामूली बादल चाल हो।

शकुन विचार – वैशाख वदी आठें दिना बिजली गर्जन होय। संवत् अच्छा जानिये संशय करो न कोय ॥ वैशाख वदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान। धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत् मान ॥

वैशाख कृ० ३० बुधेघ्रम् ०।० दिनगणः ३३३६

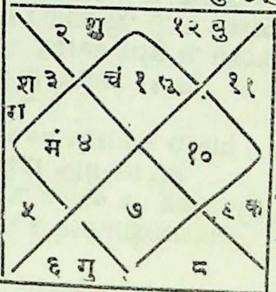

सू	मं	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	५	१	२	२	८
१५	१०	२१	२७	८	२६	००	००
००	४७	२०	१६	५९	३०	६	६
१३	१७	१७	४१	२	५५	५२	५२
५८	२७	७६	७	७२	३	३	३
२	२४	३१	००	३८	५८	११	११
	मा.	मा	व.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
भर २	पुष्य	रे २	चि २	कृ. ४	पुन २	मृ. ३	मू. १

वैशाख मास में प्याऊ (छबील) लगानी चाहिये और भगवत्प्रीत्यर्थ अभिषेकपात्र शिवजी पर देना तथा जूना पंखा, छतरी, बारीक कपड़, चन्दन, जलपात्र (घड़ा झज्झर आदि), फूलों के हार, सुन्दर २ नये २ केले तथा दाख आदि फल देने चाहियें। चैत्र शुक्ल १५ अथवा मेष संक्रान्ति से वैशाख स्नान आरम्भ होता है। स्नान संकल्प – देशकालौ सङ्कीर्त्य मम वाङ्मनःकायजाशेषपापक्षयद्वारा श्रीमधुसूदन-देवताप्रीत्यर्थं वैशाखस्नानमहं करिष्ये। स्नानमंत्र—वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणं रवेः। प्रातस्सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदनः ॥ सारा महीना भर स्नान न कर सके तो त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा तक अवश्य कर लेना चाहिये और स्नान के बाद पीपल को जड़ों में पानी देकर उसकी परिक्रमा करने से अनेक कुल तर जाते हैं। इस मास में कांसी का पात्र, माष, ...

सँम्वत् २००३ शकः १८६८ वैशा. शुक्लपक्षः ३

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हिं. वैशा.	अं. मई	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
३३।४	१	गु	२६।४७	भ	११।१०	सौ	४४।३३	ब	२६।४७	२०	२	२६	वृ. २५।८	५।४४	६।५६	०।१७।५८।२१
३३।८	२	शु	२०।३८	कृ	७।२	शो	३६।४८	कौ	२०।३८	२१	३	१	वृषे	५।४३	७।०	०।१८।५६।१९
३३।१२	३	श	१४।३५	रो	२।५८ ५८।५८	अ	२९।२	ग	१४।३५	२२	४	२	मि. ३०।५६	५।४२	७।०	०।१९।५४।१३
३३।१५	४	र	८।४७	आ	५५।२६	सु	२१।५०	वि	८।४६	२३	५	३	मिथुने	५।४२	७।१	०।२०।५२।६
३३।१९	५	चं	३।२४	पुन	५२।३१	धृ	१४।५३	वा	३।२५	२४	६	४	क. ३८।१५	५।४१	७।२	०।२१।५०।८
अवम्	६	चं	५८।३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
३३।२३	७	मं	५४।४५	पु	५०।३०	शू	८।२९	ग	२६।४१	२५	७	५	कर्के	५।४०	७।२	०।२२।४७।५७
३३।२७	८	बु	५१।४७	श्ले	४९।१७	गं	२।५५ ५७।५९	वि	२३।१६	२६	८	६	सिं. ४६।१७	५।३९	७।३	०।२३।४५।५५
३३।३०	९	गु	४९।५९	म	४९।१	ध्रु	५३।५३	वा	२०।५३	२७	९	७	सिंहे	५।३८	७।३	०।२४।४३।४५
३३।३४	१०	शु	४९।२०	पू	५०।१६	व्या	५०।५२	तै	१९।२९	२८	१०	८	सिंहे	५।३७	७।४	०।२५।४१।३४
३३।३८	११	श	५०।३	उ	५२।४०	ह	४८।५५	व	१९।४१	२९	११	९	क. ५।५२	५।३६	७।५	०।२६।३९।२३
३३।४१	१२	र	५१।१४	ह	५६।१६	व	४८।०	ब	२०।३८	३०	१२	१०	कन्यायाम्	५।३६	७।५	०।२७।३७।९
३३।४५	१३	चं	५५।४	चि	६०।०	सि	४७।५४	कौ	२३।९	३१	१३	११	तु. २८।४१	५।३५	७।६	०।२८।३४।४६
३३।४९	१४	मं	५९।१०	चि	१।६	व्य	४८।३८	ग	२७।७	१	१४	१२	तुलायाम्	५।३४	७।७	०।२९।३२।२२
३३।५२	१५	बु	६०।०	स्वा	६।४५	व	४९।५६	वि	३१।३५	२	१५	१३	वृ. ५६।३१	५।३४	७।८	१।० ।३०।१०
३३।५६	१५	गु	३।५९	वि	१३।३	प	५१।३४	व	३।४६	३	१६	१४	वृश्चिके	५।३३	७।८	१।१ ।२७।४९

(सन् १९४६ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः

वैशाख शु० १५—यूरे. १।२३।१०।५०, नेपच्यून ५।१३।८।४८

चन्द्रदर्शनम्
पुन. ३ च. शनिः १७।२४ जमादि उलाखिर मु. ६ श्रीपरशुरामजयन्ती-†
भ. ४१।४१ उ. मृग. २ वृषे राहुः ज्ये. ४ वृश्चिके केतुः ९।२५ अक्षय ३
भ ८।४७ या. श्रीसूरदास जयन्ती
वक्रग चि. १ गुरुः २४।२०

† (इयं रात्रिप्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या)

भ. ५४।४५ उ. अश्वि मेषे च बुधः ६।५४ श्री गङ्गा ७ (गङ्गास्नाने *
भ. २३ १६ या

* पूजने च महत्फलम्)

भ. १९।४१ उ. ५०।३ या. कृ रवि ००।२५ मोहिनी ११ व्र. स्मा. वै.
मृग. शुक्रः ५०।४० निम्बार्क ११ व्रतम्
श्ले. भौमः ००।२
¶ श्रीनृसिंह १४ व्रतम्
भ. ५९।१० उ. सं.वृषेऽर्कः २८।१६ मु. १५ पुण्यं १४।१६ उ. ¶
भ. ३१।३५ या. भर. बुधः १०।११ कूर्मजयन्ती
वैशाख स्नान समाप्ति यँनाय साम्नजल कुम्भदानम्

वैशाख शु० ८ बुधेष्टम् ०।० दिनगणः ३३४३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	५	१	२	१	७
२३	१४	१	२६	१७	२७	२९	२९
४५	७	२१	३	२६	२	४४	४४
५५	२४	२७	२६	२७	२९	३८	३८
५७	२८	९२	६	७२	४	३	३
५०	३०	६	०	२५	२४	११	११
क्रान्तिः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ	उ.	उ	अ.	अ.
४	पु. २	[illegible]	[illegible]	रो. ३	पुन ३	मृ २	ज्ये ४

इस पक्ष में अनाज पहले कुछ मन्दा रह कर फिर तेज हो रसकस उड़द मूंगी बाजरा भी तेज, मसरी लवण तिल तैल यह सब मन्दे की रुख में रहें। म.एडयों में पशुओं का भाव गत मास की अपेक्षा तेज होगा। रुई में जोरदार घटँ बढ़ चलेगी, व्यापारी सावधान रहें। ति. ३।१३।१४।१५ बादल चाल कहीं कहीं बूंदाबांदी हो। शा० वि०—वैशाख शुदी नौमी दिना बादल हो भरपूर। चातुर्मास वर्षा नहीं घटे प्रजा को नूर। ग्यारस द्वादशी तेरसा जो बादल हो जाय। पूनों वर्षा होय तो भादू तेज बताय। ति ५ को बादल गर्जें तो भादों में घास तेज होगा।

वैशाख शु० १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ३३५१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	०	५	१	२	१	७
१	१८	१४	२५	२७	२७	२९	२९
२७	५	४०	४४	१२	४३	१९	१९
४६	४८	५४	३०	४६	४	१३	१३
५७	२८	९८	५	७२	५	३	३
४०	३५	३८	१०	४	२६	११	११
क्रान्तिः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ. २	श्ले. १	भ. १	[illegible]	मृ २	पुन ३	मृ. २	ज्ये ४

वैशाख शुक्ल ३ को यदि गङ्गास्नान और देवदर्शन किया जाय तो वह अक्षय फल देता है। इस पक्ष में सभी रस सुवर्ण और अन्न के साथ पानी के घड़े और जौ गेहूँ चणे के सत्तू दही चावल पंखा छत्री और जूता पितृ तथा देवताओं के निमित्त ब्राह्मणों को दान करें। दान का संकल्प—"नामगोत्रमुच्चार्य—अद्येतदन्नं शीतलोदकयुतं घटं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे विप्राय तुभ्यमहं संप्रददे"। इसी तृतीया को भगवान श्रीपरशुराम जी का जन्मदिवस है अतः व्रत रक्खें और मध्याह्न समय में भगवान् श्रीपरशुराम जी की विधिपूर्वक पूजा करके "ॐ जमदग्निसुतो वीर ! क्षत्रियान्तकर प्रभो ! गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर !" इस मन्त्र से अर्घ्य दें॥ नृसिंह १४ को सायंकाल में श्रीनृसिंह भगवान् का विधिवत् पूजा करके 'परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेशरी। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते !' इस मन्त्र से अर्घ्य देवे॥

सम्वत् २००३ शकाः १८६८ ज्येष्ठकृष्णपक्षः ४										हि.	अं.	सु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः
मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.				सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
०	१	शु	९।६	अ	१९।४२	शि	५३।१०	कौ	९।६	४	१७	१५	वृश्चिके	५।३२	७।९	१।२।२५।२९
३	२	श	१४।५	ज्ये	२६।७	सि	५४।२९	ग	१४।५	५	१८	१६	ध २६।७	५।३१	७।१०	१।३।२२।५३
७	३	र	१८।३७	मू	३१।४७	सा	५५।१८	वि	१८।३७	६	१९	१७	धनुषि	५।३१	७।१०	१।४।२०।२९
४।११	४	चं	२२।१९	पू	३९।५८	शु	५५।१८	बा	२२।१९	७	२०	१८	म.५२।५६	५।३०	७।११	१।५।१७।५१
४।१४	५	मं	२४।५०	उ	४०।५१	शु	५४।२५	तै	२४।५०	८	२१	१९	मकरे	५।३०	७।१२	१।६।१५।२९
४।१७	६	बु	२६।१५	श्र	४३।३२	ब्र	५२।३१	व	२६।१५	९	२२	२०	मकरे	५।२९	७।१३	१।७।१२।५१
४।१९	७	गु	२६।१७	ध	४५।५८	ऐं	४९।३४	ब	२६।१७	१०	२३	२१	कु.१४।१५	५।२९	७।१३	१।८।१०।१६
४।२१	८	शु	२५।६	श	४५।१०	वै	४५।४०	कौ	२५।६	११	२४	२२	कुम्भे	५।२९	७।१४	१।९। ७।३९
४।२२	९	श	२२।४२	पू	४४।१२	वि	४०।४३	ग	२२।४२	१२	२५	२३	मी ३० १२	५।२९	७।१५	१।१०। ५।११
४।२४	१०	र	१९।१३	उ	४२।२०	प्री	३५।१६	वि	१९।१३	१३	२६	२४	मीने	५।२९	७।१५	१।११। २।३४
४।२५	११	चं	१४।५५	रे	४१।१६	आ	२८।५८	बा	१४।५५	१४	२७	२५	मे.४१।१६	५।२८	७।१५	१।११।५९।४६
४।२७	१२	मं	९।४०	अ	३९।१०	सौ	२२।५	तै	९।४०	१५	२८	२६	मेषे	५।२८	७।१६	१।१२।५७। ६
४।२९	१३	बु	४।९	भ	३२।२०	शो	१४।४८	व	४।९	१६	२९	२७	वृ४९।१६	५।२८	७।१६	१।१३।५४।३४
अवम्	१४	बु	५८।१२													
४।३१	३०	गु	५१।५५	कृ	२८।१७	अ	७।१७ ५०।३९	च	२५।३	१७	३०	२८	वृषे	५।२८	७।१६	१।१४।५१।४९

(सन् १९४६ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः

ज्येष्ठ कृष्ण ३० यूरेनस १।२३।५८।२८, नेपच्यून ५।१२।५७।३३

भ. ४९।२१ उ. मिथुने शुक्रः १९।११
भ. १८।३७ या. श्री गणेश ४ व्रतम्
पूर्वास्तं बुधः ३४।६
सा. मिथुने भानु ००।३१
भ. २६।१५ उ. ५९।१९ या कृ. बुधः ९।३०
वृषे बुधः ४७।३०
आर्द्रा-मृगुः २९।२६ रो. रविः ५५।२३
भ. ५०।५७ उ.
भ. १९।१३ या. रे. ।।।।ऽअग्नि ।ऽ। ल० १ अत्या. अनिष्टपद्दानात्
अपरा (भद्रकाली) ११ व्रतम् सर्वे. रे. ।।।।।ऽ।। ल. ६ वा. गो. घू
रो. धः ३०।५३
भ. ४।९ उ. ३१।१० या.

वटसावित्री ३० व्रतम

ज्येष्ठ कृष्ण ८ शुक्रेष्टम् ०।० दिनगणः ३३५९

सु	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१	५	२	२	१	७
९	२२	००	२५	६	२८	२८	२८
७	२०	२५	९	५२	००	५३	५४
३९	१५	३	२	२९	४१	४७	४७
५७	२९	[illegible]	४	७१	५	३	३
२५	३०	३८	३५	२७	४८	११	११
क्रान्तिपद्धतिः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अ	श्ले.	कृ.	[illegible]	आ	पुन	मृ.	ज्ये
४	२	२	[illegible]	१	३	२	४

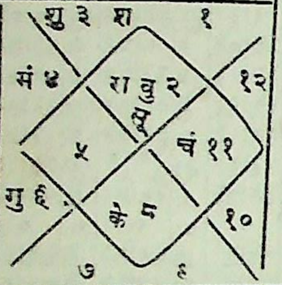

इस पक्ष में कई प्रान्त हैजे आदि के प्रकोप से भयभीत होंगे। मूंग उड़द गेहूं जौं अलसी गुड़ घी इनके भाव मे तेजी दीखेगी। चांदी सुवर्ण रु के भाव में घटाबढ़ी रुख तेज। बच्चों और स्त्रियों को विशेष कष्ट रहे। रेलवेइञ्जन मिल आदि लोह-प्रधान कारखानों के संचालकों और उच्चाधिकारियों व विशेष खींचातानी होवे। ति. १।३।४।१४।३० को पश्चिमोत्तर भारत मे कहीं कहीं साधारण वायु के साथ वर्षा हो।

शकुन विचार—ज्येष्ठ अमावस दिवस वा रजनी बादल जोय।
चौमासा सूखा रहे भारी गड़बड़ होय॥

ज्येष्ठ कृष्ण गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ३३६५

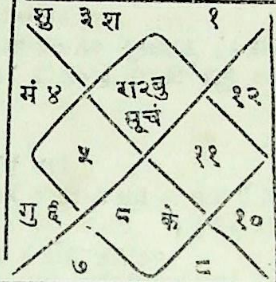

सू.	मं	बु	गु.	शु	श.	रा	के.
१	३	१	५	२	२	१	७
१४	२५	१३	२४	१५	२९	२८	२८
५१	२८	२२	४९	८	७	३४	३४
३९	२९	१५	५०	४८	१८	४३	४३
५७	३१	[illegible]	३	७१	६	३	३
१९	२८	५४	५०	५	२५	११	११
क्रान्तिपद्धतिः	मा.	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.
	उ	अ.	उ.	उ	उ	अ.	अ.
रो.	श्ले	रो.	[illegible]	आ	पुन	मृ.	ज्ये
२	३	२	२	३	३	२	४

इस अमावस्या को वैधव्य नाश करने वाला "वट्सावित्री" व्रत' होता है। ज्येष्ठ कृ. ३० को पतिव्रता स्त्रियां वट के नीचे ३ रात रहकर सत्यवान् के साथ सावित्री की सोने की (यदि अशक्त हों तो मृण्मय) मूर्ति बनाकर फल पुष्प व धूप दीप नैवेद्य हल्द कंठसूत्र और कुंकुम केसर आदि उपचारों से विधिपूर्वक पूजन कर और 'ओंकारपूर्विका देवी वीणापुस्तकधारिणी । वेदमातर्नमस्तेऽस्तु अवैधव्यं प्रयच्छ मे॥" इस मन्त्र से अर्घ्य देकर बाद में "सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्" इस मन्त्र से मूर्ति ब्राह्मण को देवें।

सँम्वत् २००३ शकः १८६८ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ५ (सन् १९४६ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः ग्रीष्मर्तुः

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हिं. जे	अं. जून	मु. ज़ी	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
३४।३२	१	शु	४५।४६	रो	२४। ५	धृ	५२। ३	क	१८।५०	१८	३१	२९	मि. ५८।१४	५।२८	७।१७	१।१५।४६। ६
३४।३४	२	श	३९।५३	मृ	२०। ४	शू	४४।४०	वा	१२।४९	१९	१	३०	मिथुने	५।२८	७।१८	१।१६।४६।२०
३४।३६	३	र	३४।२४	आ	१६।२८	गं	३७।४०	तै	७। ८	२०	२	१	क. ५९।११	५।२८	७।१८	१।१७।४३।३१
३४।३७	४	चं	२९।३२	पुन	१३।२५	वृ	३१।१२	व	१।५८	२१	३	२	कर्के	५।२८	७।१८	१।१८।४०।३६
३४।३९	५	मं	२५।३२	पु	११।१०	ध्रु	२५।२६	वा	२५।३०	२२	४	३	कर्के	५।२७	७।१९	१।१९।३७।३९
३४।४०	६	बु	२२।२८	श्ले	९।४४	व्या	२०।२५	तै	२२।२८	२३	५	४	सिं. ९।४४	५।२७	७।१९	१।२०।३४।५१
३४।४२	७	गु	२०।३०	म	९।२३	ह	१६।१६	व	२०।३०	२४	६	५	सिंहे	५।२७	७।१९	१।२१।३२।७
३४।४३	८	शु	१९।४३	पू	१०।१५	व	१३। ७	व	१९।४३	२५	७	६	कं.२५।४६	५।२७	७।२०	१।२२।२९।१४
३४।४५	९	श	२०।१४	उ	१२।१९	सि	१०।५६	कौ	२०।१४	२६	८	७	कन्यायाम्	५।२७	७।२१	१।२३।२६।१८
३४।४६	१०	र	२२।१०	ह	१५।४२	व्य	९।५०	ग	२२।१०	२७	९	८	तु ४७।५७	५।२७	७।२१	१।२४।२३।२७
३४।४८	११	चं	२५।५	चि	२०।११	व	९।३६	वि	२५। ५	२८	१०	९	तुलायाम्	५।२६	७।२२	१।२५।२०।३०
३४।४९	१२	मं	२९। ९	स्वा	२५।४०	प	१०।१३	वा	२९। ९	२९	११	१०	तुलायाम्	५।२६	७।२२	१।२६।१७।२८
३४।५१	१३	बु	३३।५०	वि	३१।५४	शि	११।२५	कौ	१।२९	३०	१२	११	वृ.१५।२१	५।२६	७।२२	१।२७।१४।२१
३४।५२	१४	गु	३८।५२	अ	३८।२४	सि	१३। ३	ग	६।२१	३१	१३	१२	वृश्चिके	५।२६	७।२३	१।२८।११।२४
३४।५४	१५	शु	४३।५०	ज्ये	४४।५१	सा	१४।४४	वि	११।२१	१	१४	१३	ध.४४।५१	५।२६	७।२४	१।२९। ८।२२

ज्येष्ठ शु० १५—यूरेनस. १।२४।५१।१५, नेपच्यून ५।१२।५३।५२

चन्द्रदर्शनम् जून ६ ता० ३०
रज्जब मु. ७
म. १५८ उ. २६।३२ या. पुन. मृगु. ५०।६ मगे बुधः ३३ ४२
[¶ २५।३७ उ. फा. ऽमं ॥॥ऽनृ. ३१ या. ॥। दि. ल. ६ वा गोधू.
म. ॥॥ऽअ. २५ या. ऽ २० या. ऽ॥ ल. ६ वा गोधू.
म. २०।३० उ. ५०।६ या. मिथुने बुधः ३९।३२
मघा. ।सिंहे च भौमः ३५।५४ मगे रवि. ५३।१८ पुन. ४ कर्के शनिः ¶
ह. ।ऽ॥।ऽचौ. ३४ उ. ऽ॥। ल. गोधू वा १२ चं. गुरु दा. अत्या.
म. ५३।३७ उ. आर्द्रा ज्ञः ५०।१० गङ्गा दशहरा
म. २५।५ या. निर्जला ११ व्रतम् सं. स्वा. ॥॥॥ऽ॥। ल. गोधूलि.
पश्चिमोदयं ज्ञः ३१।५ भौम प्रदोष व्र. स्वा. ॥॥ऽरो. ॥॥ लग्न ५।६
मार्गीगुरु ३९।७ कर्के शुक्रः १२।४७
म. ३८।५२ उ. [† १०।१६ या. खमास चन्द्रग्रहणम्
म.११।२१ या. सं. मिथुनेऽर्कः ५४।१६ मु. ३० पुण्यं परदिने †

ज्येष्ठ शु० ८ भृगाविष्टम् ०।० दिनगणः ३३७३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	५	२	२	१	७
२२	२६	००	२४	२३	२६	२८	२८
२१	५०	४५	३२	०२	५६	९	९
१४	४४	१८	४४	४१	२६	१८	१८
५७	३२	[illegible]	१	७	६	३	३
७	९	[illegible]	५०	२४	२७	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	अ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
गो. ४	श्ले. ४	मृ. ३	आर्द्रा	पुन २	आर्द्रा	मृ. २	ज्ये ४

इस पक्ष में वायु अधिक चले, पशुओं के भाव में तेजी, ति. ८ से ११ तक =)॥ करीब गेहूं मन्दा हो, महगा का फल भी आगे अनाज का कुछ काल मंदा ही करेगा, ति. ७ से मूंगा तांबा सोना चांदी और रक्तवर्ण की वस्तु तेज हों। ति. १२ से बाद ९ दिन तक रुई मन्दी चलकर फिर तेज हो। ति. २ से ९ तक व १२ को कहीं २ बून्दा बांदी हो। शकुनविचार ज्येष्ठशुदी सप्तमदिने विजुरी मेघ निहार। दक्षिणदिशा वायु चले तिल से लाभ अपार॥ तिथि पूर्णमासी को वर्षा होने पर दुर्भिक्ष होता है। आंधी वायु बिजली हो तो सुभिक्ष करता है।

ज्येष्ठ शु० १५ भृगाविष्टम ०।० दिनगणः ३३८०

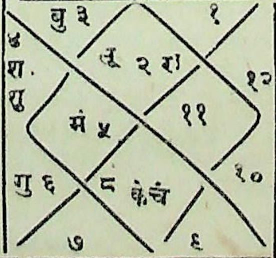

सू	मं	बु	गु	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	५	३	३	१	७
२९	३	१४	२४	२	००	२७	२७
८	३१	५१	२८	५	४५	४७	४७
२२	३०	१०	२४	२९	३	४	४
५६	३२	[illegible]	००	६०	६	३	३
५८	३०	१८	१	१२	५०	११	११
क्रान्ति	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	व
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	अ
[illegible] ७	म २	आ ३	आर्द्रा	पुन ४	पुन ४	[illegible] २	ज्ये ४

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को संवत्सर का मुख माना है इसलिये उस दिन विशेष स्नान और दान करने से 'बिना दी हुई वस्तु पर अपना हक जमा लेना, तीनों प्रकार की अवैध हिंसा और परस्त्रीसेवन, कटु तथा मिथ्या भाषण, चुगली निन्दा, व्यर्थ भाषण, पराई वस्तु की चाहना, दूसरे का बुरा सोचना' ये १० पाप दूर हो जाते हैं।

यदि गङ्गा में न जा सकें तो सतलुज आदि नदी में ही स्नान करके गङ्गा की पूजा करें। उसका मन्त्र यह है—ॐ नमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नमो नमः॥ निर्जला एकादशी को व्रत रखकर मिसरी और पानी के घड़े ब्राह्मण को देने से भगवान विष्णु के समीप पहुँच कर मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है॥

सँम्वत २००३ शकः १८६८ आषाढ़ कृ०पक्षः ६ — (सन् १९४६ ई०) उत्तरायणगोलौ, ग्रीष्मर्तुः सा.कर्का. दक्षि.

आषाढ़ कृ० ३०—यूरेनस १।२५।४३।४९, नेपच्यून ५।१२।५४।१४

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. आषा.	अं. जून	मु	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले	
३४।५१	१	श	४८।२०	मू	५०।५०	शु	१६।८	वा	२६।५	२	१५	१४	धनुषि	५।२६	७।२७	२। ०। ५।३२	पुष्ये भृगुः ३ ४१
३४।२७	२	र	५१।५७	पू	५६।४	शु	१७।५	तै	२०।८	३	१६	१५	धनुषि	५।२६	७।२४	२। १। २।२६	पुन. ज्ञः ४७।१३
३४।५८	३	चं	५४।३१	उ	६०।०	ब्र	१९।१६	व	२३।१४	४	१७	१६	म. १२।५	५।२६	७।२५	२। १।५६।२२	भ. २३।१४ उ. ५४।३१ या.
३५।०	४	मं	५५।५६	उ	०।७	ऐं	१६।३४	व	२५।१३	५	१८	१७	मकरे	५।२६	७।२६	२। २।५६।२३	श्री गणेश ४ व्रतम्
३५।११	५	बु	५६।०	श्र	३।६	वै	१४।५४	कौ	२५।५८	६	१९	१८	कु. ३३।५१	५।२६	७।२६	२। ३।५३।१६	
३५।१३	६	गु	५७।४६	ध	४।३७	वि	१२।२	ग	२५।२४	७	२०	१९	कुम्मे	५।२५	७।२७	२। ४।५०।९	भ. ५४।५२ उ.
३५।१४	७	शु	५२।२५	श	५।४	प्री	८।२६	वि	२३।३७	८	२१	२०	मी. ४६।४४	५।२५	७।२७	२। ५।४७।७	भ. २३।३७ या. आर्द्रा. रविः ५६।०० सा. कर्के भानुः २८।५३
३५।१६	८	श	४८।५७	पू	४।३०	आ	३।५० ५८।१४	वा	२१।११	९	२२	२१	मीने	५।२६	७।२८	२। ६।४३।५४	कर्के बुधः ४८।३८ उभा. ॥।॥॥। ल. १ चं. गु. दा.
३५।१४	९	र	४४।३८	उ	२।४५	शो	५२।१४	तै	१६।३२	१०	२३	२२	मीने	५।२६	७।२८	२। ७।४०।४९	रे. ॥॥ऽ रो. १९ उ. ऽ ५२ उ. ऽ॥ दि. ल. ६ गोधू. वा १ चं गु. दा.
३५।१३	१०	चं	३९।३०	रे	०।१३ ५७।५५	अ	४५।२६	व	१२।४	११	२०	२३	मे. ०।१३	५।२७	७।२८	२। ८।३७।४१	भ. १२।४ उ. ३९।३० या.
३५।११	११	मं	३३।५०	भ	५३।६	सु	३८।१७	व	९।५०	१२	२५	२४	मेषे	५।२७	७।२७	२। ९।३४।३८	पुष्ये ज्ञः ९।५४ योगिनी ११ व्रतं सर्वे.
३५।१०	१२	बु	२७।४८	कृ	४९।२	धृ	३०।४७	तै	२७।४८	१३	२६	२५	वृ ७।५	५।२७	७।२७	२।१०।३१।३६	श्लेषा. भृगुः १६।३२ प्रदोष व्र. रो. ।ऽ॥ऽअऽ॥ ल. १ गुरु दानात्
३४।५८	१३	गु	२१।२४	रो	४४।४९	शू	२३।२	व	२१।३४	१४	२७	२६	वृषे	५।२८	७।२७	२।११।२८।२९	भ. २१।३४ उ. ४८।२८ या.
३४।५७	१४	शु	१५।२३	मृ	४०।४७	ग	१५।३४	श	१५।२३	१५	२८	२७	मि. १२।४८	५।२६	७।२७	२।१२।२५।२१	
३४।५५	३०	श	९।२८	आ	३७।२	वृ	८।९	ना	९।२८	१६	२९	२८	मिथुने	५।२६	७।२७	२।१३।२२।१४	शनैश्चरी ३०

आषाढ़ कृ० ८ मन्देष्टम् ०।० दिनगणः ३२८८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	५	३	३	१	७
६	७	२८	२४	११	१	२७	२७
५३	५६	४४	३१	३५	४३	२१	२१
५४	०४	३६	१८	२४	४०	३८	३८
५७	३३	९३	०	७०	७	३	३
५७	१०	३	३०	०	१२	११	११
सौरपक्षा	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
	उ	उ.	उ.	उ	उ.	अ.	अ.
आ. १	म. ३	पुन ३	चि १	पुष्य ७	पुन ४	मृ. २	ज्ये ५

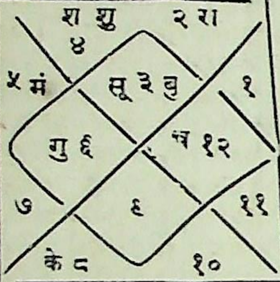

इस पक्ष में, वर्षा के योग ऐसे हैं कि बहुत जगह तो तूफान वर्षा जोर से होगी नदियों से हानि होगी, कई जगह वर्षा का अभाव सा ही रहेगा। अनाज भाव सम रहेगा। ति. ९ से प्रायः श्वेत वस्तु कुछ तेज रहेंगी, गौ भैंस के पालकों को कष्ट, राजा प्रजा में वैमनस्य रहेगा। नये २ कानून बनेंगे। ति. ८ से वर्षा अधिक होगी। ति. १ से ९ व १२।१४ तक वर्षा योग है।

शकुन वि०—आषाढ़ वदी जो अष्टमी बादल उगे चन्द। वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुःख द्वन्द ॥ १ ॥ काला बादल करवरा धौलो करे सुकाल। चन्दा उगे निमला निश्चय पड़े दुःकाल

आषाढ़ कृ० ३० मन्देष्टम् ०।० दिनगणः ३३९५

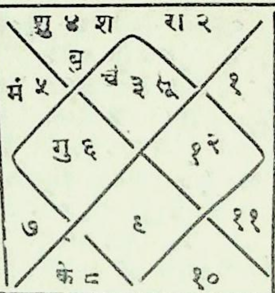

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	५	३	३	१	७
१३	११	८	२०	१९	२	२६	२६
२२	५३	४३	५५	४९	३७	५९	५९
१४	३०	१४	४८	२३	४५	२४	२४
५७	२४	७६	१	६९	७	३	३
५०	३०	५०	५०	३०	२०	११	११
सौरपक्षा	मा.	मा	मा	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ
आ. ७	म. ४	पुष्य ८	चि १	श्ले. १	पुन ४	मृ. २	ज्ये ५

आषाढ़ में एक बार भोजन करने से बहुत धन धान्य और पुत्रों की प्राप्ति होती है। इस मास में भी वामन भगवान् के लिये जूता छत्री लूण आँवला आदि देने चाहियें और भगवान् की पूजा करें। इस मास में प्याऊ (छबील) लगाने से सब पाप दूर हो जाते हैं। अब सभी व्रतों में यह साधारण १० धर्म हैं। क्षमा, सत्य, दया, दान, पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, हवन, सन्तोष, तप, सरलता। व्रत रख कर बार बार पानी पीने से, पान खाने से, दिन में सोने से, और मैथुन से, व्रत नष्ट हो जाता है। व्रती मनुष्य को तिथि के अन्त में पारण करना चाहिये।

...थि के अन्त में पारणा करना चाहिये।

संवत् २००३ शकः १८६८ आषाढ़ शुक्लपक्षः ७										हिं.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः
दि मा.	ति.	वा.	घ. प.	न	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	आषा.	जुला.	शाबान	सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
३४।५=	१	र	३।५५	पुन	३३।४६	ध्रु	५४।:१	व	३।५५	१७	३०	२६	क. १६।३७	५।३०	७।२७	२।१४।१६।६
अवम्	२	र	५६।०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
३४।५२	३	चं	५४।५२	पु	३१।२१	ह	४८।३६	तै	२६।५६	१८	१	१	कर्के	५।३०	७।२७	२।१५।१५।४६
३४।५०	४	मं	५१।४=	श्ले	२६।४२	व	४३।२६	व	२३।१७	१६	२	२	सि. २६।४२	५।३१	७।२७	२।१६।१२।३६
३४।४६	५	बु	४६।=७	म	२६।३	सि	=६।५	ब	२०।३१	२०	३	३	सिंहे	५।३१	७।२७	२।१७।६ ।३४
३४।४=	६	गु	४८।४२	पू	२६।३६	व्य	३५।४४	कौ	१६।६	२१	४	४	क. ४५।५	५।३२	७।२६	२।१८।८ ।३१
३४।४६	७	शु	४६।४	उ	३१।=२	व	३३।२३	ग	१८।५३	२२	५	५	कन्यायाम्	५।३२	७।२६	२।१६।३ ।१४
३४।४४	८	श	५०।५४	ह	३४।३१	प	=२।५	वि	१६।५६	२३	६	६	कन्यायाम	५।३२	७।२=	२।२०।० ।१६
३४।४=	६	र	५३।४३	चि	३८।४२	शि	३१।३७	वा	२२।१८	२४	७	७	तु. ६।३८	५।३३	७।२६	२।२०।५७।७
३४।४१	१०	चं	५७।३८	५०	४३।५८	सि	३२।५	तै	२५।४०	२५	८	८	तुलायाम्	५।३४	७।२६	२।२१।५३।४६
३४।४०	११	मं	६०।०	वि	५०।०	सा	३३।११	व	२६।५८	२६	६	६	वृ. ३३।३०	५।३४	७।२६	२।२२।५०।४८
३४।३८	११	बु	२।१५	अ	५६।३१	शु	३४।४४	वि	२।१५	२७	१०	१०	वृश्चिके	५।३५	७।२६	२।२३।४७।३१
३४।३६	१२	गु	७।१७	ज्ये	६०।०	शु	३६।२६	वा	७।१७	२८	११	११	वृश्चिके	५।३५	७।२५	२।२४।४४।२६
३४।३५	१३	शु	१२।१६	ज्ये	३।१	ब्र	३७।५६	तै	१२।१६	२६	१२	१२	ध. ३।१	५।३५	७।२५	२।२५।४१।१८
३४।३३	१४	श	१६।४३	मू	६।८	ऐं	३८।५६	व	१६।४३	३०	१३	१३	धनुषि	५।३६	७।२५	२।२६।३८।२२
३४।३२	१५	र	२०।३१	पूषा	१४।३०	वै	३६।१८	ब	२०।३१	३१	१४	१४	म. ३०।३६	५।३६	७।२५	२।२७।३५।१४

(सन् १६४६ ई०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः वर्षर्तुः

आषाढ़ शु० १५—यूरे. १।२६।३३।१६, नेपच्यून ५।१३।४।३२

चन्द्रदर्शनम् श्री जगदीशरथयात्रा
[† ॥ ।।।ऽ ॥ ल० १२ चं० गु० दा०
पू० फा० भौमः ३१।४२ शाबान मु० ८ जुलाई ७ ता. ३१
म० २३।१७ उ० ५१।४२ या०
म० ।।।।ऽ रो० ।ऽ॥ दि० ल० ६ चं० दा०
पश्चिमास्तं शनिः ७।४६ पुष्य १ वि० शनिः १८।१ उफा० †
म० ४६।४ उ० भृ० १ राहुः ज्ये० ३ केतुश्च ७।७ पुन० रविः ५६।३=
म० १६ ५६ या श्ले० बुधः ७।१८
मघा० सिंहे च भृगुः ४५ २४ स्वा० ऽश० ।।।।।।। ल० वि०
स्वा० ऽश० ।।।ऽ नृ० ।।।। ल० ६ शु० दा० वा गोधू०,
म० २६।५६ उ० देवशयनी ११ व्र० स्मा० (चातुर्मास्य व्रत §
म० २।१५ या० वैष्णवानां नि० ११ व्र० अनु० ।।।।ऽ चौ० ।।।। ॥
प्रदोष व्र० [§ नियमाद्यारम्भश्च)
[॥ दि० ल० ६ भृ० दा० गोधू०
म० १६।४३ उ० ४८।४७ या० वायुपरीक्षा छत्रारोपणम् सत्य व्र०
श्री गुरु व्यासयोः पूजा सब्बरात

आषाढ़ शु० ८ संदृष्टम् ०।० दिनगया: ३४०२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	५	३	३	१	७
२०	१६	१६	२५	२=	३	२६	२६
०	७	३२	६	८	३०	३७	३७
१६	२२	५०	३८	३=	४६	१०	१०
५६	३४	५७	३	६८	७	३	३
५०	३०	४७	१०	०	३४	११	११
क्रान्तिवृत्तं	मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ	उ.	अ	अ	अ.
न १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्ले. ४	[illegible]	मृ. १	ज्ये ३

इस पक्ष में नेता लोगों का उत्साह बढ़े, भारत के शासन सत्र में कुछ अधिकार वृद्धि हो। आने जाने की सुविधा अच्छी रहेगी, लाहा सुवर्ण चांदी में कुछ मन्दा होगा, सरसों अलसी मंदी, गेहूं में घटाबढ़ी अंत में तेज। रुई पत्तादि में १०।१५ तेज बाद मंदा घटाबढ़ी ति० ५ से १४ तक वर्षा योग है।

शकुनविचारः—आषाढ़ सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज। हल फाड़ ईंधन करो बैठा खावो बीज। आषाढ़ी १५ दिने जो वें सुरराय। एक मास तक अन्नकी निश्चय तेजी खाय

आषाढ़ शु० १५ रक्षाविद्दम् ०।० दिनगया: ३४१०

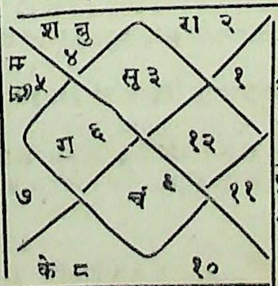

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	५	५	३	१	७
२७	२०	२२	२५	७	४	२६	२६
३५	५०	११	४१	१८	३१	११	११
१४	५५	४६	१७	१०	५५	४५	४७
५८	३४	२६	३	६७	७	३	३
५४	५०	०	३४	३०	५३	११	११
क्रान्तिवृत्तं	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पु. ३	[illegible]	श्ले. २	[illegible]	म. ३	[illegible]	मृ. १	ज्ये ३

चातुर्मास्य व्रत के आरम्भ करते समय "इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरु मेऽच्युत। इदं व्रतं मया देव गृहीतं पुरस्तव। गृहीतेऽस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि मे भवेत्। तदा भवतु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनार्दन!" इस मन्त्र से प्रार्थना पूर्वक संकल्प कर चातुर्मास में निम्बू गलगल राजमाष मूली कद्दू गन्ना। यह वस्तुएं छोड़ देवे। आषाढ़ी पौर्णिमा को सूर्यास्त के समय यदि पूर्व की वायु चले तो सुभिक्ष हो, अग्निकोण की चले तो अग्निभय अल्पवृष्टि और महर्घता, दक्षिण की चले प्रजा पीड़ा महर्घता स्वल्पवृष्टि नैऋत्य कोण की चले तो महादुर्भिक्ष हो, पश्चिम और वायव्यकोण की चले तो मामूली समय हो उत्तर या ईशानकोण की चले तो सुभिक्ष हो।

सँम्वत् २००३ शकः १८६८ श्रावण कृष्ण पक्षः ८										हि.	अ.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः	(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायणम् उत्तरगोलः वर्षर्तुः
दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.				सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले	श्रावण कृष्ण ३० यूरेनस १।२७।१५।१०, नेपच्यून ५।१३।१८।३०
३४।३०	१	चं	२३।४	उ	१८।५४	त्रि	३८।४२	कौ	२३।४	१२	१५	१५	मकरे	५।३७	७।२५	२।२८।३२।११	
३४।२९	२	मं	२४।३४	श्र	२२।७	प्री	३७।१३	ग	२४।३४	१	१६	१६	कु. ५३।५	५।३८	७।२५	२।२९।२९।१०	म. ५४।३८ उ. सं. कर्केऽर्कः ३२।६ मु. ३० पुण्य २.६ घ.
.३४।२७	३	बु	२५।४२	ध	२४।४	आ	३४।४८	वि	२५।४२	२	१७	१७	कुम्भे	५।३८	७।२५	३।० ।२६।७	म २५।४२ या. श्रीगणेश ४ व्र.
३४।२६	४	गु	२३।३५	श	२५।४५	सौ	३१।१०	बा	२३।३५	३	१८	१८	कुम्भे	५।३८	७।२५	३।१ ।२२।४१	वक्रीज्ञः ३४।१४
३४।२५	५	शु	२१।१५	पू	२५।१६	शो	२६।४३	तै	२१।१५	४	१९	१९	मी. ९।२३	५।३९	७।२४	३।२ ।१९।४९	पू. फा. शुक्रः. १०।५६
३४।२२	६	श	१९।५१	उ	२२।४२	अ	२१।२३	व	१७।५१	५	२०	२०	मीने	५।३९	७।२४	३।३ ।१६।४१	म. १७।५१ उ. ४५।४२ या. पुष्येऽर्कः ३।१८ रे. ऽ चं. ।।।ऽ नृ.।।। ❀
३४।२१	७	र	१६।३३	रे	२०।२०	सु	१५।२३	ब	१३।३३	६	२१	२१	मे.२०।२०	५।४०	७।२३	३।४ ।१३।४८	रे. ऽचं. ।।।ऽ नृ. ।।। ल. ६ शु.दा. [❀ल. १,५अंश ३. चं. गु.बा.दा. ३
३४।१९	८	चं	८।२७	अ	१७।१०	धृ	८।४३	कौ	८।२७	७	२२	२२	मेषे	५।४०	७।२३	३।५ ।१०।५४	
३४।१७	९	मं	२।५०	भ	१३।३०	शू	[illegible]	ग	२।५०	८	२३	२३	वृ२७।३७	५।४१	७।२२	३।६ ।७ ।५७	म. २९।५० उ. ५६।४९ या. उ. फा. भौमः ४४।९ सा. सिंहेभानुः ८।३
अवम्	१०	मं	५६।४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०	
३४।१५	११	बु	५०।३७	कृ	६।५७	वृ	४६।३०	व	२३।४३	९	२४	२४	वृषे	५।४१	७।२२	३।७ ।४ ।५६	चि. २ च. गुरुः ५७।५४ पश्चिमास्तं ज्ञः ४३।९ कामिका ११ व्र. स्मा. रो. †
३४।११	१२	गु	४४।२३	रो	५।२५	ध्रु	३८।५१	कौ	१७।३०	१०	२५	२५	मि.३३।१९	५।४२	७।२१	३।८ ।१ ।५०	वैष्णा. निम्बा. ११ व्र. [† ।।।ऽ रा.५५ उ.।।। दि.ल.६ शु.दा..१गु.दा.बा.३
।७	१३	शु	३८।२६	मृ	५७।३८	व्या	३१।१९	ग	११।२४	११	२६	२६	मिथुने	५।४२	७।११	३।८ ।५८।५६	म. ३८।२६ उ. प्रदोष व्र.
३४।३	१४	श	३३।५४	पुन	३३।५४	ह	२४।७	वि	६।१०	१२	२७	२७	क. ३९।४४	५।४३	७।२०	३।९ ।५६।७	म ६।१० या.
३४।०	३०	र	२७।५४	पु	५१।१३	व	१७।२४	न	२७।५४	१३	२८	२८	कर्के	५।४३	७।१९	३।१०।५३।३	हरियाली ३०

श्रावण कृष्ण ८ चन्द्रेष्टम् ०।० दिनगण: ३४१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	५	४	३	१	७
५	२५	२३	२६	१६	५	२५	२५
१०	३९	१९	२१	२९	२४	४६	४६
५४	१४	३	११	२	०	२	२०
५६	३५	१०	५	७	८	३	३
५८	०	३८	२	५	०	११	११
क्रांतिपत्ती	मा.	व.	मा	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.	अ
पु. १	पू.फा. ४	श्ले. ३	म. ४	पू.फा. ४	उ.फा. ४	मृ. १	ज्ये ३

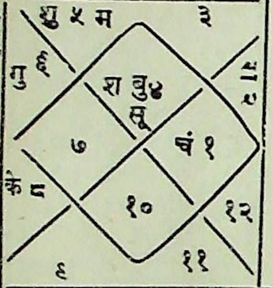

इस पक्ष में गुड़ खण्ड घृत, तैल तेज, प्रजा में कुछ रोग कष्ट हो। कर्क मकर को संक्रान्ति एक वार की है इसलिये आगे दुर्भिक्ष या किसी महाराजा का मृत्यु हो. ति. ११ को रूई में १०।२० मंदे. चांदी में २) या ३) की तेजी आकर फिर मंदा हो, कृषकों और शूद्रों को कष्ट अनाज के भाव में साधारण मंदा हो सूर्य से आगे मंगल है सो वर्षा में रुकावट या न्यूनाधिक रूप में होगी। ति. ३ से ७ तक ११ से १३ तक वर्षा योग है। श. वि. श्रावण पहली पञ्चमी वर्षे करे निहाल। पवन चले तो अति बुरी पड़े हलाहल काल। श्रावण बदी एकादशी जो नभ वर्षा होय। अच्छा सँवत् होयगा संशय करो न कोय॥

श्रावण कृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगण: ३४२४

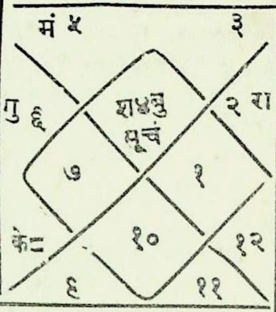

सू	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के.
३	४	३	५	४	३	१	७
१०	२९	२०	२७	२३	६	२५	२५
१२	१८	५०	५	१८	१६	२७	२७
३	२२	२८	७	३८	१९	१६	१६
५७	३६	३६	६	६०	७	३	३
४	१५	३९	४५	१५	४३	११	११
क्रांतिपत्ती	मा.	व.	मा	मा.	मा.	व.	व
	उ	अ	उ	उ.	अ	अ	अ.
पु. ३	उ.फा. १	श्ले. २	म. २	पू.फा. ३	उ.फा. १	मृ.	ज्ये ३

श्रावण में प्रति सोमवार को यदि समर्थ हो तो निराहार व्रत रखें नहीं तो रात्रि को भोजन कर लेवें। शिव तथा पार्वती की प्रतिमा बना कर 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का जप करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है. और अपुत्र को पुत्र, निर्धन को धन, मूर्ख को विद्या प्राप्त होती है, घी, दूध, घड़ा, तिल, गौ, फल देने से भगवान् प्रसन्न होते हैं,

सिंह और कर्क के सूर्य में सभी नदियाँ रजस्वला होती हैं अतः उनमें स्नान नहीं करना चाहिये। परन्तु उपाकर्म प्रेतस्नान और ग्रहण में स्नान करने का दोष नहीं होता। कृष्णा, गोदावरी, भीमरथी, गंगा, वेणिका. यमुना, सरस्वती नदियाँ रजस्वला नहीं होतीं॥

संवत् २००३ शाकः १८६८ श्रावण क्रान्तः ६											हिं	अं	मु	चन्द्र	सू.उ	सू.अ	सूर्यस्पष्टः
दि. मा	ति.	वा	घ. प	न.	घ. प	यो	घ. प	क.	घ. प				सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	ध्रुवकाले
३३।५७	१	च	२३।४४	श्ले	४६।२१	सि	११।१६	व	२३।४४	१४	२६	२६	सि. ४६।२१	५।४४	७।१६	३।११।५०।१६
३३।५३	२	मं	२०।३८	म	४८।७६	[illegible]	५।५६	कौ	२०।३८	१५	३०	१	सिंहे	५।४५	७।१८	३।१२।४७।२८
३३।५०	३	बु	१८।२०	पू	४३।४४	व	१ २१ / ५६ ४८	ग	१८।२८	१६	३१	२	सिंहे	५।४५	७।१७	३।१३।४४।३७
३३।४६	४	गु	१७।२२	उ	४६।१३	प	५५।१२	वि	१७।२२	१७	१	३	कं ३।५१	५।४६	७।१७	३।१४।४१।४५
३३।४३	५	शु	१७।४१	ह	४२।५६	सि	५३।३८	बा	१७।४१	१८	२	४	कन्यायाम्	५।४७	७।१६	३।१५।४८।५६
३३।४०	६	श	१६।२३	चि	४६।५५	सा	५३। ०	तै	१६।२३	१६	३	५	तु २४।५६	५।४८	७।१५	३।१६।३६।१२
३३।३६	७	र	२२। ७	स्वा	६०। ०	शु	५३।१६	व	२२। ७	२०	४	६	तुलायाम्	५।४६	७।१४	३।१७।३३।२८
३३।३३	८	चं	२५।५८	स्वा	६।५६	शु	५४।१६	व	२५।५८	२१	५	७	वृ.५०।२२	५।४६	७।१३	३।१८।३०।३१
३३।३०	९	मं	३०।३४	वि	७।५०	ब्र	५५।४०	कौ	३०।३४	२२	६	८	वृश्चिके	५।५०	७।१३	३।१६।२७।५२
३३।२७	१०	बु	३५।२७	अ	१४।१३	ऐ	५७।१८	तै	३। ५	२३	७	६	वृश्चिके	५।५१	७।१२	३।२०।२५।१६
३३।२३	११	गु	४०।३७	ज्ये	२०।४५	वै	१८।४८	व	८। ७	२४	८	१०	ध २०।२५	५।५१	७।११	३।२१।२२।३७
३३।१६	१२	शु	४५।१२	मू	२०। ०	वि	४६।५७	व	१२।५४	२५	६	११	धनुषि	५।५१	७।१०	३।२२।१६।५८
३३।१५	१३	श	४६। ३	पू	३२।३१	प्री	६०। ०	कौ	१७। ०	२६	१०	१२	म. ४८।४०	५।५२	७। ६	३।२३।१७।२४
३३।१२	१४	र	५१।४६	उ	३७। ७	आ	० २१ / ५६ ५४	ग	२०।२३	२७	११	१३	मकरे	५।५३	७। ८	३।२४।१४।४६
३३। ८	१५	चं	५३।२२	श्र	४०।३७	सौ	५८।३७	वि	२२।३४	२८	१२	१४	मकरे	५।५४	७। ७	३।२५।१२। ६

(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः वर्षर्तुः

श्राव. शु० १५—यूरेनस. १।२७।२३।४४, नेपच्यून ५।१३ ४०।४६

कन्यायां भौमः ८।५४ चन्द्रदर्शनम् नक्तव्रतारम्भः
रमजान मु० ६ रोजा शुरू म०ऽ । ऽनृ० ऽ॥ दि० ल० ६
म० ४७ ५१ उ० पुष्ये २ शनिः ४ ६ उ० फा० भृगुः १४।२८
म० १७ २२ या० अगस्त ८ ता० ३१ ह० ऽ॥ऽ चौ० ॥। ल० §
कन्या० भृगुः ५३।४२ वक्रग ४ पुष्ये बुधः ३८।४ नाग ५
श्ले० ऽर्कः ३।५६ [§ ३ आव० ज्ञः दानात्
म० २।७ उ० ५४।३ या० श्री गो० तुलसी जयन्ती स्वा० *
श्री दुर्गा ८ मेला श्री नयनादेवी व चिन्तपूर्णी
[* ऽश० ॥॥॥ ल० ३ अंश १७ उ०
[* नृ० ऽ॥ ल० ३ चं दा०
म० ८।७ उ० ४०।३७ या० पवित्रा ११ व्र० सर्वे मू० ऽगु० ऽ॥ऽ॥ऽ *
पूर्वोदयं शनिः ३२।४६ विष्णोः पवित्रारोपणम्
प्रदोष व्र०
म० ५१।४४ पूर्वोदयं ज्ञः २४।२१
म० २२।३४ या० हस्ते भृगुः ७।४५ ऋषितर्पणम् , रक्षाबन्धनम् †
[† रकखड़ी महोत्तम

श्राव. शु० ८ चन्द्रेष्टम ०।० दिनगणः ३४२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	[illegible]	३	५	४	३	१	७
१८	४	१४	२८	२	७	२५	२५
२०	३	५७	५	१६	२२	२	२
३१	६	२४	४६	५१	१०	५१	५१
५७	३७	०२	७	६५	७	३	३
१५	१२	३७	८	०	१३	११	११
श्रौसपाती	मा	व.	मा	मा.	मा	व.	व
	उ	अ	उ.	उ.	अ	अ.	अ
श्ले. १	उफा.	उफा.	[illegible]	उफा.	उफा.	मृ. १	ज्ये ३

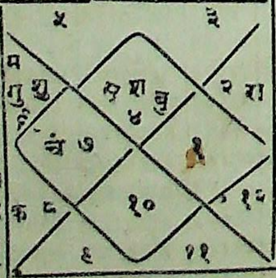

इस पक्ष में ति० ५ से पहिले रुई तेज, बाद मन्दी रहेगा अफीम, रेशमी वस्त्र और सब प्रकार की लाल वस्तु. लाल रंग तेज हों, रुई में १५.२० चाँदी में १) या २ तेजी होगी। ति० ६ से बाद कई प्रान्तों में फसल को हानि अनाज में तेजी का रुख हो, विशेषकर चावल तेज हों। ति० १२ से चार दिन में रुई में १५।२० की घटा बढ़ी, अन्य सब व्यापारों में भी विशेष उथल पुथल होगी। यहां प्रतिपदा चन्द्रवारी है और चन्द्रदर्शन भी है एतदर्थ जल का रूखना प्रजापीड़ा कहीं छत्रभंग का सूचक है। ति० १ से ५ तक, १२ से १५ तक वर्षा उत्तम।

श्राव. शु० १५ चन्द्रेष्टम ०।० दिनगणः ३४३६

सू.	म	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
३	५	३	५	४	३	१	७
२५	८	१२	२६	६	८	२४	२४
१२	३६	५	४	५६	१५	२	३६
६	३३	७	४१	११	१६	३६	३६
५७	३७	१०	७	६२	७	३	३
२४	५०	१०	१२	४२	३४	११	११
श्रौसपाती	मा.	व	मा.	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ.	उ	उ.	अ.	अ
श्ले ३	उफा	उफा	[illegible]	उफा	पु २	श. १	ज्ये ३

शकुन विचारः—श्रावण शुक्ला पंचमी और छठ को जान। कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष विछान ॥
श्रावण शुक्ला पंचदश वसंत मेघ अपार। यह लक्षण हैं अति भले सुख पावे संसार ॥

श्रावण शुक्ला पञ्चमी नागपञ्चमी होती है, यह परविद्धा ही ग्रहण करनी चाहिये, अर्थात् षष्ठी से युक्त का ही ग्रहण होता है। इस दिन दर्वाजे के दोनों तरफ गोबर के सर्प बनाकर घी, दूध, जल, खिल्लां, धूप. दही और दूर्वा से पूजा करें और ब्राह्मण को पुष्प पहारादि से सन्तुष्ट करें ऐसा करने में संशय नहीं रहता। श्रावणी और होली भद्रा में नहीं मनानी चाहिये, क्योंकि ऐसा करने से राजा का अनिष्ट और ग्राम में अग्निभय होता है।

सँम्वत् २००३ शकः १८६८ भाद्रकृष्णपक्षः १०												हि.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः
दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प	भाद्र.	अग.	सप्ट.	सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
३३।५	१	मं	५३।३७	घ	४२।५२	शो	५६।१६	बा	२३।२४	२६	१३	१५	कुं ११।२४	५।५४	७।७	३।२६।६ ।३६
३३ १	२	बु	५२।३७	श	४३।५०	अ	५२।५४	तै	२४। ७	३०	१४	१६	कुम्भे	५।५५	७।६	३।२७।६ ।५४
३२।५७	३	गु	५०।२४	पू	४३।३३	सु	४८।३३	व	२१।३५	३१	१५	१७	मी. २८।३६	५।५५	७।५	३।२८।४ ।२२
३२।५४	४	शु	४७।७	उ	४२।१५	धृ	४३।२४	व	१८।४५	१	१६	१८	मीने	५।५५	७।४	३।२६।१ ।५३
३२।५०	५	श	४२।५७	रे	४०।८	शू	३७।२८	कौ	१५। २	२	१७	१९	मे० ४०।८	५।५६	७।३	३।२९।५९।३८
३२।४६	६	र	३७।५४	अ	३७।३	गं	३०।५३	ग	१०।२७	३	१८	२०	मेषे	५।५७	७।२	४।० ।५७।१२
३२।४३	७	चं	३२।२०	भ	३३।५६	वृ	२३।४७	वि	५।७	४	१९	२१	वृ. ४८।६	५।५८	७।१	४।१ ।५४।४७
३२।३९	८	मं	२६।२३	कृ	२९।२७	ध्रु	१६।१७	कौ	२६।२३	५	२०	२२	वृषे	५।५८	६।०	४।२ ।५२।२६
३२।३५	९	बु	२०।११	रो	२५।१६	व्या	८।३८	ग	२०।११	६	२१	२३	मि. ५३।१२	५।५८	६।५९	४।३ ।५०। ६
३२।३२	१०	गु	१४।१	मृ	२१।७	ह	५३।५३	वि	१४। १	७	२२	२४	मिथुने	५।५९	६।५८	४।४ ।४७।३६
३२।२८	११	शु	८ ।५	आ	१७।९	सि	४६।५६	वा	८।५	८	२३	२५	क. ५९।२९	५।५९	६।५७	४।५ ।४५।२९
३२।२४	१२	श	२ ।३२	पुन	१३।३६	व्य	३९।४	तै	२।३२	९	२४	२६	कर्के	५।५९	६।५६	४।६ ।४३।१४
अवम	१३	श	५७।२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
३२।१८	१४	र	५३।२१	पु	१०।४२	व	३२।४६	वि	२५।२६	१०	२५	२७	कर्के	६। ०	६।५५	४।७ ।४०।५२
३२।१५	३०	चं	५०।६	श्ले	८ ।४१	प	२७। ९	च	२१।४३	११	२६	२८	सिं० ८।४१	६। १	६।५४	४।८ ।३८।४३

(सन् १९४६ ई०) दाक्षिणायनम् उत्तरगोलः वर्षर्तुः

भाद्र कृष्णा ३० यूरेनस १।२८।२०।२१, नेपच्यून ५।१४।९।४७

हस्ते भौमः १८।१५
भ. २१।३५ उ. ५०।२४ या. मार्गीज्ञः ४४।७ कज्जली ३
श्री गणेश ४ व्र. लङ्कोदयकालिक सिंहसंक्रान्तिः भाद्रपदप्रविष्टा १
स्पष्टार्कोदयमानेन सं.म. सिंहेऽर्कः ०।२५ मु. ३०पुण्यं १९।२५या.❀
भ. ३७।५४ उ. [†गृहस्थाश्रमीणाम्
भ. ५।७ या. चन्द्रोदयो रात्रौ ११।२२ प्रा. टा. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी†
चन्द्रोदयो रात्रौ १२।४ प्रा. टा. जन्माष्टमी वैष्णवानाम् रो. ।।।।।ऽ२।।§
भ. ४७।१३ उ. श्ले. बुधः ४७।० गुग्गा ९ [§ ल. ३ चं. दा.
भ. १४।१ या.
सा. कन्या. भानुः ३३।५ अजा ११ व्र. सर्वे.
भ. ५७।३१ उ: चि. भृगुः २६।५८ प्रदोष व्र. गोवत्स १२
[❀चि. ३ तुले गुरुः ४८।५ चन्दन ६ व्र. चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या
भ. २५।२६ या पुष्ये ३ शनिः ४६।०
सोमवती ३० कुशोत्पाटिनी ३० (ॐ हुंफट्मंत्रेण)

भाद्र कृष्णा ८ भौमेष्टम् ०।० दिनगणः ३४४७

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	३	६	[illegible]	३	१	७
२	१३	१४	०	१८	६	२४	२४
५२	३६	५६	१७	३७	१४	१४	१४
२६	६	७	३५	४०	१८	११	११
५७	३८	३८	८	२२	७	३	३
३०	३७	३०	१८	१	२०	११	११
शीघ्रगती	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	ह.	पु.	श्री	ह	पु.	मृ.	ज्ये
१	२	४	३	३	२	१	३

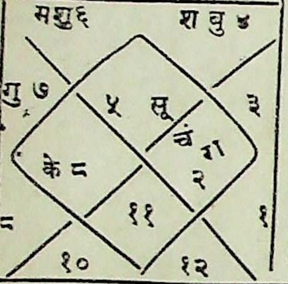

इस पक्ष में कहीं वर्षा की कमी वा कहीं अधिकता से कई प्रान्तों में फसल को हानि पहुंचे। घृत, लवण, मूंग, उड़द, गेहूं, चना का भाव तेज हो। ति. १२ से अनाज के भाव में मन्दा। १४ से रुई १५।२० तेज। इस अमावस को चन्द्रवार का होना आगे वर्षा श्रेष्ठ प्रजा में सुख व धान्य की उत्पत्ति का सूचक है। यहां बंगाल विहार में जल से हानि होगी। ति. २।३।४। ५।९।१० को वर्षा के योग हैं। श. वि—भादव की दोयज दिना जो ना दीखे चन्द। धान्यसमृद्धिः पशु बढ़ प्रजा में हो आनन्द। ति. १४ को वर्षा हो तो प्रजा में रोग भय हो।

भाद्र कृष्णा ३० चन्द्रेष्टम् ०।० दिनगणः ३४५३

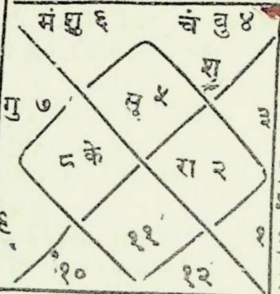

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	३	६	५	३	१	७
८	१७	२२	१	२४	१०	२३	२३
३८	३१	८	१६	५५	१	१५	५४
४३	३८	४३	१५	५६	५२	७	७
५७	३६	८६	६	६१	७	३	३
५७	०	५६	३८	५४	०	११	११
शीघ्रगती	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व
	उ	उ	उ.	उ.	उ	अ.	अ
म.	ह.	श्ले	श्री	श्री	प्र	मृ.	ज्ये
३	-	२	३	१	३	१	३

भाद्रपद में दही छोड़ना चाहिये। इस अष्टमी को कृष्ण की पूजा और व्रत करने से सभी पाप दूर हो जाते हैं। व्रत न रखने से दोष लगता है। लिखा भी है कि यदि कोई भी स्त्री या पुरुष कृष्णाष्टमी का व्रत न करे तो वह जंगल में व्याल (हिंसक जन्तु) होता है। आधी रात के समय अष्टमी रोहणी से युक्त जब हो वही मुख्यकाल माना गया है। क्योंकि भगवान् ने उसी समय अवतार लिया था। स्मार्त्त मत में तो हमेशा इत्यादि में कृष्णाष्टमी और कृ० १४ पूर्वविद्धा ही मानी जाती है, परविद्धा कभी नहीं। चन्द्रमा के उदय होने पर चन्द्र को "ॐ क्षीरोदार्णवसम्भूत आत्रिगोत्रसमुद्भव ! गृहाणार्घ्यं शशांकेदं रोहिणीसहितो मम ॥" इस मन्त्र से अर्घ देवें।

संवत् २००३ शाकः १८६८ भाद्र० शुक्लपक्षः ११										हिं.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः
दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	भा.	सितं.	शवा.	सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
३२।१०	१	सं	४७।५२	म	७।३१	शि	२२।१३	कि	१८।५६	१२	२७	२६	सिंहे	६।१	६।५३	४।९ ।३६।४१
३२।५	२	बु	४६।४५	पू	७।२६	सि	१८।३०	बा	१७।१८	१३	२८	३०	क. २३।१	६।२	६।५२	४।१०।३४।२७
३२।०	३	गु	४७।१३	उ	९।३६	सा	१५।३८	तै	१६।५६	१४	२९	१	कन्यायाम्	६।३	६।५०	४।११।३२।२९
३१।५५	४	शु	४८।५२	ह	११।२	शु	१३।४५	व	१८।२	१५	३०	२	तु. ४२।५२	६।४	६।४९	४।१२।३०।१६
३१।५१	५	श	५१।३५	चि	१४।४३	शु	१२।५४	व	२०।१३	१६	३१	३	तुलायाम्	६।४	६।४७	४।१३।२८।२७
३१।४६	६	र	५५।२९	स्वा	१९।३१	ब्र	१२।५९	कौ	२३।३२	१७	१	४	तुलायाम्	६।५	६।४६	४।१४।२६।१९
३१।४१	७	चं	६०।०	वि	२५।११	ऐं	१३।४४	त	२७।४६	१८	२	५	वृ. ८।४६	६।६	६।४५	४।१५।२४।२७
३१।३६	७	मं	०।४	अ	३१।२७	वै	१४।५८	व	०।४	१९	३	६	वृश्चिके	६।६	६।४४	४।१६।२२।१५
३१।३१	८	बु	५।६	ज्ये	३७।५७	वि	१६।३२	व	५।६	२०	४	७	ध. ३७।५७	६।७	६।४३	४।१७।२०।२९
३१।२६	९	गु	१०।१३	मू	४४।१८	प्री	१८।२	कौ	१०।१३	२१	५	८	धनुषि	६।८	६।४२	४।१८।१८।३७
३१।२२	१०	शु	१४।५०	पूष	५०।३	आ	१९।८	ग	१४।५०	२२	६	९	धनुषि	६।८	६।४०	४।१९।१६।४६
३१।१७	११	श	१८।४६	उष	५४।५५	सौ	१९।४३	वि	१८।४६	२३	७	१०	म. ९।१६	६।८	६।३९	४।२०।१५।१
३१।१२	१२	र	२१।३९	श्र	५८।३९	शो	१९।२५	बा	२१।३९	२४	८	११	मकरे	६।९	६।३८	४।२१।१३।३९
३१।७	१३	चं	२३।२२	ध	६०।०	अ	१८।२०	तै	२३।२२	२५	९	१२	कुं २९।५४	६।९	६।३६	४।२२।११।२१
३१।२	१४	मं	२३।४६	ध	१।१०	सु	१६।८	व	२३।४६	२६	१०	१३	कुम्भे	६।१०	६।३५	४।२३।९ ।४१
३०।५८	१५	बु	२२।५३	श	०।२४	धृ	१२।५७	व	२२।५३	२७	११	१४	मी. ४७।२९	६।११	६।३४	४।२४।८ ।२

(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः शरदृतुः

भाद्र० शु० १५—यूरे. ३।२८।४०।५१, नैपच्यून ५।१४।३७।३२

[† सिंहे ७ बुधः ४५।१२ पू.फा.ऽर्कः ५१।२० पत्थर (कलङ्क) ४ §
चन्द्रदर्शनम् मेला बाबा गोसाईयाणां कुराली उ. फा. ।।।।।।।।।ल. *
शवाल मु. १० ईद हरितालिका ३ ह. [* ३ ज्ञः दानात्
भ. १८।२ उ. ४८।५२ या. रो. ४ राहु ज्ये. २ केतुश्च ४४।५६ मघा. †
तुलायां भृगुः ५५।३० पूर्वास्तं ज्ञः २९।१५ ऋषि ५ व्र. स्वा. ऽमं.श. ||
सितंबर ९ ता. ३० [|| ।।।।ऽ.नृ. ३२ या. ।।।। दि.ल. ६ वा. ३
अनु. ।ऽ।।।।ऽ।।।ल. ३ अत्या.चं.दा. [§चन्द्रास्तः ६।१५ रात्रौ प्रा.टा.
भ. ०।४ उ. ३२।३५ या. चि० भौमः ५८।५१
अगस्त्योदयः ३।२० उ. मू.ऽगु.।।।ऽरा.।।।।ल. ३ चं.दा. दधीचि जयन्ती
श्रीचन्द्र ९ (श्रीउदासीनसम्प्रदाय का महोत्सव) मू.ऽगु.।।।ऽरा. ¶
भ. ४६।४८ उ.स्वा. भृगुः ३०।२ चि. ४ गुरुः ५४।० पू.फा.बुधः५३।४२
भ. १८।४६ या. पद्मा ११ व्र. सर्वे. [¶ ।।।।।दि. ल. ७
वामन १२ मेला अम्बाला व पटियाला प्रदोष व्र.

भ. २३।४६ उ. ५३।२० या. अनन्त १४ व्र. मेला छपार, वा ÷
प्रौष्ठपदीश्राद्धम [÷ बाबा सोढल जालंधर

भाद्र० शु० ८ इष्टम् ०।० दिनगणः ३५६२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	६	६	३	१	७
१७	२३	७	२	४	१०	२३	२३
२०	२०	४६	४०	७	५६	२६	२६
२९	४६	४६	५४	१५	४३	३२	३२
५८	३१	[illegible]	१०	६०	६	३	३
१०	७	०	०	३८	५०	११	११
मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
उत्तरा	उ.	अ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
पू.फा. २	[illegible]	म. ३	[illegible]	[illegible]	पु. २	मृ १	ज्ये ३

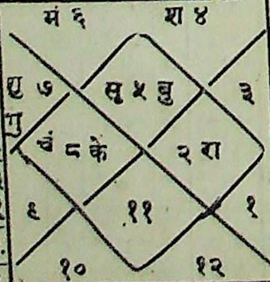

इस पक्ष म घृत तेज अनाज के भावों मे तेजी अन्त में रुख मन्दा। ति. ५ तक रूई में अच्छी तेजी आकर बाद मन्दी चलेगी। बिनौला और चान्दी के जो व्यापारी यहां तेजी में रहेंगे उन्हें लाभ रहेगा। कहीं देशान्तर से गृहयुद्ध की सनसनी पूर्ण खबरें भी सुनने में आवेंगी। प्रजा में फोड़ा फुन्सी से कष्ट। शक्कर खंड कुछ तेज, अमेरिका में भय। ति. २ से ४ तक १०।१३ तक वर्षा के योग हैं। श०वि०—भादों सुदी जो पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल चन्दा ऊगसी जल्दो बेचो नाज ॥ जो चन्दा निर्मल उगे ना घन बिजली होय। गेहूं जौ संचय करो लाभ सवाया होय ॥

भाद्र० शु० १५ इष्टम् ०।० दिनगणः ३५६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	६	६	३	१	७
२४	२७	२१	४	१०	११	२३	२३
८	५६	१३	९	५८	४३	४	४
२	५३	१६	४८	५०	३२	१८	१८
५८	४०	[illegible]	११	४५	६	३	३
२२	०	३२	५	३५	२१	११	११
मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व
उत्तरा	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु. ३	रो. ४	ज्ये २

भाद्रपद शुक्ला ४ को चन्द्रदर्शन करने से झूठा कलङ्क लगता है। अतः इस दिन चन्द्रदर्शन न करे और यदि भूल-चूक से हो जाय तो "ॐ सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारकमारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥" इस मन्त्र को पूर्व अथवा उत्तर की तरफ मुँह करके जपने से दोष का परिहार हो जाता है। वामन द्वादशी मध्याह्न में स्नान कर यथालब्धोपचार से श्रीवामन भगवान् की पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करे। "ब्रह्माण्डमुदरे यस्य महद्भूतैरधिष्ठितम्। मायावी वामनः श्रीशो स मां पातु जगत्पतिः ॥" अनन्तचतुर्दशी व्रत में मध्याह्नव्यापिनी चतुर्दशी का ग्रहण है। विशेषकर त्रयोदशीविद्धा मध्याह्नव्यापिनी चतुर्दशी उत्तम मानी गई है ॥

संवत् २००३ शकः १८६८ आश्वि. कृ०पक्षः १२

दि. मा	ति	वा	घ. प	न	घ प	यो.	घ. प.	क.	घ प	इं. प्रा.म.	अ. मि.	मु. शा.	चन्द्र संस्कारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
३०।५३	१	गु	२०।४७	।	२।२७	शू	८।४७	कौ	२०।४७	१८	१२	१०	मीने	६।११	६।३२	४।२५। ६।२१
३०।४८	२	शु	१७।४०	ह	९।१२ १२।१८	ग	३।४८ ५७।५५	ग	१७।४०	२६	१३	१६	मे. ५६।१६	६।१२	६।३१	४।२६। ४।४६
३०।४३	३	श	१३।३०	अ	५६।२६	ध्रु	५०।२२	वि	१३।३५	२	१४	१७	मेषे	६।१३	६।३०	४।२७। ३।२०
३०।३८	४	र	८।३६	म	५२।५८	व्या	४४।१७	बा	८।३६	३	१५	१८	मेषे	६।१३	६।२८	४।२८। १।५७
३०।३३	५	चं	३।६	कृ	४६।२	ह	२६।४८	तै	३।६	२२	१६	१९	वृ ६।५६	६।१४	६।२७	४।२९। ०।३०
अवम	६	चं	५७।२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
३०।२६	७	मं	५१।१०	रो	४४।५४	व	२६।५	वि	२४।१२	१	१७	२०	वृषे	६।१४	६।२६	४।२९।५८।५६
३०।२४	८	बु	४५।३	मृ	४०।२६	सि	२१।१५	बा	१८।७	२	१८	२१	मि. १२।४५	६।१४	६।२४	५। ०।५७।३२
३०।१९	९	गु	३६।९	आ	३८।३३	व्य	१३।३	तै	१२।६	३	१९	२२	मिथुने	६।१४	६।२३	५। १।५६।१३
३०।१४	१०	शु	३३।३६	पुन	३२।४३	व	६।५ ५६।७	व	६।२८	४	२०	२३	क. १८।५१	६।१५	६।२२	५। २।५४।५५
३०।९	११	श	२८।३५	पु	२६।५२	शि	५२।३०	।	१।६	५	२१	२४	कर्के	६।१६	६।२०	५। ३।५३।३८
३०।४	१२	र	२४।२	श्ले	२०।३६	सि	४६।३६	तै	२४।२६	६	२२	२५	सिं २७।३६	६।१६	६।१९	५। ४।५२।४८
३०।०	१३	चं	२१।१४	म	२६।११	सा	४१।५	व	२१।१४	७	२३	२६	सिंहे	६।१७	६।१८	५। ५।५१।१०
२९।५५	१४	मं	१९।४	पू	२०।५१	शु	३७।२५	श	१९।४	८	२४	२७	क. ४१।४	६।१८	६।१६	५। ६।४९।५८
२९।५०	३०	बु	१८।८	उ	२९।४३	५	३५।१४	ना	१८।८	९	२५	२८	कन्यायाम	६।१९	६।१५	५। ७।४८।४६

(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः शरदृतुः

आश्वि. कृ० ३०—यूरेनस १।२८।४७।४२, नेपच्यून ५।१५।८ २५

महालया (पितृपक्षा) रम्भः
म. ४५।३७ उ. उ. फा. ऽर्कः ३७।८ वक्रा. बुधः ५७।५१
म १३।३४ या. श्रीगणेश ४ तुलायां भौमः ४।३०
कन्यायां बुधः ४६।२६ जन्मोत्सव श्री १०५ धर्ममार्तण्ड बघाटनरेशजी
म. ५७।१५ उ.

म. २४।१२ या. सं. कन्या. ऽर्कः १।७ मु. ४५ पुण्यं १७।७ या.

सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
म. ६।२२ उ. ३३।३६ या. विशा. भृगुः ५६।५३
हस्ते बुधः १६।४१ इन्दिरा ११ व. सर्वे.
प्रदोष व्र.
म. २१।१४ उ. ५०।६ या. स्वा. १ गुरुः ५०।० सा तुले. भानुः २४।५०
स्वा. भौम. १०।१५ शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम्
अज्ञातमृततिथीनां श्राद्धम् सर्वपितॄणां श्राद्धम विसर्जनं च

आश्विन कृ० ८ बुधेष्टम् ०।० दिनगणः ३४७६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	६	६	३	१	७
०	२	४	५	१७	१२	२२	२२
५७	३६	१७	२६	०७	०५	४२	४२
२२	०१	४	५८	२८	५३	३	३
५०	४०	[illegible]	११	५०	५	३	३
५८	८	३	५५	२०	५०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व.
	उ.	अ.	उ.	ल.	उ.	अ.	अ.
	चि ३	मू ३	चि ५	स्वा ४	तु ३	रो ५	ज्ये ५

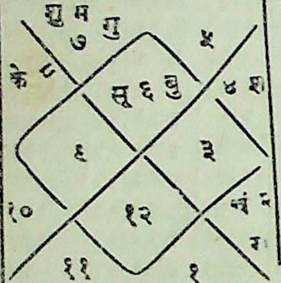

इस पक्ष म म. गु. एकत्र हो रहे हैं सो वर्षा उत्तम होकर सुभिक्ष हो। ति. ४ से पहले रुई जरोला तेज रहेगा बाद में मन्दा। यहां घी बेचना और धान्य संग्रह करने से आगे लाभ होवे। जौं, चना, गेहूं, अलसी, सूत, कपास, चांदी मन्दी हो ति. ८ से प्रजा म रोग अग्नि युद्ध आदि से भय हो और तिल तेल, गुड़, गेहूं, अलसी तेज हो। पूर्व उत्तर के देशों में कष्ट हो। ति. १ से ५ तक ६ से १३ तक खण्ड वृष्टि के योग हैं।
शकुन विचारः—दशमी और एकादशी और द्वादशी जान।
घन गर्जे बिजली खीचै गेहूँ तेज विज्ञान॥

आश्विन कृ० ३० बुधेष्टम ०।० दिनगणः ३४८३

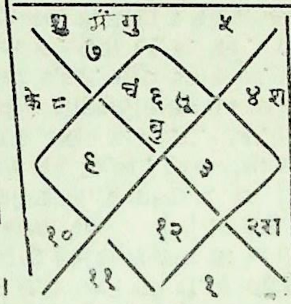

सू.	मं.	बु	गु.	शु	श.	रा.	के.
५	६	५	६	६	३	१	७
०	७	१६	६	२३	१३	२	२०
४८	१७	३३	५	२७	६	१९	१९
४६	२१	७	४३	३२	१२	३८	३८
५८	४०	[illegible]	१८	४८	५	३	३
४३	११	२५	०	४१	२०	११	११
[illegible]	मा	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	अ	उ	उ.	उ.	अ.	अ
	ह ८	ह	[illegible]	व.	पु	रो	ज्ये

आश्विन मे दूध वर्जित है। श्राद्ध समय निर्णय —एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न मे, वृद्धिनामित्तक प्रातःकाल में, दैविक पूर्वाह्ण में, और पार्वणश्राद्ध अपराह्न में करना चाहिए। दिनमान के पांच भाग करने पर पहिले भाग को प्रातः द्वितीय को सङ्गव, तीसरे को मध्याह्न, चौथे को अपराह्न और पांचवें को सायाह्न कहते हैं। जो व्यक्ति विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह परलोक में बड़ी भारी तृप्ति शुभ लोकों और यश को प्राप्त करता है। यदि किसी की तिथि याद न हो तो उसका श्राद्ध एकादशी या अमावस को करदे क्योंकि श्राद्ध न करने से उस वंश में न तो वीर पुरुष ही उत्पन्न होते हैं और न आरोग्यता तथा सुख मिलता है, न १०० वर्ष की आयु ही पूरी होती है; इसलिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए॥

संवत् २००३ शके १८६८ आश्वि शुक्लपक्षः १३ | (सन् १९४६ ई०) दक्षिणायन गोलौः शरदृतुः

ई. मा.	ति	वा.	घ. प	न	घ. प.	यो	घ. प	क	घ. प.	हिं. आश्वि.	अं. अक्तू.	मु. जिल्का.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
२९|४६	१	गु	१८|२८	ह	२८|५०	ब	३२|१२	व	१८|८	१०	२६	२९	कन्यायाम्	६|२०	६|१३	५|८|४७|४४
२९|४२	२	शु	२०|१०	चि	२२|१४	ऐं	३०|५०	कौ	२०|१०	११	२७	१	तु ०|३३	६|२१	६|१२	५|९|४८|३३
२९|३७	३	श	२२|५५	स्वा	३९|४७	व	३०|३४	ग	२२|५५	१२	२८	२	तुलायाम्	६|२१	६|११	५|१०|४९|२७
२९|३२	४	र	२६|५४	वि	४२|१७	व	३३|७	वि	२६|५४	१३	२९	३	वृ.२५|५४	६|२२	६|१०	५|११|४९|३५
२९|२८	५	चं	३०|३८	अ	४८|२५	प्री	३२|१	बा	३१|३८	१४	३०	४	वृश्चिके	६|२३	६|९	५|१२|४९|४१
२९|२३	६	मं	३०|४२	ज्ये	५४|५६	आ	३३|३९	कौ	४|७	१५	१	५	ध ५४|५६	६|२३	६|८	५|१३|४२|४४
२९|१९	७	बु	४१|५०	मू	६०|०	सौ	३५|१९	ग	९|१९	१६	२	६	धनुषि	६|२४	६|६	५|१४|४९|५२
२९|१५	८	गु	४९|३७	मू	१|२९	शो	३९|११	वि	१४|१३	१७	३	७	धनुषि	६|२४	६|५	५|१५|४०|५४
२९|१०	९	शु	५०|३७	पूषा	७|१७	अ	३९|५९	श	१८|३७	१८	४	८	म. २३|३४	६|२४	६|४	५|१६|४०|१६
२९|५	१०	श	५३|३३	उ	१२|२०	सु	३९|४३	तै	२२|५	१९	५	९	मकरे	६|२५	६|३	५|१७|३९|२६
२९|१	११	र	५५|२४	श्र	१९|२३	धृ	३५|५०	व	२४|१९	२०	६	१०	कुं. ४७|४८	६|२५	६|१	५|१८|३८|४५
२८|५७	१२	चं	५५|५५	ध	१९|१४	शू	३३|५७	व	२५|३९	२१	७	११	कुंभे	६|२६	६|०	५|१९|३८|१५
२८|५२	१३	मं	५५|८	श	२०|४९	ग	३०|५७	कौ	२५|३१	२२	८	१२	कुंभे	६|२७	६|०	५|२०|३७|२८
२८|४७	१४	बु	५३|७	पू	२०|३४	वृ	२६|५८	ग	२४|७	२३	९	१३	मी. ५|३९	६|२८	५|५९	५|२१|३६|४०
२८|४२	१५	गु	५०|५	उ	१९|२१	ध्रु	२२|२	वि	२१|३९	२४	१०	१४	मीने	६|२८	५|५७	५|२२|३६|१४

आश्वि. शु० १५—यूरेनस. १।२८।४४।१५, नेपच्यून ५।१५।३६।४४

चन्द्रदर्शनम्, शारदनवरात्रारम्भः, घटस्थापनं, मातामहश्राद्धम्
पुष्ये ४ शनिः ३५।१५ हस्तेऽर्कः १३।५२ जिल्काद मु. ११
म. ५४ ५५ व.
म. २६।५४ या. चि. बुधः ४।५४ अनु. ऽमं. ।।।।।ऽ।। ल० चि०
अनु ऽमं. ।।।ऽनृ १६ उ. ।ऽ।। दि. ल. ६
पश्चिमोदयं ज्ञः ७४।४४ अक्टूबर १० ता० ३१ [¶ १२ या चं. दा.
म. ५९।५० उ. सरस्वत्यावाहनम् मू. ।।।।ऽ चौ ।।।। ल ३ अं. ¶
म. १४ १३ या. वृश्चि. भृगुः ४१।५० तुलायां ज्ञः १४।३१ श्रीदुर्गा=मेला।
व षा. ।।।।ऽ।ो २०७ ऽ१७या ।।ल.चि. [| ज्वाला व मारादेवी सरस्वती पु.
विजया १० मेला दशहरा. बौद्ध जयन्ती सरस्वतीविसर्जनम् १०।२४ उ.
म. २४।२६ उ. ५५।२४ यां. पापाङ्कुशा ११ व्र. व्रता. व.
स्वा. बुधः ३३।२५ लिम्बा. ११ व्र.
अनु भृगुः ४६।३५ भौम प्रदोष व्र.
म. ५०।७ उ स्वा २ गुरु. ४५।१७ [+कार्तिक स्नानारम्भः आकाशदीपदान
म. २१।३६ या. चित्राय. मर्कः ४४।१५ शरत् १५ को जागरी १५ +

आश्वि. कृ० ८ गुरावष्टम् ०।० दिनगण्: ३४६९

सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा.	के
५	६	५	६	६	३	१	७
१५	२	२९	८	२९	१२	२१	२१
४०	४३	३६	३४	३१	४७	५४	५४
५५	४०	७९	२	१६	३२	२४	२४
५९	३०	९५	१३	७१	४	३	३
१०	२३	०	०	२	५०	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व	
उ	उ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.	
ह २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि. ३	[illegible]	रो. ४	ज्ये २

इस पक्ष म ति. ६ स गेहूं जौं चना सरसों गुड़ खड चांदा सोना तांबा तेज रहेगा लड़ाई झगड़े की वारदातें बहुत होंगी, भाद्रपद शुक्ल ६ के करीब, गेहूं आदि वस्तुओं के जो भाव थे यहाँ उससे ऊंटे भाव होंगे, वहां तेजी हुई होगी तो यहां मंदा होगा, मंदा हुआ होगा तो यहां खूब तेजी चलेगी। सूत कपड़े के भावों में खूब घटाबढ़ी चलेगी। ति. ५ से ७ तक रूई में १५ या २० तेज हो। भारत में व्यापारियों को कोई नई चिन्ता पैदा हो। तिथि ९ से १२ तक कहीं २ वर्षा बूंदाबांदी का योग है।

आश्वि. शु० १५ गुरावष्टम ०।० दिनगण: ३४६८

सू.	मं	बु.	गु	शु.	श	रा.	के.
५	६	६	६	७	३	१	७
२७	१७	१०	१०	३	१४	२१	२१
२९	३२	१९	३	५९	२०	२२	२२
१५	१	१७	१	४६	३	८	८
५९	४०	८६	१३	३	४	३	३
२४	५०	०	१५	३०	२०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	
उ	उ	उ	उ.	उ	अ	अ	
ह ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु	रो. ४	ज्ये २

शकुन विचार—साते आठे कार शुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब सशय मिट जाय ॥ १ ॥
आसोज मास में जानिए बादल श्वेतकार। वर्षा उसी दिन होयगी ऐसा योग विचार ॥ २ ॥

आश्विन शुक्ल १ को वैधृति और चित्रा के प्रथम पाद को छोड़कर कुम्भस्थापन करे। कन्या पूजन विधि—प्रत्येक दिन एक २ कन्या की पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रति दिन एक २ बढ़ावे, अथवा द्विगुणा या त्रिगुणित बढ़ाता जावे नियमों कन्याओं की पूजा करने से भूम और द्विगुणायन करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। एक वर्ष की कन्या का पूजन न करें। और भी विशेष नियम है कि सर्व कार्यों की सिद्धि के लिये ब्राह्मणी, युद्ध के लिये क्षत्रिया, धन के लिये वैश्या, सुख के लिये शूद्रा और कार्यसिद्धि के लिए अन्त्यज कन्या की विधिपूर्वक पूजा करे। कार्तिक मास में भगवान विष्णु के निमित्त सायङ्काल का तिल के तैल से आकाशदीपदान करने का बड़ा माहात्म्य है।

सम्वत् २००३ शकः १८६८ कार्तिककृष्णपक्षः १४ — (सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनगोलौ, शरदृतुः

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प	हि. कार्ति.	अ. अक्टू.	मु. त्रिका.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
२८।३७	१	शु	४६।५४	रे	१८।३३	व्या	१६।७	बा	१८। ४	२५	११	१५	म. १८।२३	६।२६	५।५६	५।२३।३५।३५
२८।३२	२	श	४१।१५	अ	१५।५३	ह	६।५१	तै	१३।३६	२६	१२	१६	मेषे	६।३०	५।५५	५।२४।३५।१३
२८।२८	३	र	३५।५०	भ	१२।३१	व	५५।२२	व	८।३२	२७	१३	१७	वृ. २६।३४	६।३०	५।५३	५।२५।३४।३६
२८।२३	४	चं	३०।३	कृ	८।४१	व्य	५७।३७	व	२।५६	२८	१४	१८	वृषे	६।३१	५।५२	५।२६।३४।२०
२८।१६	५	मं	२४।२	रो	४।२५	व	३६।४६	तै	२४। २	२९	१५	१९	मि. ३२।२३	६।३२	५।५१	५।२७।३३।५८
२८।१४	६	बु	१७।५८	मृ	५६।१६	प	३१।५६	व	१७।५८	३०	१६	२०	मिथुने	६।३३	५।५०	५।२८।३३।३६
२८।६	७	गु	१२।६	पुन	५२।३१	शि	२४।२२	व	१२। ६	१	१७	२१	क. ३८।२७	६।३३	५।४८	५।२९।३३।१५
२८।५	८	शु	६।४१	पु	४६।१८	सि	१७। ५	कौ	६।४१	२	१८	२२	कर्के	६।३४	५।४७	६। ०।३२।५५
२८।०	९	श	१।४६	श्ले	४१।५०	सा	१०।२०	ग	१।४६	३	१९	२३	सिं० ४६।५०	६।३५	५।४६	६। १।३२।४४
अवम्	१०	श	५७।४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
२७।५५	११	र	५४।३०	म	४५।१०	शु	५८।५३	व	२६। ६	४	२०	२४	सिंहे	६।३६	५।४५	६। २।३२।३५
२७।५०	१२	चं	५२।२५	पू	४४।३३	ब्र	५१।२१	कौ	२३।२७	५	२१	२५	कं ५६।४२	६।३७	५।४४	६। ३।३२।२१
२७।४५	१३	मं	५१।३४	उ	४५। ८	ऐं	५०।४९	ग	२१।५९	६	२२	२६	कन्यायाम्	६।३७	५।४३	६। ४।३२।१४
२७।४१	१४	बु	५२।०	ह	४६।५५	वै	४८।१७	वि	२१।४७	७	२३	२७	कन्यायाम्	६।३७	५।४१	६। ५।३२। ६
२७।३६	३०	गु	५३।४९	चि	५०। [illegible]	[illegible]	४९।४७	च	२२।५६	८	२४	२८	तु. १८।२९	६।३८	५।४१	६। ६।३२। ७

कार्तिक कृष्णा ३० यूरेनस १।२८।३१।६, नेपच्यून ५।१६।१०।४१

[* ४ व्र. चन्द्रोदय रात्रौ ८। ० प्रा. टा.
भ. ८।३२ उ. ३५।५० या. विशा. भौमः ३६।२० करक (करवा ४) *

अस्तं गुरुः २४।२७
भ. १७।५८ उ. ४५।३ या. विशा. ज्ञः ४३।३४
सं० तुलायामर्कः २६।५८ मु. ४५ पुण्यं ११।५८ उ. अहोई ८ ¶
[¶ पश्चात्देशे प्रसिद्धा
भ. २९।४३ उ. ५७।४२ या.
[‖ (चन्द्रोदये स्नानादि) श्रीहनुमज्जन्मदिनम्
रमा ११ व्र. रमातनाम्
वैष्णा, निम्बा. ११ व्र. गोवत्सपूजनम्
भ. ५१।३४ उ. भौम प्रदोष व्र. यम दीपदानम् घन १३
भ. २१।४७ या सा. वृश्चिके भानुः ४३ ५१ नरकहरा १४ ‖
स्वात्यामर्कः ७।५३ वृश्चि ज्ञः १९ ४८ दीपमाला श्रीमहालक्ष्मी पूजनम्

कार्तिक कृष्णा ८ भृगाविष्टम् ०।० दिनगणः ३५०६

	सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	६	६	६	६	७	३	१	७
	०	२३	२१	११	७	१४	२१	२१
	३२	५	४	४५	४३	५१	६	६
	५७	३८	२१	३६	०	२९	४३	४३
	५९	४१	८२	१३	२०	३	३	३
	४३	१५	३	३०	१५	५०	११	११
सौरपक्षी		मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	भ.	अ.
	श्री	वि	वि	अनु	अनु	तु.	रो	ज्ये
	७	१	१	१	१	४	४	२

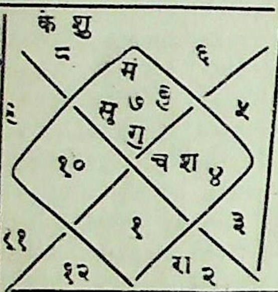

इस पक्ष मे सक्रांति अमावस एक बार की आई है सो प्रजा में भय वा राग व्यापे, बाजरा मन्दा होकर पीछे तेज हो। तुला में स-मं रुई तेज करते हैं। पश्चिमी देशों से दुर्भिक्ष के समाचार मिलें, कृषकों और शूद्रों को पीड़ा, ति. ४ स चान्दी चावल कुछ मन्दे, शेअरों के भाव भी गिरें। उड़द बिनौलों में कुछ तेजी रहकर फिर मदे हों, गेहूं चावल पहले तेज फिर मन्दे।

ति. १ से ५ वा ७ से ११ तक कहीं २ बून्दाबांदी के योग ह।

शकुन विचार—कार्त्तिक बदी दोयज दिना और तीज की जान।
इस दिन वर्षा होय तो आगे वर्षा मान ॥

कार्तिक. कृष्णा ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ३५१२

	सू.	मं.	बु	गु.	शु	श.	रा	के.
	६	६	६	६	७	३	१	७
	६	२७	२९	१३	९	१५	२०	२०
	३२	१२	३८	४	३६	११	४७	४७
	७	२९	५६	२	३१	४८	४	४०
	५९	४२	८५	१३	५	३	३	३
	५४	२४	०	४५	२०	२२	११	११
सौरपक्षी		मा	मा	मा.	मा	मा.	व.	व
		उ	उ	अ	उ.	उ.	भ.	अ
	श्री	व	वि	अनु	अनु	पू.	रो.	ज्ये
	४	३	३	७	१	४	४	२

कार्त्तिक वदी एकादशी वर्षा बादल होय। आषाढ़ मास वर्षा अधिक सराय करो न काव ॥

कार्त्तिक मास में दाल छोड़ देनी चाहिये, जो मनुष्य कार्त्तिक मास में प्रातः स्नान करता है, जितेन्द्रिय रहता है, जप करता है, हविष्य भक्षण करता है तथा शान्त रहता है वह सब पापों से छूट जाता है। स्नान सङ्कल्प—"मम वाङ्मनःकायजाशेषपापक्षयद्वारा श्रीराधादामोदरप्रीत्यर्थम् अमुकतीर्थे कार्त्तिकस्नानमहं करिष्ये। स्नान मन्त्रः—"कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन! प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमाप्रिय! ध्यात्वाहं त्वाञ्च देवेश! जलेऽस्मिन् स्नातुमुद्यतः। तव प्रसादात्पापं मे दामोदर विनश्यतु"। इस मास में शालिग्राम पूजन और तुलसीपालन का बड़ा माहात्म्य है।

संवत् २००३ शकः १८६८ कार्ति० शुक्लपक्षः १५										दि.	अं.	मु	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः	(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनगोलौ हेमन्तर्तुः
दि.मा	ति	वा	घ. प.	न	घ. प.	यो.	घ. प.	क	घ. प.				सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले	कार्तिक शु० १५—यूरे. १।२८।७।२४, नेपच्यून ५।१६।४२ २२
२७।३८	१	शु	५६।३६	स्वा	५४।१४	प्री	३६।६	कि	२५।१४	९	२५	२९	तुलायाम्	६।३६	५।४०	६।७।३२।८	स्वा. ३ गुरुः ६।४६ गोवर्द्धनपू० अन्नकूटम् वृष्टिका कषयाम रससाकशी)
२७,२८	२	श	६०।०	वि	५६।३२	आ	२६।२०	बा	२८।४१	१०	२६	३०	वृ. ४३।१९	६।४०	५।३९	६।८।३२।६	चन्द्रदर्शनम वक्री भृगुः १।७।७ यम २ भ्रातृ टिका २ (भाइ दूज) †
२७।२४	२	र	०।४३	अ	६०।०	सौ	४७।१३	कौ	०।४३	११	२७	१	वृश्चिके	६।४०	५।३८	६।९।३२।१२	वृश्चिके भौमः ५७।१३ अनु. ज्ञः १।४३ जिव्हिन मु १२
२७।-१	३	चं	५।३०	अ	५।३२	शो	४८।३१	ग	५।३०	१२	२८	२	वृश्चिके	६।४१	५।३७	६।१०।३२।१५	म. ३८।४२ उ. [† शारदा कलम दवात पूजनम्
२७।१७	४	मं	११।४८	ज्ये	११।५६	अ	४९।५७	वि	११।४८	१३	२९	३	ध. ११।५६	६।४२	५।३७	६।११।३२।१९	म. ११।४२ यां.
२७।१३	५	बु	१५।५६	मू	१८।०६	सु	५१।१०	बा	१५।५६	१४	३०	४	धनुषि	६।४३	५।३६	६।१२।३२।२५	
२७।९	६	गु	२०।५०	पूषा	२५।३	धृ	५१।५	तै	२०।५०	१५	३१	५	म. ४०।३८	६।४३	५।३५	६।१३।३२।४८	
२७।५	७	शु	२५।५५	उषा	२९।५३	शू	५२।३	व	२५।५५	१६	१	६	मकरे	६।४४	५।३४	६।१४।३२।५७	म. २५.५५ उ. ५९।२५ या. अनु. भौमः ३७।८ नवम्बर ११ सा० ३०
२७।२	८	श	२७।५५	श्र	३४।११	ग	५१।१५	व	२७।५५	१७	२	७	मकरे	६।४४	५।३३	६।१५।३३।१२	गोपाष्टमी (सायंकाले गवां पूजाऽलंकरणाश्च)
२७।५८	९	र	२९।२९	ध	३६।१९	वृ	४९।३	कौ	२९।२९	१८	३	८	कुं ५।१५	६।४५	५।३३	६।१६।३३।२२	परिक्रमा ९ अक्षय ९ (स्वर्णगर्भ कूष्माण्डदानम्) कृतयुगादि.
२६।५४	१०	चं	३०।२९	श	२९।१६	ध्रु	४५।४६	तै	०।२	१९	४	९	कुम्भे	६।४६	५।३२	६।१७।३३।५२	हज यात्रा [¶ सर्वे. तुलसी विवाह भीष्मपञ्चकारम्भः बकरीद
२६।५०	११	मं	२९।३७	पूभ	३९।५०	व्या	४२।५९	वि	२९।३७	२०	५	१०	मी. २४।४०	६।४७	५।३१	६।१८।३४।१४	म. ०।४५ उ. २९।३७ या. अस्तंभौमः २६।२४ हरिप्रबोधिनी ११ व्र. ¶
२६।४६	१२	बु	२७।३९	उ	३९।१६	ह	३८।१६	बा	२७।३९	२१	६	११	मीने	६।४८	५।३१	६।१९।३४।३६	विशा.ऽर्कः २४।२१ प्रदोष व्र.
२६।४३	१३	गु	२४।४०	रे	३७।३८	व	३३।४२	तै	२४।४०	२२	७	१२	मे. ३७।३८	६।४९	५।३०	६।२०।३५।४	वैकुण्ठ १४ [$ श्री गुरु नानकदेव जी
२६।३९	१४	शु	२०।४३	अ	३५।१४	सि	२६।१८	व	२०।४३	२३	८	१३	मेषे	६।५०	५।३०	६।२१।३५।३२	म. २०।४३ उ. ४८।२० या. रो. ३ राहुः ज्ये. १ केतुश्च ०।३ सत्य व्र.
२६।३५	१५	श	१५।५८	भ	३२।२	व्य	१९।३०	व	१५।५८	२४	९	१४	वृ. ४६।६	६।५१	५।२९	६।२२।३५।५९	स्वा. ४ गुरुः २३।१६ का. स्ना. स. मेला कपालमोचन जन्मदिन $

कार्तिक शु० ८ मन्देष्टम् ०।० दिनगणाः ३५२१

सू	म.	बु	गु	शु.	श	रा	के.
६	७	७	६	७	३	१	७
१५	३	१	१५	९	१५	१०	२०
२३	४०	३८	२	१०	३	१९	१९
१३	१४	६	५५	५	५	५	५
६०	४५	५६	१४	१२	२	३	३
१५	३८	४४	०	२०	५०	११	११
क्रान्ति	मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ	उ.	अ	उ.	उ	अ	अ.
स्वा ३	विशा ४	विशा ३	स्वा ३	विशा ३	पु. ४	रो ४	ज्ये २

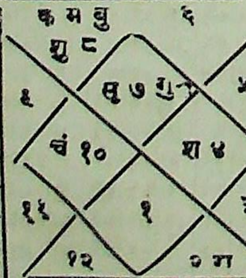

इस पक्ष म राजा लाग प्रसन्न रहें, चान व अमेरीका म भय उपद्रव हो। घृत तेल सोना चांदी सूत मंहगे हो, गेहूँ मक्कई बाजरा पहले मंदा होकर पीछे तेज होगा। शेअरों के भाव मे घटावढ़ी जिनके बढ़े होंगे उनके घटेंगे, जिनके घटे होंगे वे बढ़ेंगे। ति. १३ से रुई में तेजी का उछाला आवेगा। ति. १० से काष्ठ द्रव्य घास आदि मन्दा हो। ति. १३ से अफीम व पशु मन्दे रहें सवारी की दुर्घटनाएँ कई जगह हों। ति. ६ से ९ व १२ से १५ तक कहीं बूंदाबांदी हो। श वि.—कार्त्तिक सुदी एकादशी बादल वर्षा होय। चार मास वर्षा अधिक संशय होन होय॥

कार्तिक शु० १५ मन्देष्टम् ०।० दिनगणाः ३५२८

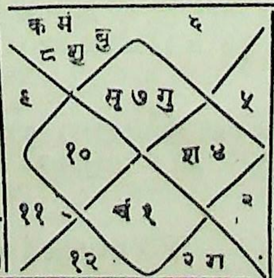

सू	मं	बु	गु	शु	श.	रा	के
६	७	७	६	७	३	१	७
२२	८	१३	१६	९	१५	१९	१९
३५	४१	५८	३४	४८	५०	५६	५६
११	५१	३८	२	३२	४७	५०	१८
६०	४३	८१	१३	२९	१	३	३
२०	१	०	४५	१०	५०	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	मा	व.	मा.	व.	व
[illegible]	अ.	उ.	अ	उ	उ.	अ	अ.
वि. १	विशा	ज्ये १	विशा ३	विशा २	पु. ४	रो. ३	ज्ये १

कार्त्तिक शुक्ल ११ कहिये देव उठाना जितना घड़ियां होयगा, आधा सेरा धान॥ ति. ८ को सूर्य को कुंडल पड़े तो तिल तेल तेज हो भाईदूज के दिन अपनी बहन के घर जाकर वहीं पर उसके हाथ से प्रेमपूर्वक भोजन करें और उन यथाशक्ति अनेक प्रकार के दान देवे। कार्तिक मास में आंवले के नीचे ब्राह्मणों को भोजन करावे और बाद में आप भी उसी वृक्ष के नीचे भोजन करें आंवले की छाया में श्राद्ध और उसके पत्र फलों से विष्णु की पूजा करने से बड़ा भारी पुण्य होता है, क्योंकि सभी देव ऋषि यज्ञ और तीर्थों का आंवले के नीचे निवास होता है। इस सारे मास में यदि कोई स्नान न कर सके तो वह त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अन्त के तीन दिन में तो अवश्य करें। दाल छोड़ने के व्रत की पूर्ति के लिए द्वादशी को दालदान "ॐ उपायनमिदं देव ! व्रतसम्पूर्णहेतवे। द्विदल द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्" इस मन्त्र से ब्राह्मण को देवे। हरिप्रबोधिनी को चातुर्मास्य व्रत समाप्त करे

सम्वत २००३ शकाः १८६८ मार्ग. कृ०पक्षः १६										क्रां.	अं.	मु	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले	(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनगोलो, हेमन्तर्तुः मार्ग. कृ० ३०—यूरेनस १।२७।३७।१७, नेपच्यून ५।१७।८।१९
दि. मा.	ति	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो	घ. प.	क	घ. प								
२६।३१	१	र	१०।३७	कृ	२८।१८	व	१२।८	कौ	१०।३७	२४	१०	१५	वृषे	६।५१	५।२७	६।२३।३६।२६	
२६।२७	२	चं	४।५८	रो	२४।१३	प	५६।३१ (२६)	ग	४।५	२६	११	१६	मि. ५२।८	६।५२	५।२७	६।२४।३६।५५	भ. ३१।५३ उ. ५८।५५ या पूर्वोदयं गुरुः ५६।५७ पश्चिमास्तं भृगुः २६।५५
अवम	३	चं	१८।५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०	
२६।२४	४	मं	५२।५६	मृ	२०।४	सि	६८।५२	व	२५।५८	२७	१८	१७	मिथुने	६।५३	५।२६	६।२५।३७।३६	वक्रीज्ञः २६।५१ श्रीगणेश ४ व्र.
२६।२०	५	बु	४७।११	आ	१६।५२	सा	४०।४७	कौ	२०।०	२८	१३	१८	क. ५८।१३	६।५४	५।२५	६।२६।३८।११	
२६।१६	६	गु	४१।५१	पुन	१२।०	शु	३३।३२	ग	१४।३१	२९	१४	१९	कर्के	६।५४	५।२४	६।२७।३८।४८	भ. ४१।१ उ.
२६।१२	७	शु	३७।२	पु	८।३७	शु	२६।३०	वि	६।२	३०	१५	२०	कर्के	६।५५	५।२४	६।२८।३९।२३	भ. ६।२६ या वक्रग. विशा. ४ भृगुः २५।४५ पाश्चिमास्तं ज्ञः ३९।३५ *
२६।८	८	श	३३।२	श्ले	४।५८	ब्र	१६।११	बा	५।२	१	१६	२१	सिं ५।५३	६।५६	५।२४	६।२९।४०।७	सं० वृश्चिकेऽर्कः १९।४५ मु. ३० पुण्यं ३।४५ उ.
२६।५	९	र	२६।५६	म	४।२	ऐ	१४।२६	तै	१।३	२	१७	२२	सिंहे	६।५८	५।२३	७।० ।४०।४९	भ. ५८।५९ उ. [* श्रीमहाकाल भैरव ८
२६।१	१०	चं	२७।५८	पू	३।६	वै	६।३६	वि	२७।५८	३	१८	२३	क. १८।१३	६।५९	५।२२	७।१ ।४१।३४	भ. २७।५८ या.
२५।५७	११	मं	२७।१४	उ	३।२०	वि	५।४३	बा	२७।१४	४	१९	२४	कन्यायाम	७।०	५।२१	७।२ ।४२।२०	अनु. ऽर्क. ३९।५४ उत्पन्ना ११ व्र. सर्वे.
२५।५३	१२	बु	२७।४६	ह	४।५६	प्री	२।४८	तै	२७।४६	५	२०	२५	तु. ३६।२०	७।१	५।२१	७।३ ।४३।६	वक्रग. तुला. भृगुः २४।४५ ज्ये. भौमः ३।४२ मल्ल १२
२५।४९	१३	गु	२९।४२	चि	७।४३	आ	५६।५५ (५३)	व	२६।४२	६	२१	२६	तुलायाम्	७।२	५।२१	७।४ ।४३।५६	भ. २६।४२ उ. वक्री शनिः ४।१८ प्रदोष व्र.
२५।४६	१४	शु	३२।०३	स्वा	११।४	शो	५६।५०	वि	१।१२	७	२२	२७	तुलायाम्	७।२	५।२१	७।५ ।४४।५२	भ. १।१२ या. सा. धनुषि भानुः ३१।८ देविकास्नानं मेला पुरमण्डल
२५।४३	३०	श	३६।५२	वि	१६।४५	अ	०।०	च	४।५५	८	२३	२८	वृ ०।८	७।३	५।२०	७।६ ।४५।४७	वक्रग. विशा. ४ बुधः ३।४०

मार्गशीर्ष कृ० ८ मन्देष्टम् ०।० दिनगणः ३५३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	७	६	७	३	१	७
२९	१३	१२	१८	२	१५	१०	१०
४०	५१	२२	६	४४	५१	२४	२४
७	१३	४०	४५	१६	७	३६	३६
६०	४३	४८	१३	२६	०	३	३
२८	१६	३०	३०	२०	१	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा	व	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
वि ३	अनु २	अनु [illegible]	स्वा ४	वि ४	पु ४	आ ३	ज्ये १

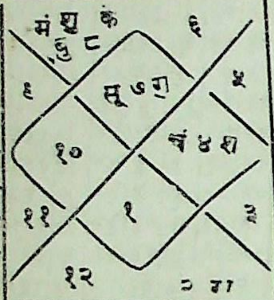

इस पक्ष में तांबा चन्दन रुई अलसी फलों के भाव तेज, प्रजा में अग्निभय रोगपीड़ा अनाज की मांग दूसरे देशों से पावेगी कुछ अनाज विदेश को जावेगा। गुजरात मालव देश में भय, खुरासान देश में कोई उत्पात हो। गेहूं जौं चना रुई के भाव में घटाबढ़ी होकर रुख मंदा रहे। ति. १२ से सरसों तोरिया बिनौला तेज। व्यापारिवर्ग को लाभ अच्छा रहेगा। ति. १ से ३ व ५ से ९ तक कहीं २ उत्तर भारत में वर्षा बूंदाबांदी हो। मार्गशीर्ष कृ० ४।५ के दिन जहां बादल हो अगले वर्ष में वहां खूब वर्षा हो।

मार्गशीर्ष कृ० ३० मन्देष्टम् ०।० दिनगणः ३५४२

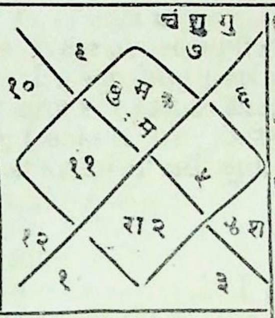

सू	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	७	६	६	३	१	७
६	१८	४	१९	२८	१५	१९	१९
४०	४७	४	२६	४६	५३	१६	१०
७	१६	१६	१०	२०	४१	२८	८
६०	४३	३१	१३	३३	०	३	३
२८	३७	१८	१५	१०	४	११	११
[illegible]	मा.	व	मा	व.	व.	व.	व
	अ	अ	उ	अ	उ.	अ.	अ
अनु ३	ज्ये १	अनु २	विशा ४	व ३	पु ४	रो. ३	ज्ये १

शकुन वि० – मंगसिर की तिथि सप्तमी नवमी दिश ईशान। वायु चले बादर दखे वर्षा थोड़ो जान ॥
मार्ग कृष्णाष्टमी को कालभैरव के मन्दिर में जाकर व्रत रखने और जागरण करने से सभी पाप दूर हो जाते हैं।
इस मास में देविका (पुरमण्डल) में स्नान करने का बड़ा माहात्म्य है। मार्गशीर्ष मास में साढ़े तीन करोड़ और साठ हजार तीर्थ ये सब पुरमण्डल (देविका) में आ जाते हैं। यदि किसी ने व्रत करने की प्रतिज्ञा की हुई हो किन्तु रोग आदि कारणवश उस समय यह व्रत न रख सके तो किसी अपने प्रतिनिधि से रखा लेवे। व्रत में पुत्र पत्नी, भाई पति, पुरोहित और मित्र ये प्रतिनिधि माने गए हैं। पितादि के उपदेश में व्रत करते हुए पुत्रादि को भी फल मिलता है। पाठजपादि की दक्षिणा शीघ्र देने से उस कर्म का फल शीघ्र मिलता है, ऐसा वेदों में लिखा है ॥

संवत् २००३ शकः १८६८ मार्गशीर्ष शुक्ल० १७ | (सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनगोलौ हेमन्तर्तुः

मार्ग० शु० १५—यूरे. १।२६।५७।५३, नेपच्यून ५।१७।२७ २८

दि मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	ह मा.	अं मि.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्ट उदयकाले	
२५।४०	१	र	४१।४७	अ	२७।३६	अ	०।३०	कि	६।४६	९	२४	२९	वृश्चिके	७।३	५।२०	७।७ ।४६।४१	विशा. १ गुरुः ४८।४१ पूर्वोदयं भृगुः ४।४६
२५।३६	२	चं	४७।८	ज्ये	२८।५६	सु	१।३६	ना	१४।२७	१०	२५	३०	ध. २८।५६	७।४	५।२०	७।८ ।४७।३६	चन्द्रदर्शनम् ।
२५।३७	३	मं	५२।२६	मू	३५।३१	धृ	७।५६	तै	६।४७	११	२६	१	धनुषि	७।५	५।२०	७।९ ।४८।३१	वक्रग. तुलायां ज्ञः ३०।० मुहर्रम मु. १ हिजरी सन् १३६६
२५।३५	४	बु	५७।२०	पूष	४१।४१	शू	४।१७	व	२४।५३	१२	२७	२	म. ५८।४	७।५	५।२०	७।१०।४९।३४	भ. २४।५३ उ. ५७।२० या. पूर्वोदयं ज्ञः ६।१५ ¶ क्षय बाल्यत्व-¶
२५।३४	५	गु	६०।०	उष	४७।१३	गं	५।१०	ब	२६।२४	१३	२८	३	मकरे	७।७	५।२०	७।११।५०।३५	उ. षा. ऽगुऽ॥ऽ अ. ९ या. ऽ५ या. ॥। दि. ल. ९
२५।३०	५	शु	१।२८	श्र	५१।४८	वृ	५।२७	बा	१।२८	१४	२९	४	मकरे	७।७	५।२०	७।१२।५१।३७	[¶ निवृत्तिः ४।४६
२५।३०	६	श	४।२६	ध	५५।१७	ध्रु	४।५२	तै	४।२६	१५	३०	५	कुं २३।३२	७।७	५।२०	७।१३।५२।४०	मार्गी बुधः ५१।१२ चम्पा ६
२५।२८	७	र	६।२४	श	५६।२७	व्या	३।२७	ब	६।२४	१६	१	६	कुंभे	७।६	५।२०	७।१४।५३।४४	म ६।२४ उ. ३६।५६ या. दिसम्बर १२ ता० ३१
२५।२६	८	चं	६।५६	पूभ	५८।२२	ह	५७।१२	ब	६।५६	१७	२	७	मी. ४१।५६	७।९	५।२०	७।१५।५४।४६	ज्ये. ऽर्कः ४३।२४
२५।२७	९	मं	६।१२	उ	५८।५	सि	५३।१	कौ	६।१२	१८	३	८	मीने	७।१०	५।२०	७।१६।५५।५५	उभा.॥॥ऽरो. ४ उ. ॥। दि. ल. ९ अंश १५ या. अत्यावश्यके
२५।२३	१०	बु	४।१५	रे	५६।४३	व्य	४७।४४	ग	४।१५	१९	४	९	मे. ५६।४३	७।११	५।२०	७।१७।५७।८	भ. ३२।४४ उ. रे० ॥॥ऽ॥ दि. ल. ९ अंश ११ उ. अत्यावश्यके.
२५।२१	११	गु	१।१३	अ	५४।३२	व	४१।४०	वि	१।१३	२०	५	१०	मेषे	७।११	५।२०	७।१८।५८।१४	भ. १।१३ या. वृश्चिके ज्ञः ४४।१३ मोक्षदा ११ व्र. सर्वे §
अवम्	१२	गु	५७।१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०	[§ श्रीगीताजयन्ती, ताजिया (दहे)
२५।१९	१३	शु	५२।३३	भ	५१।२७	प	३४।५५	तै	२४।४५	२१	६	११	मेषे	७।११	५।२०	७।१९।५९।२४	प्रदोष व्र. [* श्री दत्त जयन्ती, खग्रास चन्द्रग्रहणम्
२५।१८	१४	श	४७।१८	कृ	४७।५०	शि	२७।३८	ग	१६।५४	२२	७	१२	वृ. ५।३३	७।१२	५।२०	७।२१। ०।३४	भ. ४७।१८ उ. पिशाचमोचन श्राद्धम्
२५।१९	१५	र	४१।२७	रो	४३।५०	सि	२०।१	वि	१४।२५	२३	८	१३	वृषे	७।१२	५।२०	७।२२। १।४८	भ. १४।२५ या. मू. १ धनुषि च भौमः ७।२५ *

मार्गशीर्ष शु० ८ चन्द्रेष्टम् ०।० दिनगणः ३५५१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	६	६	३	१	७
१५	२५	२८	२१	२४	१५	१८	१८
४६	३०	१९	३१	५८	४४	४३	४३
४६	२८	४२	१८	४४	१७	४४	४४
६१	४३	३	१८	१५	१	३	३
३	५६	९	५४	२०	३०	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	ज्ये	वि	वि	वि.	पु.	रो.	ज्ये
	३	३	१	८	४	३	१

इस पक्ष में गेहूँ चना पहले कुछ मंदा होकर फिर तेज रहेगा और चांदी में २) रुई में १५।१८ के करीब तेजी होगी। ति. ३ के बाद कहीं भूकंप के झटके भी लगेंगे, प्रजा में कहीं क्लेश युद्ध भी हो, पवन का जोर रहे, शीतज्वरादि का प्रकोप हो। ति. १० से चतुष्पाद महंगे रहें सोने का भाव समान, ति. ९ से पहले अफीम तेज रहकर यहाँ मन्दी गिरेगी। अन्न संग्रह से ७ मास में लाभ हो। ति. १।२ व ४ से ६ और ९ से १४ तक वर्षा बुन्दाबांदी होवे। शकुन वि०—मंगशिर शुक्ला पक्ष में तिथि की होवे हान। रोग दोष दुर्भिक्ष हो यह तुम निश्चय जान ॥

मार्गशीर्ष शु० १५ रवीष्टम् ०।० दिनगणः ३५५७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	६	६	३	१	७
२२	२१	१	२२	२४	१५	१८	१८
१	५४	४७	४४	७	३७	२५	२५
४८	२६	४५	५६	१६	४१	४	४
६१	४४	५०	१८	२	२	३	३
११	२४	३८	३०	०	१०	११	११
	मा	मा.	मा.	व.	व	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये	ज्ये	वि.	वि.	वि.	पु.	रो.	ज्ये
७	४	४	१	२	४	३	१

मार्गशीर्ष के काम्य-रविवार व्रत में भक्ष्यपदार्थ लिखते हैं—मार्गशीर्ष में ३ तुलसी के पत्ते खावे. पौष में ३ पल घी (१ पल ३ तोले ४ माशे का होता) माघ में ३ मुट्ठी तिल, फाल्गुन में ३ पल दही, चैत्र में ३ पल दूध, वैशाख में गोबर, ज्येष्ठ में ३ अञ्जली पानी, आषाढ में ३ कालीमिर्च, श्रावण में ३ पल सत्तु, भाद्रपद में गोमूत्र के ३ गण्डूष, आश्विन में शक्कर और कार्तिक में हविष्य भक्षण करे। स्कन्द ६ को कार्तिकेय का पूजन रात्रि के प्रथम प्रहर में करना चाहिए। मन्त्र—"ॐ सेनाविदारक स्कन्द महासेन महाबल ! रुद्रोमाग्निज षड्वक्त्र गंगागर्भ नमोऽस्तु ते"।

संम्वत् २००३ शकः १८६८ पौष कृ० पक्षः १८										हिं.	अं.	मु	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्य स्पष्टः उदयकाले	(सन् १९४६ ई०) दक्षिणायनगोलौ, हेमन्ततुः
दि. मा.	ति.	वा.	घ प.	न.	घ प.	यो.	घ. प.	क.	घ प.								पौष. कृ० ३०—यूरेनस १।२६।१६।३८, नेपच्यून ५।१७।४१।५७
२५।१५	१	चं	३५।४१	मृ	३६।३६	सा	१२।१०	वा	८।३८	२४	६	१४	मि. ११।४५	७।१४	५।२०	७।२३। ३।४	अनु. ज्ञः ३५।० मार्गी भृगुः २४।५७
२५।१३	२	मं	२६।४३	आ	३५।२६	सू	४।१२ ५६।२५	तै	२।४२	२५	१०	१५	मिथुने	७।१४	५।२०	७।२४। ४।१८	भ. ५६।५५ उ. विशा. २ गुरुः ४८।० जन्मोत्सव अखण्ड †
२५।११	३	बु	२४।८	पुन	३१।४६	ब्र	४८।१०	वि	२४।८	२६	११	१६	क. १७।४४	७।१५	५।२०	७।२५। ५।३४	भ. २४।८ या. श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
२५।१०	४	गु	१८।५३	पु	२७।५६	ऐं	४१।३८	वा	१८।५३	२७	१२	१७	कर्के	७।१६	५।२०	७।२६। ६।५५	[† सौभाग्यवती सद्धर्मयुक्ता श्री १०५ मती महाराणी बघाट
२५।८	५	शु	१४।१२	श्ले	२५।५	वै	३५।२	तै	१४।१२	२८	१३	१८	सिं. २५।५	७।१७	५।२०	७।२७। ८।६	
२५।७	६	श	१०।१२	म	२३।५	वि	२६।४	व	१०।१२	२९	१४	१९	सिंहे	७।१८	५।२०	७।२८। ९।२७	भ. १०।१२ उ. ३८।५१ या.
२५।५	७	र	७।३०	पू	२१।५५	प्री	२३।५५	ब	७।१०	१	१५	२०	क. ३६।४०	७।१८	५।२०	७।२९।१०।४६	मूला सं. धनुष्यर्कः ४८।२६ मु. ४५ पुण्यं परदिने मध्याह्नं यावत्
२५।३	८	चं	५।३७	उ	२२।५६	आ	१६।३६	कौ	५।३७	२	१६	२१	कन्यायाम्	७।१९	५।२१	८।० ।१२।७	
२५।२	९	मं	५।२	ह	२३।८	सौ	१६।२०	ग	५।२	३	१७	२२	तु. ५४।५५	७।२०	५।२१	८।१ ।१३।३०	भ. ३५।२२ उ.
२५।०	१०	बु	५।४२	चि	२६।४३	शो	१४।३	वि	५।४२	४	१८	२३	तुलायाम्	७।२१	५।२१	८।२ ।१४।५२	भ. ५।४२ या.
२४।५९	११	गु	७।४६	स्वा	२६।२३	अ	१२।४८	बा	७।४६	५	१९	२४	तुलायाम्	७।२१	५।२१	८।३ ।१६।१६	सफला ११ व्र. सर्वे.
२४।५७	१२	शु	१०।५७	वि	३४।१३	सु	११।२१	तै	१०।५७	६	२०	२५	वृ. १८।१	७।२२	५।२२	८।४ ।१७।३१	ज्य. ज्ञः ११।१८ प्रदोष व्र.
२४।५६	१३	श	१५।१२	अ	४०।५५	धृ	१२।४६	व	१५।१२	७	२१	२६	वृश्चिके	७।२३	५।२२	८।५ ।१८।५४	भ. १५।१२ उ. ४७।४२ या. सा. मकरे भानुः ५६।५१ उत्तरायणम्
२४।५४	१४	र	२०।१२	ज्ये	४६।१७	शू	१३।४१	श	२०।१२	८	२२	२७	ध. ४६।१७	७।२४	५।२२	८।६ ।२०।२३	
२४।५६	३०	चं	२५।३७	मू	५२।५१	गं	१५।०	ना	२५।३७	९	२३	२८	धनुषि	७।२४	५।२२	८।७ ।२१।४६	सोमवती पुण्यम्

पौष कृ० ८ चन्द्रे ष्टम् ०।० दिनगणः ३५६५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	६	६	३	१	७
०	६	१०	२४	२५	१५	१७	१७
१२	०	५६	२०	१५	२०	५५	५६
७	४२	३०	५३	२१	४०	१६	१६
६१	४४	७७	१२	१७	२	३	३
२०	२२	३	०	२२	४१	११	११
गतिपत्री	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू. ४	मू. २	अनु. ३	वि. २	वि २	पु ४	रो. ३	ज्ये १

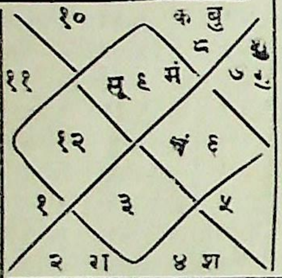

इस पक्ष मे सुत घी चावल संग्रह करने से एक मास बाद तेजी से लाभ होवे। खड गुड़ सरसों बिनौले तिलतेल, घास लकड़ी यह सब तेज रहेंगे। ति ५ तक सोना चांदी मोती कुछ मन्दे हों, बाद तेज। अनाज के भाव में घटा-बढ़ी रहकर फिर मकई ज्वार बाजरा गेहूं तेज होवें। कारखाने के मालिकों और मजदूरपार्टियों में वैमनस्य फैले, कहीं हड़ताल आदि का उपद्रव और फिलमस्टारों को पीड़ा हो।

ति. २ से ६ व १२ से १४ तक वर्षा बूंदा बांदी कई प्रान्तों में होगी।

पौष कृ० ३० चन्द्रे ष्टम् ०।० दिनगणः ३५७२

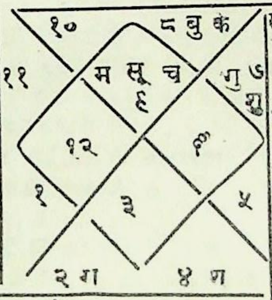

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	६	६	३	१	७
७	११	२०	२५	२८	१४	१७	१७
२१	११	३६	४५	३	५५	३७	३७
४६	५३	४३	४८	४६	५६	१	१
६१	४५	८६	११	३०	२	३	३
२२	०	६	५६	१०	१०	११	११
गतिपत्री	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.	व
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू. ३	मू. ४	ज्ये २	वि २	वि. ३	पु ४	रो. ३	ज्ये १

शकुन विचार—तेरस चौदस-मावस पौष वदी मे जान। तीन दिनों में गर्भ हो आवगा वर्षा मान ॥
चतुर्दशी व अमावस के दिन जिस देश मे प्रातः सूर्योदय बादलों में से हो तो वहां पशुओं को चारे की दिक्कत होगी।
पौष मास में स्नान दानादि कर्मों के लिए नर्मदा श्रेष्ठ मानी गई है। व्रत वाले दिन दातुन नहीं करनी चाहिए, क्योंकि लिखा है "जो पुरुष व्रत और श्राद्ध वाले दिन काष्ठ की दातुन करता है उसके सात कुल नष्ट हो जाते हैं ॥" रविवार, संक्रांति, ग्रहण, व्रत, जन्म-मरणाशौच, श्राद्ध, जन्मदिन और अस्पृश्य के स्पर्श हो जाने पर गर्म पानी से स्नान नहीं करना चाहिये ॥ धर्मतत्व—इस धर्म के तत्व को पहले सुनो और बाद में निश्चय कर लो कि दूसरे की आत्मा को दुखाने वाले कोई भी कार्य कभी नहीं करेंगे अर्थात् अपने को बुरा लगने वाला वर्ताव दूसरे से नहीं करना चाहिये ॥

सँम्वत् २००३ शकाः १८६८ पौषशुक्लपक्षः १६										हि.	अ	मु	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः	(सन् १९४६ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोल, शिशिरर्तुः
दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प				सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले	पौष. शुक्ल १५ यूरेनस १।२५।४४।४, नेपच्यून ५।१७।४८।१६
२४।५७	१	मं	३०।५८	पूष	५६।१८	वृ	१६।२१	व	३०।५८	१०	२४	२६	धनुषि	७।२४	५।२३	८। ८।२३।१८	
२४।५९	२	बु	३५।४८	उ	६०। ०	ध्रु	१७।२०	बा	३।२३	११	२५	२०	म. १५।३८	७।२४	५।२४	८। ९।२४।३७	पू. षा. भौमः ५०।४० चन्द्रदर्शनम्
२५।०	३	गु	३६।५५	उ	४।५६	व्या	१७।५२	तै	७।५१	१२	२६	१	मकरे	७।२५	५।२५	८।१०।२६। ५	वृश्चिके भृगुः ५३।११ सफर मुः २
२५।२	४	शु	४२।५१	श्र	९।५०	ह	१७।३८	व	११।२३	१३	२७	२	कु ४१।४२	७।२५	५।२६	८।११।२७।३२	म. ११।२३ उ. ४२।५१ या. विशा ३ गुरुः ५७।१० मेला हरवल्लभ जालन्धर
२५।४	५	श	४४।४३	ध	१३।३५	व	१६।२६	व	१३।४६	१४	२८	३	कुम्भे	७।२५	५।२७	८।१२।२८।५३	पू. षा. ऽकः ४९।५४
२५।५	६	र	४५।१२	श	१६। ७	सि	१४।१	कौ	१५।७	१५	२९	४	कुम्भे	७।२६	५।२८	८।१३।३०।२४	मूला. धनुषि च बुधः २३।३४
२५।७	७	चं	४५।२४	पुभ	१७।२०	व्य	११।१४	ग	१५।१८	१६	३०	५	मि. १।२३	७।२६	५।२९	८।१४।३१।४५	म. ४५।२४ उ. जन्मदिन श्रीगुरुगोविन्दसिंह
२५।९	८	मं	४२।४२	उ	१७।२३	व	७।६	वि	१३।५३	१७	३१	६	मीने	७।२६	५।३०	८।१५।३३।१६	म. १३।५३ या. अनु. भृगुः ४३।५८
२५।१०	९	बु	३६।१८	रे	१८।१६	प	५६।१९	वा	१०।५०	१८	१	७	मेषे १८।१६	७।२६	५।३०	८।१६।३४।४७	पूर्वास्तं ज्ञः ५५।१९ जनवरी १ ता. ३१ सन् १९४७
२५।१२	१०	गु	३५।१७	अ	१४।१६	सि	४९।४५	त	७।१७	१९	२	८	मेषे	७।२	५।३१	८।१७।३६। ९	
२५।१४	११	शु	३०।३०	भ	०।२७	सा	४२।३९	व	२।५३	२०	३	९	वृ २५।३५	७।२६	५।३२	८।१८।३७।३६	म २।५३ उ. ३०।३० या. पुत्रदा ११ व्र. सर्वेषाम्
२५।१५	१२	श	२५।१	कृ	७।५८	शु	३५।८	बा	२५।१	२१	४	१०	वृषे	७।२७	५।३२	८।१९।३८।५६	प्रदोष व्रतम्
२५।१७	१३	र	१९।३०	रो	५९।५५	शु	२२।२२	तै	१९।३०	२२	५	११	मि. ३१।५९	७।२७	५।३३	८।२०।४०।२६	
२५।१९	१४	चं	१३।३७	आ	५५।४२	ब्र	१९।२४	व	१३।३७	२३	६	१२	मिथुन	७।२७	५।३४	८।२१।४१।५३	म. १३।३७ उ. ४०।४१ या.
२५।२०	१५	मं	७।४६	पुन	५१।४३	ऐं	११।३३	व	७।४६	२४	७	१३	क. ३९।४२	७।२७	५।३५	८।२२।४३।२१	पू. षा. बुधः ५।१३ माघ स्नान व्रत नियमाद्यारम्भश्च

पौष शु० ८ भौमेष्टम् ०।० दिनगया: ३५८०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	६	७	३	१	७
१५	१७	२	२७	२	१४	१७	१७
३३	१८	२९	११	५०	२८	१२	१२
१६	१२	१८	५७	१६	४९	५	५
६१	४५	१०	१०	४०	४	३	३
२५	२०	६	३२	३७	०	११	११
शीघ्रवक्री	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.
पूषा १	पूषा ४	मू १	वि ३	वि ४	पु. ४	रो ३	ज्ये १

इस पक्ष में रसकस गुड़ खंड नमक तेज, रुई के बाज़ार में ज्यादे घटाबढ़ी से व्यापारियों में घबराहट हो। ति. ३ तक अनाज कुछ मंदा बाद तेज रहे। रुई चांदी तेज, गलती (गली) लगाने वालों को लाभ होगा। प्रजा में अनेक रोगों (फोड़ा फुन्सी कफ, ज्वर) से कष्ट। ति. ९ से अफ़ीम मन्दी और अनाज ≡) मंदा। यहां जो भाव रुई का होगा वही भाव बीच में घटा-बढ़ी होते हुए फाल्गुन कृष्ण में हो जायगा। लोहे के भाव में कुछ मन्दापन रहे। ति. २ से ९ तक व. १३।१४ को खण्ड वृष्टि का योग है।

पौष. शु० १५ भौमेष्टम् ०।० दिनगया: ३५८७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	६	७	३	१	७
२२	२२	१३	२८	८	१३	१६	१६
४३	४०	१२	२४	२	५९	४९	४९
२१	३	३१	४२	१६	८	२२	२२
६१	४५	६२	९	४७	४	३	३
२६	४०	०	२	३७	४०	११	११
शीघ्रवक्री	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व
	अ.	अ	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
पूषा ३	पूषा ३	मू. ४	वि ३	अनु ३	पु. ४	रो. ३	ज्ये १

शकुन विचार—पौष सुदी चौदस दिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आषाड़ में बालें दादुर मोर॥

पौष मास में घर, महल, बंगला, कोठी, नगर ग्राम आदि दान करने से बड़ा भारी पुण्य होता है और दाता पर भगवान् विष्णु परम प्रसन्न हो जाते हैं। किस २ कर्म में तात्कालिकी तिथि लेना चाहिए यह बतलाते हैं—स्नान, तैलमर्दन, दन्तधावन, दान मैथुन मरण और जन्म में तात्कालिकी तिथि लेना चाहिये जो मनुष्य बिना दांत साफ किए और बिना पैर धोये भोजन करता है, उसका फिर दोबारा संस्कार करना चाहिए। पतिमाहात्म्य—पतिसेवा से बढ़कर स्त्रियों के लिए और कोई तप नहीं, देखो सावित्री पतिसेवा करके ही आज भी स्वर्ग में विराज रही हैं। जो स्त्री पति की आज्ञा के बिना व्रतादि रखती हैं वह स्त्री पति की आयु को नष्ट कर देती है और खुद नरक में जाती है।

संम्वत् २००३ शकः १८६८ माघ कृष्णपक्षः २०											हिं.	मुं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः	(सन् १९४६ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः
दि	मा.	ति	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	दि.	ता.	ता.	सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले	माघ. कृ ३० यूरेनस. १।२५।१५।४०, नेपच्यून ५।१७।४७।३५
२५	२८	१	बु	२।१०	पू	४८।८	वै	५२ ५९।३३	कौ	२।१०	२५	८	१४	कर्के	७।२८	५।३६	८।२३।४४।४७	
अवम्		२	बु	५६।५७		०		०		०				०	०	०	० ०	
२५	२४	३	गु	५२।२१	श्ले	५५।७	प्री	४६।४२	व	२४।२४	२६	९	१५	सिं ४५।७	७।२८	५।३६	८।२४।४८।९	म. २४।२४ उ. ५२।२१ या. रो. २ राहुः अनु ४ केतुश्च ५६।३३
२५	२५	४	शु	४८।३५	म	४२।५६	आ	४४।३२	ब	२०।३४	२७	१०	१६	सिंहे	७।२८	५।३७	८।२५।४७।३३	उषा. ऽर्कः ५१।२४ श्री गणेशजन्म (सङ्कट चौथ) व्रतम् ❀
२५	२६	५	श	४५।५०	पूफ	४१।३४	सौ	३८।७	कौ	१७।१२	२८	११	१७	क' ५६।३८	७।२८	५।३८	८।२५।४८।५४	[❀ चन्द्रोदय रात्रौ ९।२१ प्राचीन टाइम
२५	२८	६	र	४५।७	उ	४१।१८	शो	३३।३०	ग	१४।५८	२९	१२	१८	कन्यायाम्	७।२८	५।३९	८।२७।५०।१३	म. ४४।७ उ. वक्रग. पुष्य ३ शनिः ५८।२० उ. षा. भौमः १।१७
२५	३०	७	चं	४३।२८	ह	४२।१५	अ	२९।५३	वि	१३।५८	३०	१३	१९	कन्यायाम्	७।२८	५।३९	८।२८।५१।३७	म. १३।५२ या. अनन्त श्रीजगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती, लोहड़ी
२५	३२	८	मं	४४।२९	चि	४४।२७	सु	२७।२६	बा	१४।२	१	१४	२०	तु १३।२१	७।२८	५।४०	८।२९।५३।०	सं. मकरेऽर्कः ९।५४ मु. ३० पुण्यं ९।५४ उ.
२५	३३	९	बु	४६।४०	स्वा	४७।५८	धृ	२५।४१	तै	१५।३३	२	१५	२१	तुलायाम्	७।२८	५।४१	९।०।५४।२३	उषा. ज्ञः २९।४१
२५	३५	१०	गु	४९।५७	वि	५२।३४	शू	२४।५६	व	१८।१८	३	१६	२२	वृ. ३६।३५	७।२८	५।४२	९।१।५५।४५	म. १८।१८ उ. ४९।५७ या. मकरे भौमः ८।५२
२५	३७	११	शु	५४।२१	अ	५८।७	ग	२५।४	ब	२२।९	४	१७	२३	वृश्चिके	७।२८	५।४२	९।२।५७।५	ज्ये. भृगुः १।१९ विशा ४ वृश्चिके गुरुः १५।५२ मकरे ज्ञः ३३।२६ §
२५	३८	१२	श	५९।२४	ज्ये	६०।०	वृ	२९।२	कौ	२१।५८	५	१८	२४	वृश्चिके	७।२७	५।४३	९।३।५८।२४	निम्बा ११ व्र. [§ षट् तिला ११ व्र. स्मा. वै.
२५	४०	१३	र	६०।०	ज्ये	४।२०	ध्रु	२७।७	तै	२९।५२	६	१९	२५	ध. ४।२०	७।२७	५।४४	९।४।५९।४८	प्रदोष व्रतम्
२५	४२	१४	चं	४।५१	मू	१०।५७	व्य	२८।३१	व	४।५१	७	२०	२६	धनुषि	७।२७	५।४४	९।६।१।५	म. ४।५१ उ. ३७।३१ या. अभि. प्र. रविः ४०।५२ सायन कुंभे भानुः १४।५५
२५	४३	१४	मं	१०।१२	पूषा	१७।२५	ह	२९।४२	श	१०।१२	८	२१	२७	म. ३३।५३	७।२७	५।४५	९।७।२।२८	अभिजि. प्र. ज्ञः ३५।५१
२५	४४	३०	बु	१५।०	उषा	२३।१७	व	३०।२८	ना	१५।०	९	२२	२८	मकरे	७।२७	५।४६	९।८।३।३८	मौनी ३० प्रयागस्नाने फलाधिक्यम्

माघ. कृ. ८ भौमेष्टम् ०।० दिनगणः ३५६४

सू	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
८	८	८	६	७	३	१	७
२९	२८	२५	९	१३	१३	१६	१६
५३	१०	१६	३२	५९	२५	२७	२७
०	४०	१	१९	५०	२६	७	७
६१	६	६६	८	५३	५	३	३
२३	०	१८	३२	०	१०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	अ.	व
[illegible]	आ.	अ	ह.	ह.	उ	व.	अ
[illegible]	[illegible]	पू. षा	वि. ३	[illegible]	पु. ४	रो. २	[illegible]

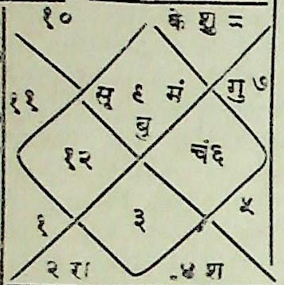

इस पक्ष में गुड़ चावल उड़द घृत तेज रहें। गेहूँ चना जौ पहले कुछ तेज फिर घटाबढ़ी रहे। लालमिर्च मसरी अलसी मंदी रुई सथा बिनौला सरसों तारामीरा का रुख तेज। पश्चिम में खड़ी फसल को हानि, प्रजा में रोग चौर भय हो. यहां रुई और घृत संग्रह करने वाले आगे लाभ उठावेंगे। बागड़ देश में प्रजा को कष्ट होगा यहाँ भारतीय नेताओं की प्रसन्नता का कोई कारण बनेगा। ति. ७ से ३० तक खडवृष्टि का योग है।

श. वि – माघ वदी जो पंचमी बादल होवे आन। वर्षा कछु होवे नहीं भादों वर्षा जान॥ माघ वद जो ६ को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास।

माघ. कृ. ३० बुधष्टम् ०।० दिनगणः ३६०२

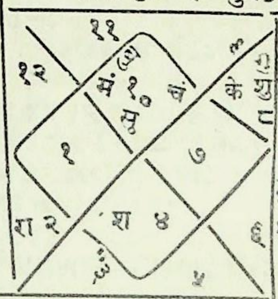

सू	मं	बु	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	९	९	७	७	३	१	७
८	४	७	०	२१	१२	१६	१६
[illegible]	२२	२१	३	२७	४९	१	१
३८	४३	७	५	१३	३	३८	३८
६१	४६	१००	७	५७	५	३	३
१७	२०	०	८	४०	२०	११	११
[illegible]	मा.	मा	मा	मा	व	व.	व
[illegible]	अ	श.	ह.	उ	न	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि ४	ज्ये	पु ३	रो. २	[illegible]

माघ मास में मूली छोड़ देनी चाहिए। जो पुरुष माघ मास में प्रातः सूर्योदय के समय किसी सुन्दर नदी में स्नान करता है वह अपने सात कुल और माता पिता के साथ देवशरीर धारण कर स्वर्ग में आनन्द से रहता है। स्नान का मन्त्र यह है—"दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्"। इस प्रकार स्नान करके सूर्य को अर्घ देवे, उसका मन्त्र यह है—"ॐ सवित्र प्रसवित्रं च परं धाम जले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा॥" माघ की अमावस्या को यदि रविवार श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात हो तो इन चारों योगों के मिलने से १०० सूर्यग्रहणों के समान अर्द्धोदय नामक योग होता है ३ योग मिलने पर महोदय योग होता है। इस वर्ष यह योग नहीं है। षट्तिला एकादशी को तिल मलना तिल स्नान, तिल हवन तिल पान तिल भोजन और तिल दान करने वाले मनुष्य के सब पाप दूर हो जाते हैं॥

सँम्वत् २००३ शकः १८६८ माघ शुक्लपक्षः २१	हिं.	मुं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्ट	(सन् १९४७ ई०) उत्तरायणम् दक्षिणगोलः, शिशिरर्तुः

सँम्वत् २००३ शाका १८६८ माघ शुक्लपक्षः २१ — (सन् १९४७ ई०) उत्तरायणम् दक्षिणगोलः, शिशिरर्तुः

माघ. शुक्ल १५ यूरेनस १।२४।५६।३३, नेपच्यून ५।१७।३६।३२

वि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्ट उदयकाले	
२५।५३	१	गु	१६।१३	श्र	२८।२४	सि	३०।२३	बु	१६।१३	१०	२३	२६	मकरे	७।२७	५।४७	६। ६। ४।५१	चन्द्रदर्शनम् सूक्ष्मम्
२५।५७	२	शु	२१।५३	ध	३२।२४	व्य	२६।४३	कौ	२१।५३	११	२४	१	कुं ०।२४	७।२६	५।४८	६।१०। ६।७	श्रवणे रविः ४६।४२ श्रवणे ज्ञः ५।५८ रवि उलावल मु. ३
२६।१	३	श	२३।३८	श	३५।१५	व	२७।५६	ग	२३।३८	१२	२५	२	कुंभे	७।२५	५।४६	६।११। ७।१५	म. ५३।४६ उ. अभि. प्र. भौमः ३६।१२
२६।५	४	र	२४।०	पुभ	३६।४८	प	२५।१५	वि	२४।०	१३	२६	३	मि. २१।२५	७।२५	५।५०	६।१२। ८।२४	म. २४।० या. उ. भा. ।।।।ऽनृ. ५२ उ. ।ऽ।। ल. चि
२६।८	५	चं	२३।६	उ	३७।८	शि	२२।३०	बा	२३।६	१४	२७,	४	मीने	७।२४	५।५१	६।१३। ६।४२	वसन्त ५ श्री ५ उमा. ।।।।ऽनृ. ।ऽ।। ल. चिं० रे. ।।।।ऽनृ. ५० या ण
२६।१२	६	मं	२०।५७	रे	३६।१८	सि	१६।४८	तै	२०।५७	१५	२८	५	मेषे ३६।१८	७।२४	५।५२	६।१४।१०।५२	रे. ।।।। ।।।। ल. चिं० [ण ।।।। ल. चिं०
२६।१६	७	बु	१७।४७	अ	३४।२६	सा	११।१६	व	१७।४७	१६	२९	६	मेषे	७।२३	५।५२	६।१५।११।५४	म. १७।४७ उ. ४५ ४५ या. रथ ७ (अरुणोदयस्नाने महत्फलम्)
२६।२०	८	गु	१३।४४	भ	३१।५०	शु	५८।३०	व	१३।४४	१७	३०	७	वृ. ४६।०	७।२२	५।५३	६।१६।१३।७	मूला. धनुषि च भृगुः ३२।४२ श्रवणे भौमः २१।५१ भीष्माष्टमी
२६।२४	९	शु	८।५५	कृ	२८।२६	ब्र	५७।४६	कौ	८।५५	१८	३१	८	वृषे	७।२१	५।५४	६।१७।१४।१२	धनिष्ठा. बुधः १६।३४
२६।२७	१०	श	३।२१	रो	२४।४१	ऐं	४३।६	ग	३।२१	१९	१	९	मि. ५२।३७	७।२१	५।५६	६।१८।१५।१३	म. ३०।३६ उ. ५७।४८ या. जया ११ व्र. स्मा.
क्षयम्	११	श	५७।४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	
२६।३१	१२	र	५१।५३	मृ	२०।३४	वै	३५।१६	ब	२५।५०	२०	२	१०	मिथुने	७।२१	५।५७	६।१९।१६।१५	वैष्णवा निम्बा. ११ व्र.
२६।३५	१३	चं	४६।०	आ	१६।२३	वि	२७।२२	कौ	१८।५६	२१	३	११	क. ५८।२३	७।२०	५।५८	६।२०।१७।१३	सोम प्रदोष व्र.
२६।३९	१४	मं	४०।२६	पुन	१२।२२	प्री	१६।४६	ग	१३।१३	२२	४	१२	कर्के	७।१९	५।५९	६।२१।१८।१६	म. ४०।२६ उ. कुंभे ज्ञः २।४८
२६।४३	१५	बु	३५।२४	पु	८।३६	आ	१२।१३	वि	७।५५	२३	५	१३	कर्के	७।१९	५।५९	६।२२।१९।१९	म. ७।५५ या. धनि.ऽर्के: ५६।४६ माघस्नान समाप्तिः, सत्यव्रतम्

माघशु० ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ३६१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	७	७	३	१	७
१६	१०	२१	१	२६	१२	१५	१५
१३	३६	५	४६	२६	१०	३६	३६
७	३१	०	१६	३७	३८	१५	१५
६१	४६	१०८	६	६१	५	३	३
६	४०	४४	५	१६	३०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	श्र	श्र.	उ.	उ.	उ.	श्र.	श्र.
श्र.	श्र.	श्र.	वि	ज्ये	पु.	रो	श्र.
२	१	४	४	४	३	४	४

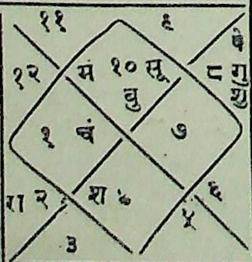

इस पक्ष में गेहूं चना बाजरा के भाव में पहले कुछ घटा-बढ़ी होकर फिर तिथि ५ के बाद बाज़ार तेजी पर रहेगा, तेजी का ध्यान रखने वाले लाभ में रहेंगे। रुई का भाव पहले कुछ तेज रह कर बाद मंदा रहेगा। ति. ७ से खेतियों को किसी प्रकार हानि पहुंचेगी, और प्रजा में रोगभय हो। कहीं वर्षा की झड़ी से हानि, कहीं बादल चाल मात्र होकर हट जावेगी। ति. ३ से ६ व १२ से १५ तक खंड वृष्टि के योग है।

शाकु. वि०—माघ वदी जो पंचमी बादल होवे आन।
वर्षा कछु होवे नहीं भादव वर्षा जान॥ १॥

माघ. शु० १५ बुधेष्टम् ०।० दिनगणः ३६१६

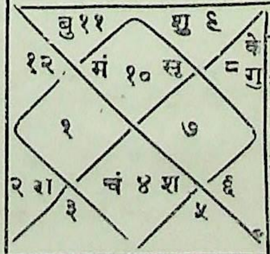

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	१०	७	८	३	१	७
२२	१५	१	२	५	११	१५	१५
१६	१८	४२	२८	४६	३८	१७	१७
१८	११	८	०	४६	१३	१४	१६
६०	४७	१०७	५	६३	५	३	३
०	०	०	२	७	२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व
[illegible]	श्र.	श्र	उ	उ.	उ.	श्र.	श्र
श्र.	श्र.	ध.	वि	मू.	पु	रो.	[illegible]
४	२	३	४	२	३	२	[illegible]

शाकु. वि.—माघ वदि जो छट को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास॥ २॥
माघ उजाली दूज वा तीज लखो जलधार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार॥ ३॥

माघ शुक्ला सप्तमी को सूर्योदय के समय स्नान करने से सूर्यग्रहण स्नान के तुल्य फल होता है, स्नान मन्त्र यह है—यदा जन्मकृतं पापं यदा जन्मांतरार्जितम्। मनोवाकायजं यच्च ज्ञाताऽज्ञाते च ये पुनः॥ इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याधिसमायुक्ते हर माकरि सप्तमी'। भीष्माष्टमी—माघ शुक्लाष्टमी को जो मनुष्य भीष्म जी को जल देते हैं उनके एक वर्ष के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। मन्त्र यह है—"ॐ वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे" जो मनुष्य शीतकाल में बहुत सी आग जला कर सब जीवों का शीत निवारण करता है वह सब दुःखों से छूट कर विष्णुलोक में जाता है।

संवत् २००३ शाकः १८६८ माघ कृष्णपक्षः २० (सन् १९४६ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः

दे मा.	ति	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हिं. दिं.	अं. जन.	मु. सफ.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले	माघ. कृ ३० यूरेनस. १।२५।१५।४०, नेपच्यून ५।१७।४७।३५
२५।२२	१	बु	२।१०	पू	४८।८	वै	३।५२ ५६।३३	कौ	२।१०	२५	८	१४	कर्के	७।२८	५।३६	८।२३।४४।४७	
क्षयम्	२	बु	५६।५७		०		०		०				०	०	०	० ०	
२५।२४	३	गु	५२।२१	श्ले	४५। ७	प्री	४६।४२	व	२४।२४	२६	९	१५	सिं४५। ७	७।२८	५।३६	८।२४।४८। ६	म. २४।२४ उ. ५२।२१ या. रो. २ राहुः अनु ४ केतुश्च ५६।३३
२५।२५	४	शु	४८।३६	म	४२।५६	आ	४४।३२	ब	२०।३४	२७	१०	१६	सिंहे	७।२८	५।३७	८।२५।४७।३३	उषा. ऽर्कः ५१।२४ श्री गणेशजन्म (सङ्कट चौथ) व्रतम् ❀
२५।२६	५	श	४५।५०	पूफ.	४१।३४	सौ	३८। ७	कौ	१७।१२	२८	११	१७	क' ५६।३८	७।२८	५।३८	८।२५।४८।५४	[❀ चन्द्रोदय रात्रौ ६।२१ प्राचीन टाइम
२५।२८	६	र	४५। ७	उ	४१।१८	शो	३३।३०	ग	१४।५८	२९	१२	१८	कन्यायाम	७।२८	५।३६	८।२७।५०।१३	भ. ४४।७ उ. वक्राग. पुष्य ३ शनिः ५८।२० उ. षा. भौमः १।१७
२५।३०	७	चं	४३।३८	ह	४८।१५	अ	२६।५३	वि	१३।५८	३०	१३	१९	कन्यायाम्	७।२८	५।३९	८।२८।५१।३७	भ. १३।५२ या. अनन्त श्रीजगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती, लोहड़ी
२५।३२	८	मं	४४।२९	चि	४४।२७	सु	२७।२६	बा	१४। २	१	१४	२०	तु १३।२१	७।२८	५।४०	८।२९।५३। ०	सं. मकरेऽर्कः ६।५४ मु. ३० पुण्यं ६।५४ उ.
२५।३३	९	बु	४६।४०	स्वा	४७।५८	धृ	२५।४१	तै	१५।३३	२	१५	२१	तुलायाम्	७।२८	५।४१	९। ०।५४।२३	उषा. ज्ञः २९।४१
२५।३५	१०	गु	४९।५७	वि	५२।३४	शू	२४।५६	व	१८।१८	३	१६	२२	वृ. ३६।३५	७।२८	५।४२	९। १।५५।४५	भ. १८।१८ उ. ४९।५७ या. मकरे भौमः २१।५२
२५।३७	११	शु	५४।२१	अ	५८। ७	ग	२५। ४	ब	२२। ९	४	१७	२३	वृश्चिके	७।२८	५।४२	९। २।५७। ५	ज्ये. भृगुः १।१९ विशा ४ वृश्चिके गुरुः १५।५३ मकरे ज्ञः ३३।२६ §
२५।३८	१२	श	५९।२४	ज्ये	६०। ०	वृ	२६। २	कौ	२९।५२	५	१८	२४	वृश्चिके	७।२७	५।४३	९। ३।५८।२४	तिम्बा ११ व्र. [§ षट् तिला ११ फ्र. स्मा. वै.
२५।४०	१३	र	६०। ०	ज्ये	४।२०	ध्रु	२७। ७	तै	२६।५२	६	१९	२५	ध. ४।२०	७।२७	५।४४	९। ४।५९।४८	प्रदोष व्रतम्
२५।४१	१४	चं	४।५१	मू	१०।५७	व्य	२८।३१	व	४।५१	७	२०	२६	धनुषि	७।२७	५।४४	९। ६। १। ५	भ. ४।५१ उ. ३७।३१ या. अभि. प्र. रविः ४०।५२ सायन कुंभे भानुः १४।५५
२५।४६	१५	मं	१०।१२	पूषा	१७।२५	ह	२६।४२	श	१०।१२	८	२१	२७	म. ३३।५३	७।२७	५।४५	९। ७। २।२२	अभिजि. प्र. ज्ञः ३५।५१
२५।४[illegible]	३०	बु	१५। ०	उषा	२३।१७	व	३०।२८	ना	१५। ०	९	२२	२८	मकरे	७।२७	५।४६	९। ८। ३।३८	मौनी ३० प्रयागस्नाने फलाधिक्यम

माघ. कृ. ८ भौमेष्टम् ०।० दिनगणः ३५६४

सू	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
८	८	८	६	७	३	१	७
२९	२८	२५	९	१३	१३	१६	१६
५३	१०	१६	३२	५९	२५	२६	२७
०	४०	१	१७	५०	२६	७	७
६१	४६	९९	८	५३	५	३	३
२३	०	१८	२२	०	१०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	अ.	व
[illegible]	श्र.	अ	उ.	उ.	उ	व.	श्र
श्र. १	श्र. १	पू.षा. ४	वि. ३	अनु. ४	पु. ४	रो २	उ.भा. ४

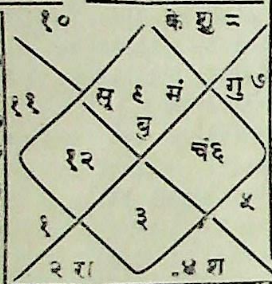

इस पक्ष में गुड़ चावल उड़द घृत तेज रहें। गेहूँ चना जौ पहले कुछ तेज फिर घटाबढ़ी रहे। लालमिर्च मसरी अलसी मंदी रुई तथा बिनौला सरसों तारामीरा का रुख तेज। पश्चिम में खड़ी फसल को हानि, प्रजा में रोग चौर भय हो. यहां रुई और घृत संग्रह करने वाले आगे लाभ उठावेंगे। बागड़ देश में प्रजा को कष्ट होगा यहाँ भारतीय नेताओं की प्रसन्नता का कोई कारण बनेगा। ति. ७ से ३० तक खण्डवृष्टि का योग है।

श. वि — माघ वदी जो पंचमी बादल होवे आन। वर्षा कछु होवे नहीं भादों वर्षा जान॥ माघ वाद जो ६ को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास

माघ. कृ. ३० बुधेष्टम् ०।० दिनगणः ३६०२

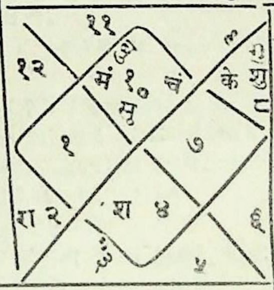

सू	मं	बु	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	९	९	७	७	३	१	७
८	४	७	०	२१	१२	१६	१६
[illegible]	२२	२१	३	२७	४९	१	१
३८	४३	७	४	१३	३	३८	३८
६१	४६	१००	७	५७	५	३	३
१७	२०	०	८	४०	५०	११	११
[illegible]	मा.	पा	मा	मा	व	व.	व
[illegible]	अ	श्र.	उ.	उ	उ	[illegible]	[illegible]
[illegible]	उ.षा. ३	[illegible]	वि ४	ज्ये ३	पु ३	रो. २	उ.भा. ४

माघ मास में मूली छोड़ देनी चाहिए। जो पुरुष माघ मास में प्रातः सूर्योदय के समय किसी सुन्दर नदी में स्नान करता है वह अपने सात कुल और माता पिता के साथ देवशरीर धारण कर स्वर्ग में आनन्द से रहता है। स्नान का मन्त्र यह है—"दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्"। इस प्रकार स्नान करके सूर्य को अर्घ देवे, उसका मन्त्र यह है—"ॐ सवित्र प्रसवित्रं च परं धाम जले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा॥" माघ की अमावस्या को यदि रविवार अथवा नक्षत्र और व्यतीपात हो तो इन चारों योगों के मिलने से १०० सूर्यग्रहणों के समान अर्द्धोदय नामक योग होता है ३ योग मिलने पर महोदय योग होता है। इस वर्ष यह योग नहीं है। षट्तिला एकादशी को तिल मलना तिल स्नान, तिल हवन तिल पान तिल भोजन और तिल दान करने वाले मनुष्य के सब पाप दूर हो जाते हैं॥

यह योग नहीं है। षट्तिला एकादशी को तिल मलना तिल स्नान, तिल हवन तिल पान तिल भोजन और तिल दान करने वाले मनुष्य के सब पाप दूर हो जाते हैं ॥

संवत् २००३ शकः १८६८ माघ शुक्लपक्षः २१ (सन् १९४७ ई०) उत्तरायणम् दक्षिणगोलः, शिशिरर्तुः

माघ. शुक्ल १५ यूरेनस १।२४।५६।३३, नैपच्यून ५।१७।३९।३२

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. माघ	अं. जन	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्ट उदयकाले	
२५।५३	१	गु	१६।३	श्र	२८।२४	सि	३०।४३	ब	१६।३	१०	२३	२६	मकरे	७।२७	५।४७	९। ९। ४।५१	चन्द्रदर्शनम् सूक्ष्मम्
२५।५७	२	शु	२१।५३	ध	३२।२४	व्य	२६।४३	कौ	२१।५३	११	२४	१	कुं ०।२४	७।२६	५।४८	९।१०। ६।७	श्रवणे रविः ४६।४२ श्रवणे ज्ञः ५।५८ रवि उलावल मु. ३
२६।१	३	श	२३।३८	श	३५।१५	व	२७।५६	ग	२३।३८	१२	२५	२	कुंभे	७।२५	५।४९	९।११। ७।१५	भ. ५३।४९ उ. अभि. प्र. भौमः ३९।१२
२६।५	४	र	२४।०	पुभ	३६।४८	प	२५।१५	वि	२४।०	१३	२६	३	मि. २१।२५	७।२५	५।५०	९ १२। ८।२४	भ. २४।० या. उ. भा. ।।।।ऽनृ. ५२ उ. ।ऽ।। ल. चिं
२६।८	५	चं	२३।६	उ	३७।८	शि	२१।३०	बा	२३।६	१४	२७	४	मीने	७।२४	५।५१	९।१३। ९।४२	वसन्त ५ श्री ५ उभा. ।।।।ऽनृ. ।ऽ।। ल. चिं० रे. ।।।।ऽनृ. ५० या ¶
२६।१२	६	मं	२०।५७	रे	३६।१८	सि	१६।४८	तै	२०।५७	१५	२८	५	मेषे ३६।१८	७।२४	५।५२	९।१४।१०।५२	रे. ।।।। ।।।। ल. चिं० [¶ ।।।। ल. चिं०
२६।१६	७	बु	१७।४७	अ	३४।२९	सा	११।१६	व	१७।४७	१६	२९	६	मेषे	७।२३	५।५२	९।१५।११।५४	भ. १७।४७ उ. ४५ ४५ या. रथ ७ (अरुणोदयस्नाने महत्फलम्)
२६।२०	८	गु	१३।४४	भ	३१।५०	शु	५८।३।१०	ब	१३।४४	१७	३०	७	वृ. ४६।०	७।२२	५।५३	९।१६।१३।७	मूला. धनुषि च भृगुः ३२।४२ श्रवणे भौमः २१।५१ भीष्माष्टमी
२६।२४	९	शु	८।५५	कृ	२८।२९	ब्र	५०।४६	कौ	८।५५	१८	३१	८	वृषे	७।२१	५।५४	९।१७।१४।१८	धनिष्ठा. बुधः १६।२४
२६।२७	१०	श	३।३१	रो	२४।४१	ऐं	४३।६	ग	३।३१	१९	१	९	मि. ५२।३७	७।२१	५।५६	९।१८।१५।१३	भ. ३०।२६ उ. ५७।४८ या. जया ११ व्र. स्मा.
क्षयम्	११	श	५७।४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	
२६।३१	१२	र	५१।५३	मृ	२०।३४	वै	३५।१६	व	२५।५०	२०	२	१०	मिथुने	७।२१	५।५७	९।१९।१६।१५	वैष्णवा निम्बा. ११ व्र.
२६।३५	१३	चं	४६।०	आ	१६।२३	वि	२७।२२	कौ	१८।५६	२१	३	११	क. ५८।२३	७।२०	५।५८	९।२०।१७।१३	सोम प्रदोष व्र.
२६।३९	१४	मं	४०।२६	पुन	१२,२२	प्री	१९।४९	ग	१३।१३	२२	४	१२	कर्के	७।१९	५।५९	९।२१।१८।१७	भ. ४०।२६ उ. कुंभे ज्ञः २।४८
२६।४३	१५	बु	३५।२४	पु	८।३९	आ	१२।१३	वि	७।५५	२३	५	१३	कर्के	७।१९	५।५९	९।२२।१९।१८	भ. ७।५५ या. धनि ऽर्कः ५९।४६ माघस्नान समाप्तिः, सत्यव्रतम्

माघशु० ८ रविवासरे ०।० दिनगणः ३६१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	७	७	३	१	७
१६	१०	२१	१	२९	१२	१५	१५
१३	३६	५	४६	२६	१०	३६	३६
७	३१	०	१९	३७	२८	१५	१५
६१	४६	१०।१८	६	६१	५	३	३
६	४०	४४	५	१६	३०	११	११
नक्षत्र	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
	श्र	श्र.	उ.	उ.	उ.	श्र.	श्र.
श्र.	श्र.	श्र.	वि	ज्ये	पु.	रो	श्र.
२	१	४	४	४	३	३	४

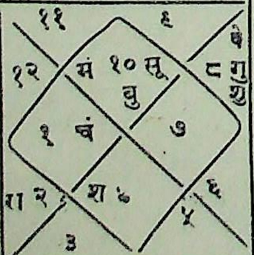

इस पक्ष में गेहूं चना बाजरा के भाव में पहले कुछ घटा-बढ़ी होकर फिर तिथि ५ के बाद बाज़ार तेजी पर रहेगा, तेजी का ध्यान रखने वाले लाभ में रहेंगे। रुई का भाव पहले कुछ तेज रह कर बाद मंदा रहेगा। ति. ७ से खेतियों को किसी प्रकार हानि पहुंचेगी, और प्रजा में रोगभय हो। कहीं वर्षा की झड़ी से हानि, कहीं बादल चाल मात्र होकर हट जावेगी। ति. ३ से ६ व १ २ से १५ तक खंड वृष्टि के योग है।

शकु. वि०—माघ वदी जो पंचमी बादल होवे भान।
वषा कछु होवे नहीं भादव वर्षा जान ॥ १ ॥

माघ. शु० १५ बुधेष्टम् ०।० दिनगणः ३६१६

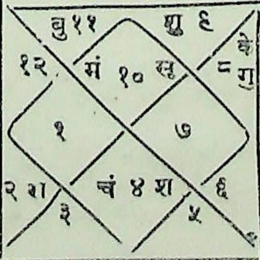

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	१०	७	८	३	१	७
२२	१५	१	२	५	११	१५	१५
१९	१८	४२	२८	४६	३८	१७	१५
१८	११	८	०	४६	१३	१४	१६
६०	४७	७०७	५	६३	५	३	३
०	०	०	२	७	२	११	११
नक्षत्र	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व
	अ.	अ	उ	उ.	उ.	अ.	अ
श्र.	श्र.	ध.	वि	मु.	पु	रो.	श्र.
४	२	३	४	२	३	२	४

शकु. वि.—माघ वदि जो छट को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास ॥ २ ॥
माघ उजाली दूज वा तीज लखो जलधार। चमकै दामिनी जानिये चौमासा भयकार ॥ ३ ॥

माघ शुक्ला सप्तमी को सूर्योदय के समय स्नान करने से सूर्यग्रहण स्नान के तुल्य फल होता है, स्नान मन्त्र यह है—यदा जन्मकृतं पापं यदा जन्मांतरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताऽज्ञाते च ये पुनः ॥ इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याधिसमायुक्ते हर माकरि सप्तमी'। भीष्माष्टमी—माघ शुक्लाष्टमी को जो मनुष्य भीष्म जी को जल देते हैं उनके एक वर्ष के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। मन्त्र यह है—"ॐ वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे" जो मनुष्य शीतकाल में बहुत सी आग जला कर सब जीवों का शीत निवारण करता है वह सब दुःखों से छूट कर विष्णुलोक में जाता है।

सँवत् २००३ शकाः १८६८ फाल्गुन कृष्ण० २२ — (सन् १९४७ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः, शिशिरर्तुः

फाल्गुन कृ० ३० यूरेनस. १।२४।४५।५१, नेपच्यून ५।१७।२४।१३

दि. मा	ति	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	ई. मा.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू.स. रेखे	सू.ग. रेखे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले	
२६।४६	१	गु	३०।४३	श्ले	५।२६	सौ	५।१५ ५८।५३	वा	२।३३	२४	६	१४	सिं. ५।२६	७।१६	६।०	६।२३।२०।१४	[¶ ल. गोधू. वा ६ गु. दा.
२६।५०	२	शु	२७।१	म	३।७	अ	५३।१२	ग	२७।१	२५	७	१५	सिंहे	७।१८	६।१	६।२४।२१।१६	म. ५५।३६ उ. शत. ज्ञः ४९।२५
२६।५४	३	श	२५।१७	पू	१।३	सु	४८।२१	वि	२४।१५	२६	८	१६	क. १५।४८	७।१७	६।२	६।२५।२१।५६	म. २४।१७ या. श्रीगणेश ४ व्र. ङ.फा. ऽरा. ॥॥ऽ रो. ३८ उ.॥॥¶
२६।५८	४	र	२२।४१	उ	०।२	धृ	४४।२६	बा	२२।४१	२७	९	१७	कन्यायाम्	७।१६	६।२	६।२६।२२।५७	पश्चिमोदयं ज्ञः २९।४ ह. ॥॥ऽ रो. ३७या. ॥॥ दि. ल. १२ चं.दा.*
२७।२	५	चं	२२।१६	ह	९।४५	शू	४१।३१	तै	२२।१७	२८	१०	१८	तु. ३२।४३	७।१५	६।३	६।२७।२३।४६	[* गोधू. वा. ६ गु. दा.
२७।५	६	मं	२३।१४	चि	३।४१	गं	३९।३५	व	२३।१४	२९	११	१९	तुलायाम्	७।१५	६।४	६।२८।२४।४२	म. २३।१४ उ. ५४।३३ या.
२७।९	७	बु	२५।३२	स्वा	६।५६	वृ	३८।३९	व	२५।३२	१	१२	२०	वृ. ५५।११	७।१४	६।५	६।२९।२५।३२	पू षा. भृगुः ३।० सं कुम्भेऽर्कः ३४ २२ मु. ४५ पुण्यं १८।२२ उ. ‖
२७।१३	८	गु	२८।५३	वि	११।११	ध्रु	३८।३४	कौ	२८।५३	२	१३	२१	वृश्चिके	७।१३	६।५	१०। ०।२९।२०	[‖ श्रीसीताजन्म ८ निशीथव्यापिनी ग्राह्या
२७।१७	९	शु	३३।२०	अ	१९।३६	व्य	३९।१७	तै	१।६	३	१४	२२	वृश्चिके	७।१२	६।६	१०। १।२९।७	अनु. १ गुरुः १५।०
२७।२१	१०	श	३८।२६	ज्ये	२२।४८	ह	४०।३१	व	५।५३	४	१५	२३	ध. २२।४८	७।११	६।७	१०। २।२७।५०	म. ५।५३ उ. ३८।२६ या. धनि. भौमः १७।२५ पू.भा. ज्ञः ४४।४०
२७।२४	११	र	४३।४६	मू	२९।२०	व	४१।५८	व	१०।३७	५	१६	२४	धनुषि	७।११	६।८	१०। ३।२७।३१	विजया ११ व्र. सर्वे.
२७।२८	१२	चं	४६।६	पु	३५।५१	सि	४३।२०	कौ	१६।२७	६	१७	२५	म. ५२।२३	७।१०	६।८	१०। ४।२९।१२	
२७।३२	१३	मं	५३।४८	उ	४२।०	व्य	४४।१८	ग	२१।२७	७	१८	२६	मकरे	७।९	६।९	१०। ५।२९।५१	म. ५३।४८ उ. सा. मीने भानुः ४९।१ भौम प्रदोष व्र.
२७।३६	१४	बु	५७।४२	श्र	४७।१३	व	४४।४०	वि	२५।४५	८	१९	२७	मकरे	७।८	६।१०	१०। ६।३०।२९	म. २५।४५ या. शतऽर्कः ९।२८ श्रीमहाशिवरात्रि व्र.
२७।४१	३०	गु	६०।०	ध	५१।३२	प	४४।९	व	२९।३	९	२०	२८	कु. १९।२२	७।७	६।११	१०। ७।३१।९	
२७।४६	३०	शु	०।२५	श	५४।४१	शि	४२।५१	ना	०।२५	१०	२१	२९	कुम्भे	७।६	६।१२	१०। ८।३१।३९	

फाल्गु. कृ. ८ गुरावित्रम् ०।० दिनगणः ३९२४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१०	७	८	३	१	७
०	२१	१५	३	१४	११	१४	१४
२९	२३	३९	१४	२३	३	५२	५२
२०	२९	१६	५४	५०	४९	११	११
६०	४७	०	४	६४	४	३	३
५५	२४	५४	३	३	३०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व
अ.	उ.	ह.	ह.	उ	अ.	अ.	
घ. ३	- ४	श. ३	वि. ४	पूष १	पु. ३	रो. २	[illegible] ४

इस पक्ष में व्यापार में विशेष घटाबढ़ी चलेगी, रुई से १०।१५ की मंदी, घृत मसूर लालमिर्च तेज हों। गेहूं चना आदि का भाव सस्ता रहेगा, सूत कुछ तेज होकर मन्दा हो जायगा। सोना चांदी में घटाबढ़ी चलेगी, रेशमीवस्त्र तिलतेल का भाव कुछ तेजी पर रहेगा। बजरा पहले तेज होकर गिरेगा। वायु प्रबल चले वृक्ष टूटेंगे। विदेशीय अनेक नई नई वस्तुएँ बाजार में देखने में आवेंगी। ति. ३ से ११ तक कई प्रान्तों में बूंदा बांदी हो, वायु का जोर रहे।

श० त्रि० फाल्गुन सुदी जो सप्तमी वर्षा महाघन छाय। पंचम नव आसोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय धान्य ८वें मास में निश्चय महगा होय॥

फाल्गु. कृ. ३० भृगाविष्टम् ०।० दिनगणः ३९३२

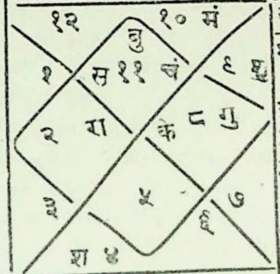

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१०	७	८	३	१	७
८	२७	२९	३	२३	१०	१४	१४
३१	५०	४५	५२	९	२९	२६	२६
३९	४७	४९	४८	१	५४	२४	२४
६०	४७	६४	३	६६	४	३	३
३७	३.	३	०	५२	ः	११	११
[illegible]	मा	मा	मा.	मा.	व.	व.	व.
अ	ह	ह.	ह.	उ.	अ.	अ.	
श. १	ध. २	पूभ ३	अ. १	[illegible]	पु ३	रो. २	[illegible] ४

फाल्गुन कृष्ण में शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिये इससे मनुष्य का कल्याण होता है। चाहे सौर हो अथवा वैष्णव या किसी और देवता के मानने वाला ही क्यों न हो वह शिवरात्री व्रत के बिना किसी भी देवता की पूजा के फल को प्राप्त नहीं होता। शिवरात्री की चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी ही ग्रहण करनी चाहिये। क्योंकि उस दिन रात्री में जागरण करना होता है। और भी लिखा है कि जन्माष्टमी और शिवरात्री पूर्वविद्धा ही करनी चाहिये और पारण तिथि नक्षत्र के अन्त में करना चाहिये यहां चतुर्दशी में ही पारण करने में भी कुछ दोष नहीं अपितु पुण्य ही है ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है।

और शिवरात्री पूर्वविद्धा ही करनी चाहिये और पारण तिथि नक्षत्र के अन्त में करना चाहिये यही चतुर्दशी में ही पारण ...
धर्मशास्त्र की आज्ञा है।

संवत् २००३ शकः १८६८ फाल्गुण शुक्ल० २३										हिं	अं.	मु	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	सूर्यस्पष्टः
दि. मा	ति.	वा.	घ प.	न	घ प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प	क्रान्ति	क्रान्ति	[illegible]	सञ्चारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
२७।५१	१	श	१।५६	पू	५६।३२	सि	४०।२७	ब	१।५६	११	२२	३०	मी. ४३।४	७।५	६।१३	१०।६।३२।१७
२७।५६	२	र	२।१२	उ	५५।६	सा	३७।५	कौ	२।१२	१२	२३	१	मीने	७।३	६।१४	१०।१०।३२।४५
२८।१	३	चं	१।१०	रे	५६।३४	शु	३२।४३	ग	१।१०	१३	२४	२	मे. ५६।३४	७।२	६।१४	१०।११।३३।११
अवम्	४	चं	५८।५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
२८।६	५	मं	५५।३५	अ	५४।५७	ध्रु	२७।३०	व	२७।१५	१४	२५	३	मेषे	७।१	६।१४	१०।१२।३३।३५
२८।११	६	बु	५२।२६	भ	५२।३३	व्या	२१।३३	कौ	२४।०	१५	२६	४	मेषे	७।०	६।१५	१०।१३।३३।५६
२८।१६	७	गु	४६।३०	कृ	४६।१८		१८।५४	ग	१६।२८	१६	२७	५	वृ. ६।४४	६।५६	६।१६	१०।१४।३४।१६
२८।२१	८	शु	४१।६	रो	४५।३७	वै	७।३२ ५६।३८	वि	१३।४८	१७	२८	६	वृषे	६।५८	६।१७	१०।१५।३४।४०
२८।२६	९	श	३५।११	मृ	४१।३४	प्री	५२।५४	वा	८।१२	१८	१	७	मि. १३।३५	६।५६	६।१८	१०।१६।३४।५५
२८।३०	१०	र	२९।२०	आ	३७।२२	आ	४४।३१	तै	२।१९	१९	२	८	मिथुने	६।५४	६।१८	१०।१७।३५।१३
२८।३५	११	चं	२३।२८	पुन	३३।१८	सौ	३६।४८	वि	२३।२८	२०	३	९	क. १९।१९	६।५३	६।१९	१०।१८।३५।२९
२८।४०	१२	मं	१७।५०	पु	२९।२३	शो	२८।२१	वा	१७।५०	२१	४	१०	कर्के	६।५२	६।२०	१०।१९।३५।३६
२८।४५	१३	बु	१२।३८	श्ले	२५।१५	अ	२२।१५	तै	१२।३८	२२	५	११	सिं. २५।१५	६।५१	६।२१	१०।२०।३५।४५
२८।५०	१४	गु	८।६	म	२३।४०	सु	१५।४३	व	८।६	२३	६	१२	सिंहे	६।४९	६।२१	१०।२१।३५।५३
२८।५५	१५	शु	४।५	पू	२१।५६	धृ	९।५२	ब	४।५	२४	७	१३	क. ३६।४६	६।४८	६।२२	११।२२।३६।१

(सन् १९४७ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः, वसन्तर्तुः

फाल्गुन शु० १५—यूरेनस १।२४।४८।४५, नेपच्यून ५।१७।५।१०

चन्द्रदर्शनम्
कुंभे भौमः ४२।३५ रवि उलाविर मु. ४ मेला श्रीबाबा बालकनाथ ‡
भ. ३०।२ उ. ५८।५५ या. उ.षा. भृगु. ८।५७
[‡ देवट सिद्ध उ. भा. ।ऽ।।ऽ अ. ।।।। ल. ६ गु. द्वा. आवश्यके
मीने बुधः १४।०४ वक्रीज्ञः ३४।१७
वक्रग. कुम्भे ज्ञः ५५।१८
भ. ४६।३० उ. वक्रग. पुष्य २ शनिः ४३।० मकरे भृगुः ४।२५
भ १३।४८ या. होलाष्टकारम्भः
पश्चिमास्तं ज्ञः २१।५६ मार्चे ३ ता. ३१
भ. ५६।२४ उ
भ. २३।२८ या. आमला ११ व्र. सर्वे.
शत. भौमः १७।३४ पूभा.ऽर्कः २४।१० भौम प्रदोष व्र.
अभिजि. भृगुः २६।५
भ. ८।६ उ. ३६।६ या होलिकादहनं भद्रोत्तरम्
धूलिवन्दनं चाण्डाल स्पर्शनम्

फाल्गुन शु० ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ३६३९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	७	६	३	१	७
१५	३	२६	४	१	१०	१४	१४
३४	१८	४६	१४	३	१	४	४
४०	३९	०	५८	१	०	५३	५३
६०	४८	५	२	६७	३	३	३
२४	०	६	३	५२	४५	११	११
क्रान्तिस्पष्टी	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श. ३	ध. ३	पू.भा. ३	उ.भा. ४	उप २	पु ३	रो. २	उ.भा. ४

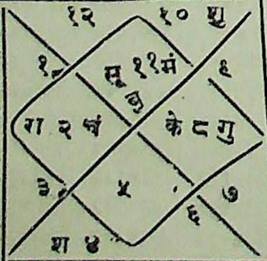

इस पक्ष मे गेहूँ चावल सरसों गुड़ खड घृत रुई तेज रहें। ति.७ के बाद अगर मन्दा चला तो मन्दी भी खूब आवेगी। जिससे मनचले व्यापारियों को हानि हो और रुपये की तंगी का अनुभव होगा। ति. ८ से चान्दी में तेजी, अनाज के भाव में घटा-बढ़ा, रुई का भाव समान, देशान्तर में हल चल, राजा प्रजा में वैमनस्य ति. ९ को एकाएक रुई में १०।२० मन्दे। ति. २ से ७ व ९ से १४ तक पश्चिमोत्तर भारत में कहीं २ वायु वर्षा होगी।

शा० वि०—फाल्गुन वदी तीज को जान। दीखे मेघपवन प्रमान।
आसोज शुदी में वर्षा होय। रात दिना वर्षे मन मोय ॥

फाल्गुन शु० १५ भृगाविष्टम् ०।० दिनगणः ३६४६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	७	६	३	१	७
२२	८	२६	४	९	९	१३	१३
३६	१३	१२	२६	१०	२६	४१	४१
१	३१	४	७	५१	७	५४	५४
६०	४७	५३	१	६८	४	३	३
८	४०	७	५	५८	१०	११	११
क्रान्तिस्पष्टी	मा	व	मा.	मा.	व.	व.	व
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
पू.भा. ४	श. १	पू.भा. ३	उ.भा. ४	उ.भा. ४	पु २	रो. २	उ.भा. ४

फाल्गुन कारी दूज दिन निर्मल रहे आकाश। श्रावण भादों जल बहु सुधर जाय चौमास ॥

फा.शु. १५ को शाम के वक्त भद्रारहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिये। होली के दाह के समय यदि पूर्व की हवा हो तो राजा प्रजा में सुख, नैऋत्य कोण की हो तो दुर्भिक्ष, पश्चिम उत्तर और ईशान की हो तो सुभिक्ष सुख, अग्निकोण की हो तो अग्निभय, वायव्य कोण की हो तो वायु अधिक, ऊपर की हो तो भय और यदि चारों तरफ़ की ज़ोरदार हवा चले तो राजाओं म युद्ध और प्रजा का नाश होता है। भद्रा में होली का दाह करने से राष्ट्रनाश और नगर को हानि होती है अतः भद्रा में होली नहीं जलाना चाहिये। फिर दूसरे दिन 'वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वं पाहि नो देवि विभूति भूतिदा भव" इस मन्त्र से भस्म धारण करे।

सम्वत् २००३ शकः १८६८ चैत्र कृष्णपक्षः २४

(सन् १९४७ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः वसन्तर्तुः

दि मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हिं. ग्रु.	अं. मा.	मु. अ.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सूर्यस्पष्टः उदयकाले
२६।०	१	श	६।४०	उ	२१।१४	शू	५३।३०	कौ	१।४०	२५	८	१४	कन्यायाम्	६।४७	६।२३	१०।२३।३६।७
२६।५	२	र	०।५	ह	२१।४०	गं	०।१ ५७।२२	ग	०।५	२६	९	१५	तु. ५२।३१	६।४६	६।२४	१०।२४।३६।५
अवम्	३	र	५६।४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ०
२६।१०	४	चं	६०।०	चि	२३।२२	धु	५५।२२	ब	३०।४६	२७	१०	१६	तुलायाम्	६।४४	६।२४	१०।२५।३६।११
२६।१५	४	मं	०।३८	स्वा	२६।१८	व्या	५५।१८	वा	०।३८	२८	११	१७	तुलायाम्	६।४३	६।२५	१०।२६।३६।८
२६।२०	५	बु	२।५६	वि	३०।२५	ह	५४।४	तै	२।५६	२९	१२	१८	वृ १४।२३	६।४२	६।२६	१०।२७।३६।५
२६।२५	६	गु	६।१९	अ	३५।३८	व	५४।४०	व	६।१९	३०	१३	१९	वृश्चिके	६।४१	६।२७	१०।२८।३५।५८
२६।३०	७	शु	१०।४२	ज्ये	४१।३७	सि	५५।४७	ब	१०।४२	१	१४	२०	ध. ४१।३७	६।३९	६।२७	१०।२९।३५।४९
२६।३५	८	श	१५।४७	मू	४८।६	व्य	५७।१७	कौ	१५।४७	२	१५	२१	धनुषि	६।३८	६।२८	११।० ।३५।३८
२६।४०	९	र	२१।१०	पूषा	५४।४०	व	५८।४६	ग	२१।१०	३	१६	२२	धनुषि	६।३८	६।२९	११।१ ।३५।२४
२६।४५	१०	चं	२६।२२	उषा	६०।०	प	५९।५६	वि	२६।२२	४	१७	२३	म. ११।१३	६।३७	६।३०	११।२ ।३५।९
२६।५०	११	मं	३०।५९	उषा	०।५४	शि	६०।०	वा	३०।५९	५	१८	२४	मकरे	६।३५	६।३०	११।३ ।३४।४७
२६।५५	१२	बु	३३।४५	श्र	६।२५	शि	०।३५	तै	२।५१	६	१९	२५	कुं ३८।४१	६।३५	६।३१	११।४ ।३४।३५
३०।०	१३	गु	३७।१९	ध	१०।५७	सि	०।२७ ५२।२९	ग	६।२	७	२०	२६	कुंभे	६।३३	६।३२	११।५ ।३४।२५
३०।४	१४	शु	३८।४६	श	१४।२२	शु	५७।२५	वि	८।१	८	२१	२७	मी. ५९।५४	६।३१	६।३२	११।६ ।३३।४९
३०।९	३०	श	३८।४८	पूभ	१९।३०	शु	५४।२१	च	८।४५	९	२२	२८	मीने	६।३०	६।३३	११।७ ।३३।१९

चैत्र० कृ० ३०—यूरे. १।२५।२।३८, नेपच्यून ५।१९।४२।४

अव. भृगुः २८।५ मेला आनन्दपुर साहब उ.फा.ऽ।ऽ॥ऽ सू. ।ऽ॥ *
भ. २८।५३ उ. ५९।४२ या. ह. ।ऽ॥ऽ चौ. ॥॥ दि. ल. १२ चं. दा.
[* दि. ल. १२ चं. दा., ह. ।ऽ॥ऽ चौ. ॥॥ ल. ७ चं. दा.
श्रीगणेश ४ व्र.
[❁वक्रग. शत ज्ञः २९।४५ मेला शीतला कुराली बार्हस्पत्यमानेन §
[§ शर्वरी संवत्सरारम्भः १३।० (सू. १० २८।४८।५७)
भ. ८।१९ उ. ३८।३० या. रो. १ राहु, अनु. ३ केतुश्च ५३।४३ ❁
सं० मीनेऽर्कः २४।१० मु. १५ पुण्यं ८।१० उ.
पूर्वोदयं ज्ञः ५१।५४
भ. ५३।४६ उ. वक्री गुरुः ८।४८
भ. २९।२२ या उ.भा.ऽर्कः ४५।०
पापमोचनी ११ व्र. सर्वे.
धनि. भृगुः १५।२६
भ. ३७।१९ उ. सा. मेषे भानुः ४१ ३५ प्रदोष व्र. वारुणी १०।५७ उ.
भ. ८।१ या पूर्वोदयं भौमः ५७।१२ पूभा. भौमः ५।२६ मार्गीज्ञः †
[† १७।५ मेला पृथूदक (पिहोवा

चैत्र कृ० ८ मन्देष्टम् ०।० दिनगणः ३६५४

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	११	१०	१०	७	९	३	१	७
	०	१५	१८	४	१८	९	१३	१३
	३५	१२	४६	३४	२४	१८	१६	१६
	३५	४६	५५	३२		३	१३	२९
	५९	४७	४९	०	१९	२	३	३
	५२	२०	१२	१	५०	३०	११	११
सौरपक्षीय		सा.	व.	सा.	सा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
		श. ३	श. ४	[illegible]	श्र. ३	पु. २	रो. १	अनु ३

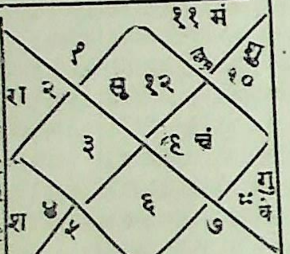

इस पक्ष में गेहूँ चना जौ चावल खण्ड गुड़ पहले कुछ मंदा रह कर फिर कुछ तेज रहेगा। सूत रुई का भाव घटाबढ़ी में रहेगा ति. ९ से तेजी रहेगी, फाल्गुन शु. कृ. ति. ८ को जो भाव रुई व अनाज का हुआ होगा, वही भाव यहाँ ति. ९ के लग-भग होगा। कृषकों और पशुओं को पीड़ा रहेगी, ति. १४ के बाद कहीं टिड्डी से हानि हो, खेतियों में चूहे भी कष्ट देंगे। ति. ९।१०।११।१२।१४।३० को वायु के साथ बादल बूंदा बांदी कहीं २ होगी॥ चन्द्रमौलि शङ्कर चरण वार २ शिर नाय। संवत् यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय॥

चैत्र कृ० ३० मन्दे मू ०।० दिनगणः ३६६१

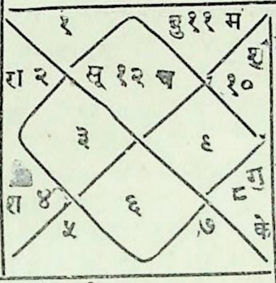

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	११	१०	१०	७	९	३	१	७
	७	२०	१९	४	२९	९	१२	१२
	३३	४२	१	२८	३२	६	५४	५४
	१९	४६	९	२६	२	१४	५३	५३
	५६	४७	५	०	७०	१	३	३
	३७	०	४	५९	५२	४०	११	११
सौरपक्षीय		सा	सा.	व.	सा.	व.	व.	व
		उ.	उ.	उ.	स.	उ.	अ.	अ.
	ला भा	पू. भा. २	श. ३	अनु ८	ध. १	पु. २	रो. १	अनु ३

शकुन विचार—चैत वदी सातें दिना मेघ झुके आकाश। लाल वस्तु महंगी बिके फल होवे दो मास॥
चैत्र वदि प्रतिपदा को गर्जे मेघ अपार। श्रावण भाद्रव के विषे अनावृष्टि निरधार॥

चैत्र कृ० १ चन्द्रवार को "आम्रमग्रयं वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये" इस मन्त्र से आम की मञ्जरी खाने और चाण्डाल स्पर्श करने का बड़ा माहात्म्य है। चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को यदि शतभिषा नक्षत्र हो तो वारुणीपर्व होता है और यदि १३ को शनिवार शतभिषा भी हो तो महावारुणी पर्व होता है। शनिवार और शतभिषा नक्षत्र और शुभ योग भी हो तो महा महावारुणी पर्व होता है। इन वारुणी और महावारुणी पर्वों में गङ्गास्नान करने से अक्षय पुण्य और शुभ लोकों की प्राप्ति होती है।

शनिवार शतभिषा भी हो तो महावारुणी पर्व होता है। शनिवार और शतभिषा नक्षत्र और शुभ योग ...
पर्वों में गङ्गास्नान करने से अक्षय पुण्य और शुभ लोकों की प्राप्ति होती है।

सूक्ष्म दैनिक बुध

ति.वा. चैत्रशु०पक्ष १	ति.वा. वै. कृ. पक्ष २	ति.वा. वै० शु. पक्ष ३	ति.वा. ज्ये०कृ० प० ४	ति.वा. ज्ये०शु प० ५	ति वा.आषा०कृ०प०६	ति.वा.आषा०शु०प०७	ति.वा.श्राव०कृ०प० ८
१ बु. ११।६। ६।५४	१ बु ११। ७।२०।३१	१ बृ. ११।२२।४०।४७	१ शु. ०।१६।४१।३९	१ शु. १।१५।३१।५७	१ श. २।१६।४४।४२	१ र. ३। ९।५९।४५	१ चं. ३।२२।३६।३३
२ बु ११।५।३६।३०	२ गु. ११। ८। ३।४४	२ शु. ११।२४। ३।२३	२ श. ०।१८।३३।२६	२ श. १।१७।४४।१७	२ र. २।१८।३४।३६	३ चं. ३।११।१२। ५	२ मं ३।२२।५७।३३
३ गु. ११।५।११।५०	३ शु ११। ८।४६। २	३ श. ११।२५।२५।१३	३ र. ०।२०।२७।४४	३ र. १।१९।५३।५०	३ चं. २।२०।२२।३८	४ मं. ३।१२।२२।३१	३ बु. ३।२३।१२।२०
४ शु. ११।४।५१।५६	४ श. ११। ९।३३।५०	४ र. ११।२६।४८।३४	४ चं. ०।२२।२३।४६	४ चं. १।२२। ६।२३	४ मं. २।२२। ७।१३	५ बु. ३।१३।२९।३६	४ गु. ३।२३।२२।३८
५ श. ११।४।३८।१४	५ र. ११।१०।२३। ७	५ चं. ११।२८।१९।२५	५ मं. ०।२४।२१।१९	५ मं. १।२४।१६।५५	५ बु. २।२३।४९।४४	६ गु. ३।१४।३४।११	५ शु. ३।२३।३०।२५
६ सू. ११।४।३०।२२	६ चं. ११।११।१५।५५	७ मं. ११।२९।४९।२१	६ बु. ०।२६।२१। ७	६ बु. १।२६।२८।२८	६ गु. २।२५।२९।४४	७ शु. ३।१ ।३५। ३	६ श. ३।२३।३ ।२८
७ चं. ११।४।२६।३७	७ मं. ११।१२। ९।५७	८ बु. ०। १।२१।२७	७ गु. ०।२८।२५। ९	७ गु. १।२८।३७।१५	७ शु. २।२७। ८।३४	८ श. ३।१६।३२।५०	७ र. ३।२३।२९।२१
८ मं. ११।४।३७।२१	८ बु. ११।१३।१२।४५	९ बृ. ०। २।५६।४८	८ शु. १। ०।२५। ३	८ शु. २। ०।४५।१८	८ श. २।२८।४४।३६	९ र. ३।१७।२८।२६	८ चं. ३।२३।१९। ३
९ बु. ११।४।३९।२१	९ गु. ११।१४।१५।४७	१० शु. ०। ४।३०।१८	९ श. १। २।३५।४१	९ श. २। २।५२।१८	९ र. ३। ०।१७।३९	१० चं. ३।१८।१८।५४	९ मं. ३।२३। ६। ६
१० गु. ११।४।५४। ०	१० शु. ११।१५।२१।३५	११ श. ०। ६।१२।१६	१० र. १। ४।३९।२०	१० र. २। ४।५७।२७	१० चं. ३। १।४८।२६	११ मं. ३।१९। ८।३०	११ बु. ३।२२।४८।२३
११ शु. ११।५। ८।१७	११ श. ११।१६।३०।४३	१२ र. ०। ७।५०।२०	११ चं. १। ६।४६।२९	११ चं. २। ७।५९।४५	११ मं. ३। ३। ६।५९	११ बु. ३।१९।५२।३४	१२ गु. ३।२२।२४।५६
१२ श. ११।५।२५।१७	१२ र. ११।१७।३९।२५	१३ चं. ०। ९।३२।२९	१२ मं. १। ८।५७। ७	१२ मं. २। ९।१०।४३	१२ बु. ३। ४।३२।१७	१२ गु. ३।२०।३३।२९	१३ शु. ३।२१।५७।२९
१३ सू. ११।५।४८।४०	१३ चं. ११।१८।४८।५८	१४ मं. ०।११।१९।३७	१३ बु. १।१०।५९।१९	१३ बु. २।११। ०।११	१३ गु. ३। ६। ५।३७	१३ शु. ३।२१। ९।२	१४ श. ३।२१।२६। ७
१४ चं. ११।६।१६।१६	१४ मं. ११।२०। ४।३६	१५ बु. ०।१३। २।१८	३० गु. १।१३।२२।१५	१४ गु. २।१२।५९।५७	१४ शु. ३। ७।२९। ४	१४ श. ३।२१।४२।४९	३० र. ३।२०।५०।२८
१५ मं. ११।६।४५।१८	३० बु. ११।२१।२०।५७	१५ बृ. ०।१४।४०।५४		१५ शु. २।१४।५१।१०	३० श. ३। ८।४३।५४	१५ र. ३।२२।११।३९	

ति.वा. श्राव. शु.प.९	ति.वा. भाद्र.कृ.प. १०	ति.वा. भाद्र. शु.प.११	ति.वा.आश्वि.कृ प.१२	ति.वा.आश्वि.शु.प.१	ति.वा.कार्ति.कृ.प.१४	ति.वा.कार्ति.शु.प.१५	ति.वा. मार्ग.कृ.प.१६
१ चं. ३।२०।१३।१८	१ मं ३।१२। ३। ७	१ मं. ३।२३।३८।४९	१ गु. ४।२२।५७।४९	१ गु. ५।१८।४९।४३	१ शु. ६।११।४७।२१	१ शु. ७। ०।५३।४६	१ र. ७।१४।१४।२५
२ मं ३।१९।३१।५४	२ बु. ३।१२। ७।२४	२ बु. ३।२५।१३।४५	२ शु. ४।२४।५२।६	२ शु. ५।१९।४३।३३	२ श. ६।१३।१६। १	२ श. ७। २। ६।२७	२ चं. ७।१४।२०।४३
३ बु. ३।१८।४८।४४	३ गु. ३।१२।१९।१२	३ गु. ३।२६।५३।१८	३ श. ४।२६।४४।१५	३ श. ५।२१।३३।३०	३ र. ६।१४।४४।४८	२ र. ७। ३।१८।१२	४ मं. ७।१४।१७।४५
४ गु. ३।१७।५४।३५	४ शु. ३।१२।३८।१४	४ शु. ३।२८।३४।५०	४ र. ४।२८।३६।११	४ र. ५।२३।१२। ५	४ चं. ६।१६। ८।५१	३ चं. ७। ४।२८। ३	५ बु. ७।१४। ४।३३
५ शु. ३।१७। ९। २	५ श. ३।१३। ३।४७	५ श. ४। ०।२१।२३	५ चं. ५। ०।२६।२९	५ चं. ५।२४।५०।११	५ मं. ६।१७।३४।३८	४ मं. ७। ५।३४।२९	६ बृ. ७।१३।४४।३०
६ श. ३।१६।२३।५२	६ र. ३।१३।३४।३५	६ र. ४। १।५८।५५	७ मं. ५। २।१७। १	६ मं. ५।२६।२६। २	६ बु. ६।१८।५८।५९	५ बु. ७। ६।३९।२०	७ शु. ७।१३। ८।१३
७ र. ३।१५।४०। १	७ चं. ३।१४।१७।३७	७ चं. ४। ३।४६।४३	८ बु. ५। ४।१७। ४	७ बु. ५।२८। १।४९	७ बृ. ६।२०।२२।५९	६ बृ. ७। ७।४१।२५	८ श. ७।१२।२२।४०
८ चं. ३।१४।५७।२४	८ मं. ३।१४।५९। ७	७ मं. ४। ५।५१।४६	९ गु. ५। ५।५५। ७	८ गु. ५।२९।३६।४९	८ शु. ६।२१।४३।३१	७ शु. ७। ८।४१।५२	९ र. ७।११।२४।१०
९ मं. ३।१४।१६।५४	९ बु. ३।१५।५७।३३	८ बु. ४। ७।४९।४६	१० शु. ५। ७।४१।४४	९ शु. ६।१ ।१०। ३	९ श. ६।२३। ६।३४	८ श. ७। ९।३८।३९	१० चं. ७।१० २२ १९
१० बु. ३।१३।५१। ५	१० बृ. ३।१६।५२।१८	९ गु. ४। ९।३९।५५	११ श. ५। ९।२७।२७	१० श. ६। २।४४।३३	११ र. ६।२४।२८।२१	९ र. ७।१०।३८।१५	११ मं. ७। ९।१४।१५
११ बृ. ३।१३।१५। ८	११ शु. ३।१८।११।४१	१० बृ. ४।११।३९। ०	१२ र. ५।११।१२।४४	११ र. ६। ४।१६।५४	१२ चं. ६।२५।४७।२४	१० चं. ७।११।२०।५४	१२ बु. ७। ८। ४।१५
१२ शु. ३।१२।४८।३५	१२ श. ३।१९।२२। ५	११ श. ४।१३।३२। ९	१३ चं. ५।१२।५६।४१	१२ चं. ६। ५।४८।५७	१३ मं ६।२७। ५।५६	११ मं. ७।११।५४।४७	१३ गु. ७। ६।३६।१७
१३ श. ३।१२।२०।१९	१४ र. ३।२०।४१।४७	१२ र. ४।१५।२९।५८	१४ मं. ५।१४।३९।३२	१३ मं. ६। ७।२०। ३	१४ बु. ६।२८।२२।५९	१२ बु. ७।१२।४५।११	१४ शु. ७। ५।१५।३७
१४ र. ३।१२।१५।१७	३० चं. ३।२२। ८।४३	१३ चं ४।१७।२३।२०	३० बु. ५।१६।३३। ७	१४ बु. ६। ८।५०।१५	३० बृ. ६।२९।३८।५६	१३ बृ. ७।१३।१५।३४	३० श. ७। ४। ४।१९
१५ चं. ३।१२। ५। ७		१४ मं. ४।१९।१८।४४		१५ गु. ६।१०।१९।१७		१४ शु. ७।१३।३७।३८	
		१५ बु. ४।२१।१२।१६				१५ श. ७।१३।५८।३८	

सूक्ष्म दैनिक बुध

ति.वा. मार्ग.शु.प. १७	ति. वा.पौ. कृ. पक्ष १८	ति.वा.पौष.शु. प. १९	ति. वा. माघ कृ.प.२०
१ र. ७। २।३८।१५	१ चं. ७। २।४४।३६	१ मं. ७।२२। ६।५१	१ बु ८।१४।४५।४६
२ चं ७। १।२८।४८	२ मं. ७। ३।४५।२६	२ बु. ७।२३।३४। ०	३ गु. ८।१६।१९।१८
३ मं. ७। ०।२६।५०	३ बु. ७। ४।५१। ६	३ गु. ७।२५। २। ५	४ शु. ८।१७।५३।३६
४ बु. ६।२९।३४ ५३	४ बृ. ७। ५।५८।४१	४ शु. ७।२६।३०।४१	५ श. ८।१९।२८। ५
५ गु. ६।२८ ५४।१०	५ शु. ७। ७। ६।५९	५ श. ७।२७।३७।३१	६ र. ८।२०।५४।२६
५ शु. ६ २८।२३।२८	६ श. ७। ८।२४।३१	६ र. ७।२९।२६।१६	७ चं. ८।२२।३९।४३
६ श. ६।२८। ५ १६	७ र. ७। ९।३९।३४	७ चं. ८। ०।४८।१२	८ मं. ८।२४।१६। १
७ र. ६।२७।४९।३३	८ चं. ७।१०।५६ ३७	८ मं. ८। २।२९।१८	९ बु. ८।२५।५२। ३
८ चं ९।२८।१२।४२	९ मं. ७।१२।१९।२४	९ बु. ८। ४। ०।३३	१० गु. ८।२७।२८।५१
९ मं. ६।२८।३६।३५	१० बु. ७।१३।३७।२७	१० गु. ८। ५।३१।१-	११ शु. ८।२८।५८।५४
१० बु. ६।२९। ०।५९	११ गु. ७।१४।५०।५९	११ शु. ८। ६।५२।२७	१- श. ९। ०।४३।२६
११ गु. ६।२९।३१।२२	१२ शु. ७।१६।२३।५६	१२ श. ८। ८।३४।५६	१३ र. ९। २।२२।२०
१३ शु. ७। ०। ९।५५	१३ श. ७।१७।४८।४६	१३ र. ८। ९।५६।४७	१३ चं. ९। ३। १।२५
१४ श. ७। ०।५७।१३	१४ र. ७।१९।१३।३७	१४ चं ८।११।३९।४६	१४ मं. ९। ५।४१।१६
१५ र. ७। १।४७।४५	३० चं. ७।२०।३९।४३	१५ मं. ८।१३।१२।३१	३० बु. ९। ७।२१। ७

ति.वा माघ शु. पक्ष२१	ति. वा. फा कृ.पक्ष२२	ति. वा. फा.शु.पक्ष २३	ति.वा. चै.कृ. पक्ष २४
१ गु. ९। ९। १।२७	१ गु.१०। ३।५९।५५	१ श.१०।२७।४१।२१	१ श.१०।२५।१५।५७
२ शु. ९।१०।४३।३३	२ शु.१०। ५।१९। ३	२ र. १०।२८।३०। ९	२ र. १०।२४।१६।४०
३ श. ९।१२।२५।५९	३ श.१०। ६।५८।१५	४ चं.१०।२९।१०।४१	४ चं.१०।२३।१-।१२
४ र ९।१४। ८।५०	४ र. १०। ८।४८।४८	५ मं १०।२९।४२।५९	४ मं १०।२२।१७।३०
५ चं. ९।१५।५१।५५	५ चं.१०।१०।३३।२०	६ बु. १०।२९।५४।३४	५ बु १०।२१।१९। ८
६ मं. ९।१७।३५।२-	६ मं१०।१२।१७।३-	७ गु. ११। ०।१५।२८	६ बृ.१०।२०।२४।३५
७ बु. ९।१९।१९।१६	७ बु.१०।१२।५८।२२	८ शु.१०।२९।५९। ०	७ शु.१०।१९।३।१७
८ बृ. ९।२१। ५। ०	८ बृ.१०।१५।३९।१६	९ श १०।२९।५३।५४	८ श.१० १८।४६।५५
९ शु. ९।२२।५०।५४	९ शु.१०।१७।१७।४९	१० र. १०।२९।३३।४७	९ र. १०।१८। ४।२७
१० श. ९।२ ।३६। २	१० श १०।१८।५२।४२	११ चं.१०।२९। ७ ८	१० चं.१०।१७।२८।४५
१२ र. ९।२६।२२। १	११ र. १०।२०।२३। ६	१२ मं.१०।२८।३४।२	११ मं.१०।१६।५९।-७
१३ चं. ९।२८। ९। ४	१२ चं. १०।२२।५०।४७	१३ बु.१०।२ ।१५।४३	१२ बु.१०।१६।३५।१५
१४ मं. ९।२९।५५। ८	१३ मं १०।२३।१३। ८	१४ गु. १०।२७। ५।१६	१३ गु.१० १६ १७। ८
१५ बु.१०। १।४२। ८	१४ बु.१०।२४।२९।४९	१५ शु.१०।२६।१२। ९	१४ .१०।१६। ८।१३
	३० बृ.१०।२५।४१।४६		३० श.१०।१६। १। ९
	३० शु.१०।-६।४५।४९		

दैनिक बुध

सूर्य भौम तथा जीवादि ग्रह समीप की अवधि पर से चालन देकर शुद्ध स्पष्ट किये जा सकते हैं परन्तु बुध की गति का मान अत्यधिक घटना बढ़ना रहने के कारण दिनादि चालन देकर इसे शुद्ध स्पष्ट नहीं किया जा सकता यह निर्विवाद बात मुझे चिरकाल से खटक रही थी क्योंकि जब जन्मपत्रादि में स्पष्ट ही शुद्ध नहीं तो ऐसी स्थिति में बुध की षडवर्गशुद्धि लगा कर फलित कहना हास्यास्पद मात्र ही तो है। दूसरे बुध के व्यापाराधीश होने के कारण दैनिक तेजी मंदी पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है एतदर्थ बुध को स्पष्टार्कोदय कालिक दैनिक सूक्ष्म करके लगाने का कठिन प्रयास किया है। तेजी मन्दी देखने वाले और जन्मपत्र-लेखकों के लिये दैनिक बुध विशेष लाभदायक है। गणित के लिये दो दिन के बुध का अंतर करके जो आवे वही सूक्ष्म गति लेकर घट्यादि चालन बना गोमूत्रिका रीत्यनुसारगति से गुणा कर स्पष्ट करना चाहिये (तत्कालभवस्तथा घटिकान्या खरसैर्लब्धकलो न संयुतः स्यात्।)

आयुर्निर्णय — १—लग्नेश-अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे; स्थिरे द्विस्वभावे-दीर्घायुः। द्विःस्वभाव-द्विःस्वभावे; चरे-स्थिरे-मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,९ इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है। ३ ४ में पापग्रह हों; पणफर में भी यदि पापग्रह हों तो मध्यायु; इसके अतिरिक्त अल्पायुः।

३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है। वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखलाये गये हैं परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का नाम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिनभर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना; ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को, लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहाँ तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

२० श्रु.१०।-६।१४।१४६

ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

सर्व शुभ कार्यों के लिये वर्जित काल——जन्ममास, जन्मतिथि, जन्म नक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम महापात, विष्कुम्भ और वज्र योग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूलयोग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्यरात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल, पापग्रह का नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४। ८। १२ वाँ चन्द्रमा तथा पाप-ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभकार्यों के लिए साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म——बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देवतीर्थदर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य वार्धक्य में नहीं करना चाहिये॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गुरु शुक्र का बाल्य वृद्धत्व——शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व दो ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्र प्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमगवतिसंगारामकूपादिकृत्ये पट्टविधिमभिषेक जन्म चन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः चौरयात्रां विहाय॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वसत्कार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः——वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरंग महिषोष्ट्रादि कर्म विष्टयां तु सिद्ध्यति॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदाचन कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत्॥ आवश्यके परिहारः—दिवापरार्द्धजाविष्टि पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्कें व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदा अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाऋक्षान्तरे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहे कदा मेषास्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः॥ आवश्यके परिहारः—मघादि पञ्चपादेषु सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शेषां घ्रपु न दोषकृत॥ नीचराशि (मकर) जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादशेषु नोचना॥ यात्रा प्रतिष्ठाश्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यज्ञनश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः—वक्रे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत्॥ अन्य सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)॥

ताराबलविचारः——कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परं चन्द्रबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यारिवधन द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यांशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः॥

अथ शुभाशुभ ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

अथावश्यक मुहूर्त

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,६,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मङ्गल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो और रजोदर्शनकाल समरात्रि हो ॥

चित्रा पुन. पुष्य अश्विनी नक्षत्र गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४,६,८,६,१४,१५,३० तिथियां, संक्राति का दिन, संध्याकाल, मङ्गल रवि और शनिवार, रजोदर्शनकाल से पहिली चार रात्रियां, ज्येष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अंत की आधी घड़ी, ५, ६, १ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १०, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्म नक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात वैधृतियोग, माता पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापग्रहयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं ॥

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयकालग्नश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रक्खें।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु रवि मङ्गलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ६ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ वें स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं ॥

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है ॥

गर्भरक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये।

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवःस्व सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार वार मधु घृत चटावे, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़ कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. शु. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. ह. श्र. रे. मू. हों तब स्तनपान कराना शुभ है ॥ आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है ॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में १,२,३,५,७,१०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुध वार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं ॥

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्र वार को ४, ६, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास में मास पूरा होने पर भी जलपूजन न करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्म काल से ११ वें या १२ वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ६, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है ॥

और ६ क्वांर भी शुभ है ॥ हों तब शुभ होता है ॥

अथ दोला (झूला) रोहन मुहूर्त्त

६१

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन से रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६।७।६।१०।११ में शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है ॥

निष्क्रमण मुहूर्त्त--स्वा. अश्वि. पुष्य ह. मू. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्रपूजनपूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशनमुहूर्त्त- पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में, शुभ दिन में बालक के कर्धनी (कटिसूत्र) बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्रः- रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है ॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त--जन्ममास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७. १०, १३. १५ तिथियों में सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७. ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३. ६. ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पाप ग्रह रहित हो १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारा और स्वाती अशुभ हैं ॥

कर्णवेध का मुहूर्त्त--चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म-मास जन्म-नक्षत्र ४, ९. १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़ कर जन्म से १२ वें दिन या १६ वें दिन या ६ वें, ७ वें ८ वें, मास या विषम वर्षों में. सोम बुध गुरु शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो १, ४, ५ ७, ९, १० वें स्थान में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप हों तुला वृष धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है ॥

कन्या का नासिकाछेदन मुहूर्त्त--कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३. शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिकावेध शुभ है

मुण्डन का मुहूर्त्त--गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़ कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्र वार लग्न तथा नवांशक में. जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़, २, ३. ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये, मृ. रे चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये ॥

मुण्डनकर्म में विशेष--स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो--"यथाकुलधर्मं वः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त--मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल--शनि रवि भौमवार हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ॥

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है ॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट भांड इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं ॥

वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५ वें, या ७ वें वर्ष में, उत्तरायणसूर्य में गणेश विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें ॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा० तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सू० भौम शनिवार हों, ४।६।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० त्रि० आर्द्रा उग्र शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने परोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त—अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१५ ये तिथियें शुभ है

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन वा कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तन्तु (धागा) विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व, ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा. रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधाहन हो तो बुधवार त्याज्य है) शु. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगनाश को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

प्रयोग चक्रम्
सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें

स्थान	न	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्तौ	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनार्थदः
चरणे	४	साधनाद्रिक्तः

मन्त्रदीक्षा मुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा० इन मासों में, शुक्ल पक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियां में, शुभवार में, वृष मि. सिं. कं. तु. ध. मी. लग्न हों लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों, तब मन्त्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चाङ्गशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये ॥

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्—श्रा. आश्वि. का. वै. माघ मार्ग. फा. मासों में २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा सु. शु. बृ. चं. वारों में पुन. पु. स्वा. उ. ३, श्र. ध. श. रे. अ. ह. ऽनु. रो. मृ. चि. ज्ये. नक्षत्रों में (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) लग्नात् ३।६।११ पापः; १।४ ५।७।९।१० सौम्याः; चन्द्रताराऽनुकूले; गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मृत्य्वादियोगरहिते। (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे) प्रारम्भ करना शुभ है।

हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है।

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण:	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ हैं	पंच शलाका में विद्ध	सप्त-शलाका में विद्ध	विष घटीके म.घ्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा	पूफा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जा	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जा	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गो	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उषा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उभा.	गो	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदङ्ग	३२	उफा.	उफा.	३०

हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नव-पञ्चमें (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अङ्क वा चिह्न नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण-महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार न करना चाहिए क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्वर्केताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मसमर्थाङ्कके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजिगोस्वर्णादि दद्याद्द्वेत् ॥

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है ॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट भांड इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं ॥

वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५ वें, या ७ वें वर्ष में, उत्तरायणसूर्य में गणेश विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें ॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा० तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० त्रि० आर्द्रा उत्रा शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने परोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त—अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ ये तिथियें शुभ है

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन वा कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तन्तु (धागा) विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व, ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा. रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य है) शु. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगशाण को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

प्रयोग चक्रम्
सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें

स्थान	न	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्तौ	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनार्थदः
चरणौ	४	साधनाद्वित्तः

मन्त्रदीक्षा मुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा० इन मासों में, शुक्ल पक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियां में, शुभवार में, वृष मि. सिं. कं. तु. ध. मी. लग्न हों लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों, तब मन्त्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चाङ्गशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये ॥

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्—श्रा. आश्वि. का. वै. माघ मार्ग. फा. मासों में २।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा सु. शु. बृ. चं. वारों में पुन. पु. स्वा. उ. ३, श्र. ध. श. रे. अ. ह. अनु. रो. मृ. वि. ज्ये. नक्षत्रों में (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) लग्नात् ३।६।११ पापः; १।४।५।७।९।१० सौम्याः; चन्द्रताराऽनुकूले; गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मृत्य्वादियोगरहिते। (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे) प्रारम्भ करना शुभ है।

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण:	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ हैं	पंच शलाका में विद्ध	सप्त-शलाका में विद्ध	विष घटीके म.घु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा	पूफा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३.	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जा	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जा	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गो	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	वलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उषा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	भ.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उभा.	गो	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदङ्ग	३२	उफा.	उफा.	३०

हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नव-पञ्चमें (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अङ्क वा चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण-महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार न करना चाहिए क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्वर्कताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थाङ्कके।
रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजिगोस्वर्णादि दत्त्वोद्वहेत् ॥

मेलापक सारणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ. १	भ. १	कृ. ।	कृ. ।।।	रो. १	मृ. ।।	मृ. ।।	आ. १	पुन. ।।।	पुन. ।	पु. १	श्ले. १	म. १	पूफा. १	उफा. ।	उफा. ।।।	ह. १	चि. ।।	चि. ।।	स्वा. १	वि. ।।।	वि. ।	अ. १	ज्ये. १	मू. १	पूषा. १	उषा. ।	उषा. ।।।	श्र. १	ध. ।।	ध. ।।	शत. १	पूभा. ।।।	पूभा. ।	उभा. १	रे. १
मेष	अ. १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१७॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ. १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२७॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १३२	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१९॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ. ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१९॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१९॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ. ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो. १	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १	१३॥ १६	१६॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१६ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२८	२६	२७	१९ ३
	मृ. ।।	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१९॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. ।।	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	१९॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२९	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ. १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१९ १४+	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन. ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१९॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन. ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१९॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१९॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१९ ३५	२५ ५+	२४॥ २+
	पु. १	२६॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२६ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले. १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१९ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म. १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१९॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१९ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१९॥ ४	२३॥	१०॥ २	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१६ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा. १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१९॥ ३४	१९॥ -१२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१९॥ ३६	२४॥ -६
	उफा. ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१९ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१९॥ १२	२५॥	१९॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१९॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२९॥ -६	२४॥ -६
कन्या	उफा. ।।।	११ ३६	२१ ६	१९ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१९॥ १२४	२५॥ ४+	१९॥ १२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१९॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह. १	११ २३६	१८॥ ६	१९ ६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१९ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१९ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१९ ३	२६	२६
	चि. ।।	१८॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३४	१८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	९॥ १३४	१२॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३६	२४ -६	१९॥ १६	१९ १	१० १३२	१९

विशेषविशेषः—रोहिण्याद्रीमृगेन्द्राग्नां पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥ जीवे शुक्रे तथा सौम्ये एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ।

मेलापक सारणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनुः			मकर			कुम्भ			मीन		
	स्थानि	अ. १	भ. १	कृ. ।	कृ. ।।।	रो. १	मृ. ।।	मृ. ।।	आ. १	पुन. ।।।	पुन. ।	पु. १	श्ले. १	म. १	पूफा. १	उफा. ।	उफा. ।।।	ह. १	चि. ।।	चि. ।।	स्वा. १	वि. ।।।	वि. ।	अनु. १	ज्ये. १	मू. १	पूषा. १	उषा. ।	उषा. ।।।	श्र. १	ध. ।।	ध. ।।	शत. १	पूभा. ।।।	पूभा. ।	उभा. १	रे. १
तुला	चि. ।।	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१६	११ २	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६८	१२ ६
	स्वा. १	२६ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	६ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१६ ६	२१ ३६
	वि. ।।।	२१	२२ ९	२० ३	१५ ३६	६ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ २	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२६॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि. ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१५॥ ३६	१६॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१६॥ १	१६ १५	१८ १५२	६॥ ३५
	अनु. १	२३॥ -६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१६॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	९॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये. १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२८॥ १	२६॥	१२ ६	२ २१६२	४ ६३	१६॥ ५३	१६ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१६॥ ४	१४॥ ४	१६ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	६॥ १३५	२० १५	२० +५
धनुः	मू. १	१९॥ ३५	१६ १५	२५ ५+	१६॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१६॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१६॥ ४	२८॥	२२॥ ३	१४॥ १२	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा. १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१६॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१६ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१६ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १२	२३॥ १	२८॥	२६॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा. ।	२४ ५+	२५॥ ५+	१९॥ १२५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२५ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१६ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२६॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा. ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१६॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ४+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३५	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ १४+	१६॥ १४+	२२॥ ४+	२६॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र. १	२८	२७	१६॥ ३२	१२ १५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१६॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ४+	२४ ४+	१७ ५	२४	२२॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२५॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२६॥	२३॥ ३
	ध. ।।	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२१	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	११ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	९॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१४ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध. ।।	१६॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	११ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२६॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३७	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४६
	शत. १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२७ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	११ ६	२५॥	१६॥ १	११॥ १३	१०॥ १२६	१०॥ २३६	१५ ६	१६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४५	३३	२८ ३	२१ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा. ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१६॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१६॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ २+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२६॥	२६॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१६ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१६॥ ४२
मीन	पूभा. ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२+	१६॥ -१४	२६ १	२७	२७	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१६॥ १६	१६ -१५	२४ ५+	६॥ १३५	१४ १३	२८॥	२८॥-	२८॥	२८॥	२८॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा. १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२७	२६॥	३६ ५	१६ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	६ १३२	२ १३६२	१६ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १५	५॥ १३४	२४॥ १५	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे. १	२५ ५+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२७	२६	२७	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१६	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२२ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ ३	२२॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४६	२६॥ +२	३३	२८ ३

विना मेल के विवाहः—अर्थीजिना सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता। स्वयमेवागता कन्या नवास्तां शुद्धमेलकौ। मनसश्चक्षुषोः यस्मिन् वरे यस्यां च योषिति। सन्तोषो जायते यत्र नान्यत्किञ्चिद्विचिन्तयेत्।

मेलापक सारणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ. १	भ. १	कृ. I	कृ. III	रो. १	मृ. II	मृ. II	आ. १	पुन. III	पुन. I	पु. १	श्ले. १	म. १	पूफा. १	उफा. I	उफा. III	ह. १	चि. II	चि. II	स्वा. १	वि. III	वि. I	अ. १	ज्ये. १	मू. १	पूषा. १	उषा. I	उषा. III	श्र. १	ध. II	ध. II	शत. १	पूभा. III	पूभा. I	उभा. १	रे. १
मेष	अ. १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१४॥ ३५	६॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१६॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ. १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१६ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१६ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१६॥ -१६	१६॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १३२	६॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ. I	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१६ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१६ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१६॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ. III	१६ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१६ ३	१६ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	६ ३६	१४ ३६	२३॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो. १	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १	१३॥ १६	१६॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१६ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२६	२६	२७	१६ ३
	मृ. II	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१६ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. II	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१६ +४	२६॥ ४+	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	१६॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१६॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१६ ३	२५ २+	१६॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ. १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१६ १४+	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१६ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१६ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन. III	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१६ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१६॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१६॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन. I	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३६	१६॥ ३	१७॥ ३	१६॥	१६	२६॥	२०॥	१६ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	६॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ ५+
	पु. १	२६॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२६ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१६ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले. १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१६	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१६॥ १	१६॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१६ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म. १	१६ +५	१६ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	६॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१६ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा. १	२५ ५+	१७ ३५	१६ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	६॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१६ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	६॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा. I	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१६॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	६॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ -६
कन्या	उफा. III	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२४॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२६॥	२६॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	६॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह. १	११ २३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि. II	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१६॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१६ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१६ १	१० १३२	१६

विशेष:— [illegible] नाडीदोषो न विद्यते ॥ जीवे शुक्रे तथा सौम्ये एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ।

... नाडीदोषो न विद्यते ॥ जीवे शुक्रे तथा सौम्ये एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ।

मेलापक सारणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनुः			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ. १	भ. १	कृ. ।	कृ. ॥।	रो. १	मृ. ॥	मृ. ॥	आ. १	पुन. ॥।	पुन. ।	पु. १	श्ले. १	म. १	पूफा. १	उफा ।	उफा ॥।	ह. १	चि. ॥	चि. ॥	स्वा. १	वि. ॥।	वि. ।	अनु. १	ज्ये. १	मू. १	पूषा. १	उषा. ।	उषा. ॥।	श्र. १	ध. ॥	ध. ॥	शत. १	पूभा ॥।	पूभा. ।	उभा. १	रे. १
तुला	चि. ॥	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१६	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा. १	२६ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ २६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	६ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२३॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१६ ६	२१ ३६
	वि. ॥।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	६ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१६ २	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२६॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि. ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१५॥ ३६	१६॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२२॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१६॥ १	१६ १५	१८ १५२	६॥ ३५
	अनु. १	२३॥ -६	१५॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१६॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१७॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ २	२०	२६॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये. १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२३॥ १	२६॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१६॥ ५३	१६ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१६॥ ४	१४॥ ४	१६ ४	३३॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	६॥ १३५	२० १५	२० +५
धनुः	मू. १	१२॥ ३५	१६ १५	२५ ५+	१६॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१६॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१६॥ ४	२८॥	२२॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा. १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१६॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१६ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१६ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १२	२२॥ १	२८॥	२६॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा. ।	२४ ५+	२५॥ ५+	१२॥ १३५	६ १६६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२५ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१६ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१७ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२६॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा. ॥।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१६॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ १४+	१६॥ १५+	२३॥ ४+	२६॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र. १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ १५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१६॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५	२८	२२॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ५	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२६॥	२३॥ ३
	ध. ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२१	१३ ३	२७	१८॥ ६	७॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	३॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२८॥ +२
कुम्भ	ध. ॥	१६॥	१०॥ १३२	२४॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१६ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२६॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १५	१८ ४+	१८ ३४	[illegible] ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत. १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	११ ६	२४॥	१६॥ १	११॥ १३	१०॥ १२६	१०॥ २३६	१५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२५॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४५	३३	२८ ३	२१ ०१३	८ १३४०	१४॥ १५	१५॥ ४
	पूभा. ॥।	१७॥ ३	२४॥ २+	१६॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१६॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ २+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२६॥	२६॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१६ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१६॥ ४२
मीन	पूभा. ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२+	१६॥ -१४	१६ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१६ -१५	२५ ५+	६॥ १३५	१४ १३	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३७	१५ ३५	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा. १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१६ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	६ १३२	२ १३६२	१६ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२६॥	२६॥	२६॥	१४॥ १५	५॥ १३७	२४॥ १५	६१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे. १	२५ ४+	२२॥ ४+	२०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२७	२४	२७	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२५	२५	१६	१२ ६	१० २६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२३॥ ३	२३॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२४॥ +२	३३	२८ ३

विना मेल के विवाह:—अर्थीजिना सन्धिलब्धा काला स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्तां शुद्धमेलनौ । नेत्रसञ्चक्षुर्षाः यस्मिन् वरे यस्यां च योषिति । सन्तोषो जायते यत्र नान्यत्किञ्चिद्विचिन्तयेत् ।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा । तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है ग्रह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं ।

ग्रह मेलापक विचारः— वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मङ्गल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना. यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मङ्गल हो तो वर का नाशक होता है ।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मङ्गल हो, और कन्या की जन्मकुण्डली में उन्हीं स्थानों में मङ्गल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता । इसी प्रकार एक की कुण्डली में मङ्गल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मङ्गल का दोष दूर हो जाता है । और जितने ग्रह कन्या की कुंडली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जाने । इसी प्रकार कन्या के जन्म लग्न से ७ । ८ स्थान तथा वर का २ । ७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये । और कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार करना अत्यावश्यक है । अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्या-मच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारहायोगजायायुष्मते वराय दद्यात् ।

विवाहार्थ वर के गुण— कुल, शील स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिये ।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य मूर्ख, शूर. मोक्ष का चाहने वाला, बालक, वृद्ध. कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये ।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अङ्गहीन, अतिस्थूल (अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली) झगड़ालू, अन्धी तथा बहिरी (बौली), ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सगाई वर्जित करे ।

वाग्दान—(कुड़माई-सगाई) से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहियें—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव ।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्तामावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभ वार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे, तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़ बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े—"तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे । अव्यङ्गेऽपतितेऽक्लीवे पिता तुभ्यं प्रदास्यति ॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे ।

कन्यावरण मुहूर्त—उ.षा.स्वा. श्र. पूर्वा ३. अनु. ध. कृ. अथवा विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालङ्कार फल पुष्पों से कन्या वरण (सगाई) करना चाहिये ।

विवाहकाल निर्णय—२० वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है । कन्याओं के विवाह विषय में सब धर्मशास्त्र और ऋषियों की एकानुमति है । उक्तञ्च—यदि सा दातृवैकल्याद्रजः पश्येत्कुमारिका । भ्रूणहत्याश्च यावत्यः पतितः स्यात्तदप्रदः (व्यासः) ॥ तस्माद्विवाहयेत् कन्यां यावन्नर्तुमती भवेदिति सम्वर्तः ॥ अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रोपनिनिरन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे । तद्यथा-मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत् । विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः ॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है । यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है । वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता । तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः ॥

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है

वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहाँ दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (-) का चिह्न लिखा हो और उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाई ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार 'राश्याभिधान कल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय पर ही "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वर:" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते है जिसमे अनेक दोष रह जाते हैं नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिए ॥

अथ विवाह मास:—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। वर्ज्योऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्-वदन्तीत्यपरो विशेषः तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥ १॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीड़नम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं सद्भिरत्र इति मन्यते मया ॥ २ ॥

अथ जन्ममांसादिषु निषेध:—सब से जेठे लड़के अथवा सब से बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहार:—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

अथ ज्येष्ठ विचार:—ज्येष्ठ पुत्र कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है, अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़ कर दानादि पूर्वक करे।

अथ विवाहादौ विशेष:—पुत्रोद्वाहात्परं पुत्र्याः कदाचिद्रामषण्मासात्कार्यमुद्वाह-कर्म ॥ न कुर्याद् भ्रातृद्वाहान्मङ्गलादप्यमङ्गलम्। न मुण्डनञ्च कर्तव्यं वर्षमेकाच्छु-भोच्यते। फाल्गुने चैत्रमासे तु पुत्रोद्वाहोपनायनम्। भेदादब्दस्य प्रकुर्वीत नर्तुत्रयविल-म्बनम् ॥

अथ सपिण्डमरणे विशेष:—वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः कस्यचिन्मृतिः। तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत् ॥ अतिसङ्कटे विवाह:—प्रतिकूलेऽपि कर्तव्यो विवाहो मासतः परम्। शान्तिं विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेद् बुधः ॥

विवाहादौ त्रिबल शोधनम्

पूज्य गुरु:-१०।८।३।१
श्रेष्ठ गुरु:-६।५।११।२।७
नेष्ट गुरु: ४।८।१२
श्रेष्ठ रवि:-३।६।१०।११
पूज्य रवि:-१।२।५।७।६
नेष्ट रवि:-४।८।१२
नेष्ट चन्द्र:-४।८ पूज्य चन्द्र:-१२
श्रेष्ठ चन्द्र:-१।२।३।५।६।७।६।१०।११

ध.मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	६	६	५	७	७	-	५	६	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि—रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित तिथिषु शुभम् ॥

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देख कर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र शुद्ध देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबल शुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाह लग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम है। यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं) शुद्धि प्रथम देखे ॥ "झषचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचर:। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु (बृह०)। तुलाराशौ अपूज्यरवि:-धर्मबोधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहार:—गार्ग्याङ्गिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः ॥ (मु० प्र० सा०)।

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त:—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।८।६ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मङ्गल कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण घड़ाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्ध मङ्गल-स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह मुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त अलग दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोष ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षयं	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त लाहा हुआ; इत्यादि सब जानें।

२ पातदोष ज्ञानाय चक्रम

रो.	मृ.	म.	उफा	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाह नक्षत्र
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	सूर्याधिष्ठित नक्षत्राणि
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	त्रि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मृ	अनु	चि	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मृ	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होना है।

इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होना।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोष चक्रम

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	वि.	अनु.	मू.	पूषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्र.	पूभा.	उभा.	पु.	भ.	पुन.	आ.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्र दोष चक्रम

रो	मृ	म	उ	ह	स्वा	अनु	मू	उ	उ	रे	न०
अनु	ज्ये	ध	पू. भा.	उ. भा.	अ	कृ	मृ	पुन	उफ	ह	ग्र न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं, और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं. याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है॥

६ बाणज्ञानाय सुलभ चक्रम

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्याः	वार-वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौत्याज्यम्
वन्हि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवात्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यो

७ एकार्गल दोषः—

व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कुम्भ, शूल वैधृति वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है॥

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है॥

९ क्रांतिसाम्य दोष चक्रम

मे०	वृ०	मि०	क०	कुं०	तु०
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

१० दग्धा तिथि दोष

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
[illegible]	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्ध होती हैं। सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजङ्गं क्रांतिसाम्यञ्च बाणावेधं तथैव च । लग्नहीनविंशाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादि दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जाङ्गले (फ़िरोज़पुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षं कुरुबाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवस्थान) कलिङ्गवङ्गेषु (जगन्नाथपुरी बङ्गाल अयोध्या) च पातितं भम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे: (उज्जैन प्रान्त) च लत्तितंभं त्यजेत्तु विद्ध किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) । मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेष परिहारः—चित्रांगते पात विचित्रदेशे, मैत्रे मघामालवके निषिद्धाः । पौष्णाश्विश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः ॥

युति परिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः । युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम् । तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो नचान्यपादमादरात् (वसिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहैर्या भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य कर्मेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहैर्या च । शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च । मुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहारः (व्यवहारसमुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे । हत्वा जामित्रजदोषं करोति विपुलं सुखम् ॥ मुहूर्तचिंतामण्यावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः । नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पापाः	०	शु	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श. चं.	त्याज्याः
चं. क्रूरा	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं. शुभाः	विद्धभञ्च				गोधूलौ त्याज्याः

सर्वथा लग्न भङ्ग योगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः । लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽकृगुरु सप्तौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंगवन्धादि लग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः, बादरायण—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादयः । गौड़मालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः । "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिन्मते दोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी । दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगानिव गरुडो यथा ॥ मुहूर्त लग्नषड्वर्गकुनवांशमहोद्भवाः । ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्या हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमङ्गिरा ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि ।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह	मुहूर्तगणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	शुभस्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम्
३	५	१½	२	३	२	१½	१½	१½		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नाविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ गोधूलिं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽर्द्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषैस्तु दूषितः ॥ अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्ण चाण्डालादि जातीनां विवाह मुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानुभौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजित्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमास वेध भृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधूप्रवेशः का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर समदिनों में अथवा ५, ७, ९ वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पञ्चाङ्ग शुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. मू. म. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ॥

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः। दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ का मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु वा शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अन्धशुक्र ज्ञानम्—रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः। तावच्छुक्रो भवेदन्धः संमुखे दक्षिणे शुभः ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्। तत्रायं मन्त्रः—

ॐ नमस्ते सर्वलोकेश नमस्ते भृगुनन्दन ! मम सर्वार्थसिद्ध्यर्थं गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥

प्रथम स्त्री-संगम मुहूर्तः—स्त्रीणां रजोदर्शनोत्तरं वा पञ्चदशवर्षोपरि रजो-
७१ दर्शनाभावेऽपि उत्तरा ३. रो. पुष्य. अनु. ह. मृ. चि. स्वा. ध. एषु भेषु, रिक्तामात्रयरहित-
तिथौ, शुभवासरे एकयाम-रात्रोत्तरं प्रथमः पुम्भार्योः सङ्गमः शुभः ॥

नववध्वा पाक कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामात्रयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे, सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवास्त्रीणां वस्त्रपुष्पसुगन्ध भूषणादि धारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु. नूतनवस्त्रसौवर्ण-रत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

रोमज वस्त्र धारण मुहूर्तः—नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि । शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम् । निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ॥

भूषण घट्टन मुहूर्तः—ह. श्र. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामात्रयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्कर त्रिपुष्कर योगे वा भूषणं कार्यम् ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मृ. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु भेषु. चं. बृ. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

द्वयंग (दगोजा) मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः पतिगृहे गमः । पितृगेहे स्थिता या च अ द्वयङ्ग इति कीर्तितः ॥ ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. ध. पुन. अनु. रे. एषु नक्षत्रेषु, सत्तिथौ सुलग्ने विवाहोक्तमासेषु राहोर्दक्षिणपृष्ठगे च सति स्त्रीणां द्वयङ्गः शुभः ॥

द्वयङ्गार्थ राहुदिक् ज्ञानम्	
सूर्य राशि	राहु दिशा
१।६।५	पूर्व
२।६।१०	दक्षिण
३।७।११	पश्चिम
४।८।१२	उत्तर

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा, आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार का शुभ है ।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा. ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मङ्गलवार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ अन्य लग्नों में २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ पाप ग्रह हों. ८ । १२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्यन्त शुभ है ॥

हट्ट चक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नौकरी) मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु, रिक्तारहित तिथौ, र. बु. बृ. श. वारेषु, शुभग्रहे लग्नस्थे, १० । ११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोर्निमैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (वही) पत्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु, रिक्तारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्य प्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १। ४ । ७ । १० लग्नेषु, ६ । ५ । ८ शुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ६ । ५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मङ्गलवार, संक्रान्तिदिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मङ्गलवार का ऋण चुकाना अच्छा है । बुधवार को धन न देना चाहिये । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात, और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्री काशीनाथमते क्रय विक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. अ. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एतद् भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ॥

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः--४।६।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

ग्राम वास चक्रम् ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावद् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखं लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहादि निर्माण में आय विचार —

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो-चार आदि सम संख्या की अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ से अधिक लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न ही चार द्वार वाले घर में। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान--

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लंबाई चौड़ाई के गुणन) को ८ से गुणा कर २७ का भाग देवे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को आठ से भाग देवे शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ॥

वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचारः---

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लंबा एक हाथ गहरा खात बना कर उसको जल से भर देवें प्रातःकाल उसको देखे यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ होता है॥

गृहारम्भ मुहूर्तः--वैशा. श्रा. मार्ग. माघ फाल्गु. सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में चं. बु. बृ. शु. श. वारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें स्थानों में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादिक का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वास्तुचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें		
स्थानानि	न	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वाम कुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	२	पीड़ा असत्

विशेष--पुष्य, उ. ३. रो. मृ. श्र. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्---"संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवमे जोय। दश इक्कीस चौबीस में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटका भूमि-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग वापी कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता॥

गृहमध्ये कूप विचारः---

मध्य	ई	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	पुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुखम्	शत्रुभयं

अथ चुल्लीचक्रविचारः।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर सुख-भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ मुख के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लीचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें॥

यह पुच्छचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें ॥

स्वर शास्त्र का चमत्कार—(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे, पुनः देखे, भगवान को स्मरण कर हाथ चूमे। चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखे। सदैव
७३ ऐसा ही करे। सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे। (२) दिन को बायां और रात को दायां स्वर चलाया करें। भोजन करने के बाद आधा घंटा बाईं करवट लेटें, पाखाना करते और नहाते समय दायां स्वर चलाया करें। जल पीने के बाद दाईं करवट लेटें और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें। रोग पास न फटकने पायेंगे। (३) जिससे कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रखकर बात चीत करें, काम निकल आयेगा। (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जाएगी। (५) शत्रु, रूठे मित्र, या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहिले शनैः शनैः श्वास अन्दर खेंच कर नाभी में ठहरायें उस पुरुष की मूर्ति नाभी में देखें फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकालें, नाभी में बैठी उसकी मूर्ति का ध्यान फिर धरें, श्वास अन्दर खेंचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जायें, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएं पूर्ण होंगी। (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा। (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़निश्चय-पूर्वक पत्र लिखें, अवश्य आशा पूर्ण होगी। (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे। (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन करें, प्रार्थित इच्छाएं पूर्ण होंगी ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ	उ	नै	ई.	द	वा	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्ठेर्मुखघटा५कुर्यो शुभम्'
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामष्वन्त्यम
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ला शुभम

षट्वर्गफलप्रकाश

यह षटवर्ग के फलादेश का अपूर्व ग्रंथ है मू. १।)६०

मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास

सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेयां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष वृष	मि. क. सिं.	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्य	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खातदिशा ज्ञानं	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखा चक्रम्

सूर्य नक्षत्रात्

स्थान	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

नूतन गृहप्रवेशे मुहूर्तः—

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः।
प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिक मासयोः॥

(यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बृ. शु. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२वें चन्द्रमा न हो, ४ था ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शङ्खध्वनि मङ्गलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष फा. मास में शत. पुष्य स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है॥

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य मृ. नक्षत्र हों, चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध वा मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १२वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डित जल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्र जल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रित जल	पश्चिम ३ जल	नैऋ. ३ अमृत जल

गणना क्रमः—मध्य पूर्व आग्नेय दक्षिण आदि क्रमेण बोध्यम् ॥

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्य जलम्	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभावः	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा. शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य अ. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.पूषा.उषा. अमृतजलम्	नैऋत्य. वि. अनुज्ये. बहुजलम्

सूर्यभात्तड़ाग चक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	ने. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति, तत्फलम् वारिवाहे वारिहानिम्। गणनाक्रमः-पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्य वारिवाह।

जलाशयाराम देव प्रतिष्ठा मुहूर्तः—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥ मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ३।६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता विशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरेक्षुद्राद्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः॥

वास्तुशान्ति मुहूर्तः—श्र. ध. श. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहें तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष दो बचने पर पाताल में धन हानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करना। इसके बाद आहुति चक्र ज़रूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहश्रवणगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्ये नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शांतौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः। दुर्गभङ्गगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्मनृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

पापग्रहमुखे हवने कृते शांति—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्रमधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणीधनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना, जिसका भाग शेषाङ्क अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हल प्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा ३. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामापष्ठ्यष्टमी रहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ॥

हलचक्रम्
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनें

३	८	६	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीज वपने राहु चक्रम
राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह० अश्वि० पुष्य उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न भक्षण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. चं. बु. गु. शुक्रवार शुभ है ॥

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—गाय लेना हो तो उ. फा. से दिन-नक्षत्र तक गिने, उसमें से मस्तक पर ३ फल लाभदायक, मुख २ फल हानि, पाद पर ६ फल अर्थलाभ, हृदय में ५ फल सुख, स्तन में ६ फल महालाभ, भग पर १ फल वृद्धि, गुह्य पर ४ फल भय होता है । महिषी लेनी हो तो भी इसी क्रम से शुभाशुभ फल जानो, परन्तु वहां सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने । वृषभ लेना हो तो भी, परन्तु ६ नक्षत्र पद पर धर शेष स्थान में दो दो धरो और गाय के समान फल जानो । (चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया) ॥

सूर्य नक्षत्रात्काष्ठादि (गुदरा) आदि संस्थापन चक्रम

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभयं नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोग भयं नेष्ट	काथकर्म नेष्ट	सुखं शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों शुक्ल पक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है ।। तृण काष्ठादि संग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिये ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूला, जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।६।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा आश्ले, म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेऽप्वपि यात्रायां भरण्यादीनां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१३।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वार लग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो । अन्यच्च—यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित हैं ॥

दिक शूल ज्ञानाय चक्रम् / नक्षत्रशूल चक्रम्

पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चिम	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं.श.	चं.बृ.	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वाराः	ज्ये.	पूभा.	रोहि.	उफा.

दिक्शूल परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य दिवाकरायाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा, गुड़मङ्गारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥ २ ॥

काल ज्ञानम्

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेयां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखे नेष्ट

योगिनीवासचक्रम्

पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा
१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ (मुहूर्त चिन्तामणि में बायें अशुभ, दाहिने शुभ) ॥

समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए ॥

गर्गगुरुअङ्गिरा मुहूर्तः-गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय । भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है । पञ्च पञ्च (५५) उषःकालः सप्तपञ्चा (५७) रुणोदयः । अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवास चक्रम्

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन्राशौ आवश्यके घट्यात्मक चन्द्रवास चक्रम्

पू	द.	प.	उ.	पू.	द	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए ।

कुम्भ और मीन के चंद्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे ।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः । पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥६॥ सर्वे दोषा लयं यांति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुख चंद्र प्रशंसा—करण-भगणदोष वारसंक्रांति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम् । कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ।

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे । शेष प्रथमस्थान में शून्य हो तो क्लेश मध्य में हो तो धन-क्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है । सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो । विजयादशमी को विना सर्वाङ्कादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है । बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत्य मत जाओ, हानि होती है ।

वर्णक्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर में या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे । अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिये ।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तल, सात दिन पूर्व मैथुन, असमर्थ हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे ।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

घटि	सू	चं	मं	बु	गु.	शु.	श.
३।।	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
७।।	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.
११।	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.	अ.
१८।।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
२२।।	ला.	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.
३०	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक्य दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे ।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल । अन धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल । विप्र २. अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शङ्ख, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, सपुत्रस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजल पूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट यात्रा समय देखना शुभ है । अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिका, दुष्टवाणी, यात्रा समय देखना अशुभ कष्टप्रद है ।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र	दारिद्र	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाओं आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्ध, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. उ. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र तारानुकूले सति शुभः।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु. चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।४।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः, ४।८ शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले. नक्षत्राणि. ४।६।१४।८।१२। ८।३० तिथयः, सू. मं वारौ, १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मङ्गल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनं। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावितिि॥

अथ घात चन्द्र आदीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	राशयः
मे.	कं	कुं.	सिं.	म.	मि	ध.	वृष	मि	सिं.	ध.	कुं.	घात चन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु	घात वार
म.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ	श्ले	घात नक्षत्र
मे.	ध	ध.	मि	[illegible]	[illegible]	मी	ध.	कं	[illegible]	मि	मे.	स्त्री चन्द्रघा.
का	मा.	पौ.	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	घात मास
वि.	सु.	प.	धृ.	श्री	सु.	ऽगं	वृ.	वै.	गं.	[illegible]	वै.	घात योग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घात लग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घात तिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	९	८	९	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	

युद्ध, विवाह, राज-सेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घात तिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है।

घाततिथिर्घातवारं घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।

अथाङ्गविभागे पल्ली (छिपकली, कांढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशांते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणकण्ठे	धनलाभः

चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है जो फल पल्ली पात का कहा वही सरठ (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरठ के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है॥

पल्लीपतने प्रशस्त वारतिथ्यर्क्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११। १२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा च. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यद्भेषु निद्याः ॥

पल्लीपाते कर्तव्य कर्म—पल्ली (किरली) तथा सरठ गिरगट स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के अर्थ जप होम मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान भी करना उत्तम है।

❊ अथांगस्फुरण फलम् ❊

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रुवोर्मध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोपलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपद्म	राज्यलाभ	लिङ्ग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ		
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि	जंघा	स्वामीप्रीति

इन्हीं अङ्गों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो ॥ राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है।

❊ अथोत्पात फल चक्रम् ❊

दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्षपड़े	पहाड़ टूटे	राजाकी मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकालहो	वृक्ष टूटें	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षयः	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोदय	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी केपशु हों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
देन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	तिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्य चंद्र मंद पड़े	देशक्षय	बनपशु गांव बसे	मनुष्यशून्य हो
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृहशून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फपत्थर पड़े	बांबी कबूतर-	गृह ।मी नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	विना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हों	सूखी भूमि गीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिंब	रोगभय
स्त्रीवधहो	दुर्भिक्षपड़े	विप्र बालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास पड़े	सब वस्तुमहंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकरवर्षा	भौमादिकवक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीनस सरदी घांस फल होनी ॥ छींक पीठि की कुशल उचारे, बाईं कारज सबै सवारे ॥ १ ॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाखे, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥ २ ॥ ऊंची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होय भयकारी ॥ अपनी छींक महा दुखदाई, ऐसे छींक विचारो भाई ॥ ३ ॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है, भोजनान्त मे छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्का शुभावहाः ॥ एक नाक दो छींक, काम बने सब ठीक ॥

अथ वार परत्वेन तैलाभ्यंगे फलविधिश्च

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	वाराः
तापम्	सुकांति	क्षति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुभोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्ति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदत्राह—

रवौ भौमे व्यतिपाते सक्रांतिवैधृतावपि । षष्ठ्य-ष्टम्योश्च रिक्तयां च, तैलाभ्यङ्गो न पर्वसु ॥

विशेषः—यदि प्रति दिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है । अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल तथा सुगन्धित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है ॥

काक स्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक का स्पर्श धननाश मरण तथा कलह करता है, कमर कन्धे पर भी अशुभ होता है । स्त्री के मस्तक पर काक का बैठना पति पुत्र का नाश करता है । वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है ॥ काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है । इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प धूप दीप दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृत छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं ॥

अथ काक वचन फल विचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत् । त्रयोदशान्दं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत् ॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम् । निश्शेष मरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम् ॥

कपोतः (कबूतर)—शिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा इनके गृह में चला जावे तो मृत्यु वा मान स्थान हानि होती है, तद्दोष निवृत्यर्थं दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो ॥

❀ अथ स्वप्न विचारः ❀

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित (दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उस से विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से) ॥ पूर्वोक्त ७ प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं । छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है । सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है । इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है । सुज्ञजन स्वप्न को देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल पुष्प दक्षिणा रक्खे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावें ॥

शुभ स्वप्नाः—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना । महल, पर्वत, सिंह, अश्व, इन पर चढ़ना वा दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरना, वेदध्वनि श्रवण, रक्तपीत पुष्प दर्शन, दर्पणप्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण, विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़ कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है । यदि कोई क्लर्क या मुन्शी मुनीम यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिष्टरों वा बहियों में बहुत गलतियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश वा तरक्की मिलेगी ॥

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर आग खाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले, स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो । श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना हाथों में हथकड़ी पैरों में जञ्जीर का बन्ध पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊं छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी

में सर्प का दीखना, अपने पैर वा भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्य मण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता ह। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त वा मद्य का पीना विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस चरबी का खाना, विष्टा अपने अङ्ग में लगाना, श्वेत चन्दन श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर देजाय तो भी लाभ हो नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़ कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है, राजा गौ ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बागीचे हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाय बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर कोई भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्नः—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मङ्गल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई कपास, तेल, लोहा मिलना, इनसे सङ्कट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना वा किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु वा भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना वा किसी वस्तु को मांग कर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा ताम्बे के पैसे मिलना रोग कष्ट सूचक है। अपनी स्त्री के कमीज़ को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ नाक का कटना, कीच (पङ्क) में फंसना, ऊंट गधे भैंसे पर चढ़ कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मङ्गल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिरते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिङ्गन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृ कार्यों का करना, भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाज़, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखर का तथा बड़े महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट वा चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ वा चिन्ताकारक होती है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखें कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्त भाव से अनिष्ट करेगा॥

स्वप्न का फल कब मिलेगा ?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में तृतीय का तीन मास में, तथा रात्री के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है॥

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डी पाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख कर फिर तत्काल सो जाना भी दुस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है॥

दशा का भुक्त भोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अङ्कों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० गुणा कर पल बना लें। भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा के भभोग की पलों से भाग देवें लब्ध अङ्क वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणों भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है, इस को दशा के वर्षों में घटाने से भभोग दशा होगी॥

कथावाचक मेलाराम जी कृत

कृष्ण–सुदामा चरित्र

इस छोटी सी पुस्तक में लेखक ने भक्ति रस के उद्गारों से पूर्ण श्रीकृष्ण और सुदामा के प्रेम का पञ्जाबी कविता में वर्णन किया है जिसे पढ़ते पढ़ते नेत्रों से प्रेमाश्रु धारा बहने लगती है (मूल्य केवल ।)

पता—मोतीलाल बनारसीदास

सैदमिट्ठा बाज़ार लाहौर।

महर्षि पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशा तन्मध्येऽन्तर्दशा चक्रम्

सूर्य वर्ष ६				चन्द्र वर्ष १०				भौम वर्ष ७			
कृ. उफा. उषा.				रो. ह. श्रवण				मृग. चि. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा	दि.
र	०	३	१८	चं	१०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	७	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	६	६	०	गु	०	११	६
रा	०	१०	२४	गु	४	४	०	श	१	१	९
गु	०	९	१८	श	७	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	५	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	७	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	८	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	६	६	०	चं	०	७	०

राहु वर्ष १८				गुरु वर्ष १६				शनि वर्ष १९			
आ. स्वा. शत.				पुन. वि. पूभा.				पु. अनु. उभा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा	दि.
रा	२	८	१२	गु	२	१	१८	श	३	०	३
गु	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	गु	२	६	१२

बुध वर्ष १७				केतु वर्ष ७				शुक्र वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेव				मघा. मू. अश्वि.				पूफा. पूषा. भर			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	गु	२	८	०
रा	२	६	१८	गु	०	११	६	श	३	२	०
गु	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

शिवोक्त योगिनी दशा तन्मध्येऽन्तर्दशा चक्रम्

मंगला वर्ष १			पिंगला वर्ष २			धान्या वर्ष ३			भ्रामरा वर्ष ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा. चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श. त.			आश्ले. अनु. पूभा		
दशा	मा.	दि.	दशा	मा.	दि.	दशा	मा.	दि.	दशा	मा.	दि.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
प.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रा वर्ष ५			उल्का वर्ष ६			सिद्धा वर्ष ७			सङ्कटा वर्ष ८		
बुध			शनि			शुक्र			केतु		
म. मू. ज्ये. उभा			कृ. पूफा. मू. रे			रो. उफा. पूषा.			मृग. ह. उषा		
दशा	मा.	दि.	दशा	मा.	दि.	दशा	मा.	दि.	दशा	मा.	दि.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	प.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	प.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	प.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पिं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

दशा तथा वर्ष

दशेश ग्रहाः

जन्म नक्षत्र

फलम्

मंगला मंगलं दत्ते पिंगला कार्यनाशिनी, धान्या धनप्रदा प्रोक्ता भ्रामरी भ्रमणप्रदा। भद्रा भद्रमादत्ते उल्का उत्पातकारिणी, सिद्धा सिद्धिदा प्रोक्ता संकटा संकटप्रदा॥

❋ अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नाः ❋

मित्र मिलाप प्र० १			मुकद्दमा प्र० २			यात्रा प्र० ३		
७	२	१	४	२	१	५	४	३
३	६	५	३	९	८	१	६	९
४	९	८	६	७	५	२	८	७

पशु लेने का प्र० ४			लाभालाभ का प्र० ५			नौकरी का प्र० ६		
२	१	३	७	४	५	१	५	८
४	५	६	६	८	९	७	३	६
७	९	८	२	३	१	९	४	२

विद्या परीक्षा प्र० ७			परदेशी प्र० ८			शत्रुनाश प्र० ९		
७	८	५	९	७	४	६	८	९
४	३	२	३	२	८	२	१	३
९	१	६	१	६	५	४	५	७

प्रश्नकर्ता फूल दूब दक्षिणा आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के ९ घरों में से किसी एक घर पर ईश्वरस्मरण करता हुआ अंगुली रक्खे फिर उसी विषय के फल चक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवे, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहे कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल न मिलेगा॥

मित्र मिलाप का फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टभययुक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिले।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)

१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ २ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी।
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायगी।
९ पञ्चायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१ गमन मत करो लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूल कर भी मत जाओ हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारके गमन करो लाभ होगा।
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं, हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ सांझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी ज़रूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे, महदान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा।
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होओगे।
८ विद्या से विशेष लाभ न होगा।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न का फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने की नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च से तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया है।

शत्रुनाश प्रश्न का फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे
८ सुलह हो जायगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

गुप्त चिन्ता का प्र० १०

७	८	२
९	६	१
३	४	५

कर्ज लेना देना प्र० ११

१	३	२
८	९	६
५	४	७

खेती करूं या नहीं प्र० १२

१	८	३
६	४	७
५	९	२

रोगी का प्र० १३

९	६	२
७	५	८
३	४	१

गर्भ में क्या है प्र० १४

७	६	१
४	२	८
३	५	९

चोरी गई का प्र० १५

८	७	३
४	९	६
२	५	१

पुत्र गोद लेना प्र० १६

३	५	९
४	१	८
२	६	७

अनाज खरीद का प्र० १७

८	७	५
९	४	३
२	१	६

विवाह शादी प्र० १८

५	४	३
२	१	६
८	९	७

रोजगार का प्र० १९

६	७	९
२	४	८
१	५	३

गुप्त चिन्ता का फल १०

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी ।
२ काम बनने में कुछ देर है ।
३ काम का नतीजा खराब रहेगा ।
४ किसी का भरोसा न करो ।
५ चिंता न करो काम बनेगा ।
६ मन की मन ही में रहेगी ।
७ तेरा दुष्ट से वाह पड़ा है । ८ देरी से काम बनेगा । ९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो ।

कर्ज लेने देने का फल ११

१ यहां से कर्जा लेना देना अच्छा है
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी ।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया
६ इस जगह हानि लाभ सम है ।
७ लेने देने में कोई हर्ज नहीं ।
८ अन्त समयअदालत में जाना होगा
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा ।

खेती करूं या नहीं फल १२

१ खेती में लाभ रहेगा ।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है ।
३ खेती को कीड़े का भय है ।
४ मनोकामना सिद्ध होगी ।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ ।
६ खेती करो पर सावधानी से ।
७ खेती में ओले का भय है ।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी ।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो ।

रोगी का प्रश्न फल १३

१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा
२ ग्रह दशा खराब है, शांति करो ।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा ।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो ।
७ चिन्ता न करो ९ दिन भारी हैं ।
८ आरामहोजावेगा,पर खर्चअधिकहै
९ होनहारमेंकिसीकावशनहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल १४

१ इस गर्भ की सुखाशा नहीं ।
२ पुत्री का जन्म होगा ।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है ।
४ लड़की होगी पर आयु कम ।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे ।
६ पुत्र का जन्म होगा ।
७ दीर्घायु पुत्र होगा ।
८ जौड़ी कन्या जन्मेगी ।
९ लड़का लड़की जौड़े होंगे ।

चोरी गई का फल १५

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर स्त्री है ।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा ।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा
४ चोर पक्का है माल न मिलेगा ।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा
६ चोर ने तेरी वस्तु और को देदी ।
७ माल आधा नष्ट हो गया ।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो ।
९ चोर छोटीआयुका है,माल मिलेग,

पुत्र गोद लेने का फल १६

१ गोद लेने से नाम रहेगा ।
२ यह लड़का वफादार नहीं ।
३ लड़का खर्च करायेगा ।
४ लड़का अच्छा नहीं है ।
५ अच्छी निभेगी ।
६ सावधानी से गोद लेना ।
७ बेमुहब्बत निकलेगा ।
८ घर में अनबन रहेगी ।
९ सुखदाई नहीं है ।

अनाज खरीद फल १७

१ अनाज में भारी लाभ होगा ।
२ नफा टोटा समान रहेगा ।
३ घाटा रहेगा ।
४ अन्न के खराब होने का भय है ।
५ साझी व्यापार न करें ।
६ देर से बिकेगा ।
७ अनाज में सवाये होंगे ।
८ बेचना ठीक है, लेना मत ।
९ प्रश्न का फल अशुभ है ।

विवाह शादी का फल १८

१ विवाह देरी से होगा ।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं
३ विवाह न होगा ।
४ विवाह जरूर होगा ।
५ विवाह में रुकावटें होंगी ।
६ किसी की खुशामद करो ।
७ खर्च करो, काम बनेगा ।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा ।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी ।

रोजगार प्रश्न फल १९

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेषपरिश्रमकरनेसेरोजगारहोगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो ।
४ जल मिट्टी कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी ।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है ।
८ खोटे ग्रह की दशा है अभी चुप रहो
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

अथ वर्षप्रवेश सारणीयम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

अथ वर्षफल साधन प्रकारः--(१) अभीष्ट सँव्वत (जिस सँव्वत् का वर्ष करना हो) में से जन्मसमय का सँव्वत हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के सँव्वत से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष ला कर उसी गताब्द अङ्क के नीचे जो सारणी में वारादि अङ्क हैं उनमें जन्म का वार इष्ट घटी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अङ्क साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देना, लब्धाङ्क को ऊपर युक्त करते जाना; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेशसमय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्मसमय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी २ वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्न साधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेशसमय का सूर्य जन्मसमय के स्पष्टसूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेशसामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ की हो। वर्ष बनाने में जन्म स्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्ष लग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। **मुन्थानयनप्रकारः**—गताब्दवन्द में जन्म लग्न जोड़ कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना यह मुन्था प्रतिदिन ५ कला चलती है।

अथ त्रिपताकी चक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन २ रेखा खींच कर उनके कोण परस्पर मिला कर त्रिपताकीचक्र तय्यार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियें स्थापन करो। अब ग्रहस्थापन करने की यह विधि है कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एकयुक्तगताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंच राहु केतु को विपरीत जानना॥ फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से सन्ताप, शनैश्चर से रोग भौम के वेध से शरीरपीड़ा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्यलाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें॥

वर्षयोगिनीसतेन मुद्दादशा

	मास	दिन
मं.	०	१०
पि.	०	२०
धा.	१	०
भ्रा.	१	१०
भ.	१	२०
उ.	२	०
सि.	२	१०
सं.	२	२०

मुद्दा दशा चक्र विधिश्च—जन्मनक्षत्र की संख्या मेंगतवर्षगणजोड़ के २ घटादें, ९ से भागकरने पर जो शेष बचे वह सूर्य सेलेकरमुद्दादशा होतीहै। योगिनी के लिये जन्म नक्षत्र संख्या मे गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्धादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

॥ लग्न सारणीयम् ॥

पलभा ७।१२ वर्षादौ ग्रहलाघवीय अयनांशाः २३।४४ केतकीमते-अयनांशाः २३।५।२९

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	— —
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	२०६
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	— —
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	२४२
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	— —
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	२९९
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	— —
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	३४७
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	— —
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३५६
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	— —
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	३५०
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	— —
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	३५०
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	— —
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	३५६
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	— —
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	३४७
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	— —
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	२९९
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	— —
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	२४२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	— —
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	२०६

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है । इसमें इष्ट घट्यादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारणी में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है,इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए । इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्ट युक्तकोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐप्य (आगे का)कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए,इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इन को ६० गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्ध ५५ विकला आई । इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५० ४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्टलग्न हुआ ॥

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
   १२०
   ११०
    १०
    ६०
   ६००
   ६०५
```

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्म लग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लों, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना । राशि अंश के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना । तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐप्य)कोष्ठक का अन्तर कर के भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्मस्पष्ट लग्न होता है ॥

॥ दशमलग्न सारणीयम् ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदय पलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	— —
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७८
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	— —
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	२९९
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	— —
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	३२३
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	— —
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	३२३
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	— —
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	२९९
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	— —
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	२७८
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	— —
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७८
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	— —
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	२९९
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	— —
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	३२३
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	— —
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	३२३
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	— —
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३६	४६	२९९
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२		३	३	३	— —
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	२७८

नोट—हमारे यहां से समीपवर्ती जैसे अम्बाला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होश्यारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारणी से दिनमानादि साधन के विना भी काम चल सकता है ॥

अथ दशमलग्न साधनम्—उदयादिष्टकालेषु द्युदलं हि प्रपातयेत् । दशमस्य भवेदिष्टं सारिणी गोसुखांगने ॥ १ ॥

अर्थः— सूर्योदयात् घट्यादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़ कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशमलग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है ॥

भावसाधनम्—विलग्नतुर्य षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत्। एकर्द्धियुक्तास्ते व्यस्ता भावा षड्षड् युता परे।२।अर्थः—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी फिर उसी आरंभसंधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ-भाव की आरंभसंधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एकर बढ़ातेहुए उत्क्रमसे चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धि-सहित ६ भाव हो जावेंगे, इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित छः ही भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं ॥

ॐ श्रीगणेश स्वगुरुभ्यो नमः ।
प्रणम्य भारतीं देवीं पादाब्जं श्रीगुरोरपि ।
वक्ष्येऽहं सुमुहूर्तादीन् लोकानां हितवाञ्छया ॥

सं. २००३ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ।

अथ समयशुद्धिः ।

गुर्वस्त—कार्तिक कृष्णा ५ से मार्गशीर्ष कृष्णा २ तक (सौरमानानुसार आश्विन प्रविष्ट २६ से कार्तिक प्रविष्ट २६ तक)

शुक्रास्त — मार्गशीर्ष कृष्णा २ से मार्गशीर्ष शुक्ल १ तक (सौरमान से कार्तिक प्र. २६ से मार्गशीर्ष प्रविष्ट ६ तक)

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष होता है जो अस्त की भान्ति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है ।

शुद्धानि सपरिहाराणि च विवाहमुहूर्त्तानि ।

सर्व देशों के लिये—

वैशा. प्र. २ उ.फा. Sबु ||||:|| दि. ल. २ वा ५ आवश्यके
वैशा. प्र. ५ स्वा. |||Sबु |S २६ या. ||| दि. ल. ५
वैशा. प्र. १७ उभा. |S||Sचौ |||| दि. ल. २
ज्ये. प्र. १३ उभा. ||||Sअ. |S|| दि. ल. ६
ज्ये. प्र. १३ रे. ||||Sअ. |S|| ल. १ अत्यावश्यके.
ज्ये. प्र. १४ रे. ||||||S|| दि. ल. ६ वा. गोधू.
ज्ये. प्र २३ म.|||||Sअ.२५या.S२०या. S||दि.ल.६ वा गोधू
ज्ये. प्र. २५ उ फा. ||||Sनृ |||| दि. ल. ६ वा गोधू.
ज्ये. प्र. २६ ह. |S|||Sचौ ३४ उ. |||| ल. गोधू. वा १२
ज्ये. प्र. २८ स्वा. |||||S||| ल. गोधू
ज्ये. प्र. २६ स्वा. ||'||S रो. |||| दि. ल. ५।६
आषा प्र. ६ उ. भा. ||||'|||| ल. १ चं. गु. दा.
आषा. प्र. १० रे. ||||Sरो १६ उ. S५२ उ. S|| दि. ल ‡
[‡ ६ वा गोधू १ चं गु. दा.
आषा. प्र. १३ रो. S||Sअ S||| ल. १ गु. दा.
आषा. प्र. २० म. ||||Sरो |S|| दि. ल. ६ चं. दा.
आषा. प्र. २१ उ फा. ||'||S | ल. १२ चं. गु. दा.
आषा. प्र २४ स्वा. Sश |||||| ल. चिन्तनीयम
आषा. प्र. २५ स्वा. Sश|'||Sनृ||| दि ल. ६ वा. गोधू.
आषा. प्र. २७ अनु. ||||Sचौ |||| दि. ल ६ वा गोधू.
मार्ग. प्र. १३ उषा. Sगुऽ || Sअ. ६ या. S५या.|||दि. ल. ‖
मार्ग प्र. १८ उ.भा.||||Sरो ४३.|||| दि. ल ६ अंश १५ या अ.
मार्ग प्र. १६ रे. || ||S || दि ल. ६ अंश ११ उ. अत्यावश्यके.
माघ. प्र. १३ उभा. ||||Sनृ. ५२ उ. |S|| ल. चिन्तनीयम
माघ प्र. १४ उभा. ||.|Sनृ. |S|| ल. चिन्तनीयम्
माघ प्र. १५ रे. ||||Sनृ. ५० या. |||| ल. चिं.
माघ प्र. १५ रे. |||||.||| ल. चिं.
माघ प्र. २६ उफा. Sरा ||||Sरो. ३८ उ. ||'| ल. गोधू. *
[* वा ६ गुरु दानात
माघ प्र. २७ ह. ||||S रो ३७ या. |||| दि. ल. १२ ¶
[¶ चन्द्र दानात् गोधू. वा ६ गुरुदानात्
फाल्गु. प्र. ४ मूल. Sबु. ४५ उ. ||'||S|| ल. ७ आवश्यके
फाल्गु. प्र. ५ मू. Sबु ||||||S|| दि. ल. १२ वा. गोधू.
फाल्गु. प्र. ६ उषा. ||||||||| ल. ६ अंश १५ उ. गु. दा. आ.
फाल्गु. प्र. १२ उ.भा. |S|| Sअ. |||| ल. ६ गु. दा. आव.
फाल्गु. प्र. २५ उफा. Sरा.S|| Sबु.|S||.दि. ल. १२ चं.दा.
फाल्गु. प्र. २५ ह. |S|||S चौ. |||| ल. ७ चं. दानात्
फाल्गु. प्र. २६ ह. |S|||S चौ. |||| दि. ल. १२ चं. दा.

देशाचार से केवल पञ्जाब देश के लिये—

श्राव. प्र. ५ रे. Sचं ||||S नृ. |||| ल. १ अंश ५ उ. $
[$ गु. चं. दा. वा ३
श्राव. प्र. ६ रे. S चं ||||S नृ. |||| ल. ६ गु. दानात्
श्राव. प्र. ६ रो. ||||Sरो ५५ उ.|||| दि. ल. ६ गु. दा. †
[† १ गु. दा. वा. ३
श्राव. प्र. १५ म. |S|||Sनृ. S||| दि. ल. ६
श्राव. प्र. १७ ह. Sरा. || Sचौ. |||| ल. ३ आव. ज्ञः दा.
श्राव. प्र. २० स्वा. S श. |||| |||ल. ३ अंश १७ उ.
श्राव. प्र. २४ मू. Sगुऽ||Sराऽनृऽ|| ल. ३ चं दा,
भाद्र. प्र. ५ रो. ||.|||SS|| ल. ३ चन्द्र दानात्
भाद्र. प्र. १३ उफा. |||||.|| ल. ३
भाद्र. प्र. १६ स्वा. Sमं श. ||||Sनृ. ३२ या. |||| दि. ६ वा. ३
भाद्र. प्र. १८ अनु. |S|||S||| ल. ३ अत्यावश्य. चन्द्र दा.
भाद्र. प्र. २० मू. Sगु. || Sरा |||| ल. ३ चन्द्र दानात्
भाद्र. प्र. २१ मू. Sगु||Sरा. ||||| दि. ल. ७
आश्वि. प्र. १३ अनु. Sमं ||||'S|| ल. चिंतनीयम्
आश्वि. प्र. १४ अनु. Sमं ||||Sनृ. १६ उ. |S|| दि. ल. ६
आश्वि. प्र. १६ मू ||||S चौ. |||| ल. ३ अंश १२ या. ||
[|| चन्द्रदानात्
आश्वि. प्र. १८ उषा. |||||S रो. २० उ. S३७ या. |||ल. चिं.
[पञ्जाब वा त्रिपुष्कर देशों से अन्यत्र के लिये
फाल्गु. प्र. २२ म. |||||| ल. ७]

अशुद्धानि विवाहमुहूर्त्तानि—

वैशाख प्र. ३ हस्ते मृत्यु. भद्रा
वैशाख प्र. ४ स्वा. ||||S सु |S||| लग्नाभावः
वैशाख प्र. ७ अनु. भृगोर्वेधः
वैशाख प्र. ६ मू. शनेर्वेधः परदिनेऽपि
वैशा. प्र. ११ उषा. राहोर्वेधः परदिनेऽपि
,, ,, १६ उ.भा. |S|||S चौ. ५४ उ. |||| लग्नाभावः
,, ,, २१ रोहि. शुक्रयुतिः
,, ,, २२ मृग. राहोर्युतिः
,, ,, २६ म. Sमं ||||S चौ. |||S
,, ,, २६ उफा. |S|||Sरो २१ या. |||| ल. ०
,, ,, २६ ह. Sरा. |||||S||| ल. ०
,, ,, ३० ह. Sरा. ||||Sनृ. २३ उ. S ४८ या. ||| ल. ०
ज्ये. प्र. ३ अनु. बुधवेधः
,, ,, ४ अनु. बुधवेधः
,, ,, ५ मू. शनेर्वेधः परदिनेऽपि
,, ,, ७ उ.षा. मृगोर्वेधः राहोर्वेधश्च परदिनेऽपि
,, ,, १२ उभा. मृत्युः
,, ,, १८ मृ. राहोर्युतिः परदिनेऽपि

ज्ये. प्र. २७ ह. ।ऽ॥ऽ चौ. ऽ॥ ल. ०
आषाढ़ प्र. १४ रो. ।ऽ॥ऽ अ. ऽ॥ क्षीणचन्द्रदोषः
आषा. प्र. १४ मृ. राहोर्युतिः परदिनेऽपि
आषा. प्र. १६ म. ॥॥ऽ रो. ४७ उ. ऽ ४३ या. ऽ॥ ल. ०
आषा. प्र. २३ ह. दग्धा. भद्रा.
आषा. प्र. ३० मू. क्रान्तिसाम्यम्
आषा. प्र. ३१ उषा. राहोर्वेधः मृत्युः
आषा. प्र. ३२ उषा. राहोर्वेधः मासांतश्च
श्रावण प्र. ४ उभायां दग्धा भद्रा
,, ,, १० मृग. राहोर्युतिः
,, ,, १६ उफा. भौमयुतिः
,, ,, १८ ह. ऽ रा. ॥ऽ चौ २१ या. ॥ऽ १८. उ. ल. ०
,, ,, २२ अनु. क्रान्तिः परदिनेऽपि
,, ,, २५ मू. ऽ गु. ऽ।ऽ रा ऽ नृ. ऽ॥ ल. ०
,, ,, २६ उषा. राहोर्वेधः
,, ,, ३१ उभा. मासान्तः भौमवेधः परदिनेऽपि
भाद्र. प्र. २ रे. संक्रमणदोषः
भाद्र. प्र. ६ रो. ॥॥ऽ नृ. १० उ. ऽ ६ या. ऽ।ऽ २० उ. ल. ०
भाद्र. प्र. ६ मृ. राहोर्युतिः परदिनेऽपि
भाद्र. प्र. १४ ह. भौमयुतिः परदिनेऽपि
भाद्र. प्र. १७ स्वा. ऽम. श. ॥॥॥ ल. ०
भाद्र. प्र. २३ उषा. राहोर्वेधः
आश्वि. प्र. ११ स्वा. भौमयुतिः परदिनेऽपि
,, ,, २३ उभायां क्रान्तिसाम्यम्
माघ. प्र. २ स्वात्यां मृत्युः ६ उ. तत्रूर्ध्वं नाङ्गशुद्धिः
माघ. प्र. ४ अनु. केतोर्युतिः
माघ प्र. ६ मू. चन्द्रवेधः
माघ प्र. १८ रोहि. क्रान्तिसाम्यम्
माघ. प्र. १६ मृग. नाङ्गशुद्धिः
माघ. प्र. २० मृग. दग्धा
माघ. प्र. २४ मघा भौमवेधः
माघ. प्र. २६ स्वा. मृत्युः ३५ या. मासान्तश्च
फाल्गु. प्र. २ अनु. केतोर्युतिः मृत्युः ३४ उ. परदिनेऽपि
फाल्गु. प्र. १३ रे. दग्धा

अत्र कश्चित्स्मृतिदृष्टिदोषश्चेत्क्षन्तव्यं सुधीभिः ।
भुजङ्गं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च ।
लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

नोट—१ यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत्य और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी॥

नोट—२ विवाहादि मुहूर्त्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांशों पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और यही जम्बू पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चाङ्गों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्त्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तमार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिए प्रविष्टों पर से 'बाणानयन करना चाहिये' ऐसा नहीं लिखा॥

नोट—३ यदि गुरुशुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर विवाहमुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयाँ पेड़े माष हल्दादि विवाहाङ्गकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये॥

उपनयन मुहूर्त्ताः

चैत्र शु. १० गुरु आश्ले.
वै. शु. २ भृगु. रो. ७ घ. उ.
वै. शु. १२ रवि हस्त
आषाढ़ शु. १० चन्द्र. स्वा
माघ शु. ५ चन्द्र. उ. भा.
माघ शु. १२ रवि. मृग.
फा. कृ. २ भृगु. ३।७ उ.
फा. कृ. ५ चन्द्र. ह. चि.

द्विरागमन मुहूर्त्ताः

वैशाख प्र. ५ बुध. स्वा.
वैशा. प्र. ६ रवि मृ. ७।७ उ.
वै. प्र. १० चंद्र. मू. १२।४६ या
वै. प्र. १२ बुध. उषा.
वै. प्र. १४ भृगु. धनि.
" . प्र. २१ भृगु रो. ७ उ.
वै. प्र. २८ चन्द्र पुन.
मार्गशी. प्र. १३ गुरु उषा.
मार्गशी. प्र. १४ शुक्र श्रव.
फाल्गु. प्र. २ गुरु. अनु.
११।१६ उ.
फाल्गु. प्र. १३ चन्द्र रे.

शुक्रोदयास्त

इस पञ्चाङ्ग में लिखा हुआ शुक्रोदयास्त एवं स्पष्ट ग्रह आदि जयपुर के महाराजा की ग्रहवेधशाला द्वारा शुद्ध माने गए हैं। आकाशीय वातावरण ठीक होने पर प्रत्यक्ष दर्शन से निश्चय भी कराया जा सकता है।

पाणिनीय सिद्धान्तकौमुदी

जिसको महामहोपाध्याय पं० मथुराप्रसाद दीक्षित जी ने भट्टोजि दीक्षित की वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त किया है। आपने पाणिनि जी का कोई सूत्र नहीं छोड़ा है, अनुपयुक्त वृत्ति को कहीं २ छोटा कर दिया है, अनावश्यक प्रत्युदाहरण निकाल दिये हैं। इस प्रकार छात्रों के याद करने योग्य, शीघ्र ही बोध देने वाली यह अपूर्व ही वस्तु बन गई है। प्रेस में छप रही है, शीघ्र ही प्रकाशित होगी, प्रतीक्षा करें।

पता :—

म० म० राजगुरु पं० मथुराप्रसाद जी दीक्षित
सोलन (जि० शिमला)

कामधेनु करामात

(करामाती पुस्तक)

पुस्तक क्या है गागर में विद्यारूपी रत्नों का सागर भरा पड़ा है। जिस विद्या की खोज में कई सद्गृहस्थों और साधुओं ने अपनी आयु समाप्त कर दी, वही अद्भुत विद्याएँ आप को इस पुस्तक में मिलेंगी। आज तक ऐसी पुस्तक नहीं छपी। मूल्य १॥) रु०, डाकखर्च अलग।

मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास
सैदमिट्ठा, लाहौर।

कर्मकाण्ड, स्तोत्र, व्रतकथा ग्रन्थ

संस्कारसूर्योदय—तृतीय भाग—ले. पं० चन्द्रमणि शर्मा। इस भाग में विवाह संस्कार का सनातनी, शास्त्रोक्त, सर्वसम्मत, शंका-समाधान-युक्त और देशाचारादि समन्वित
८६ रीति से विशद विधान वर्णित है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २॥) **गोदानविधि** =) **देवर्षिपितृतर्पण** भा० टी०)॥ **मघारेवत्यश्विनीगण्डान्तशान्ति** -) **शय्यादानपद्धति** ≈) **सन्ध्या-मूल स्थूलाक्षर** -) तथा भा० टी० **विधिसहित** -)॥ **दुर्गासप्तशती मूलस्थूलाक्षर सजिल्द** १≈) **आदित्यहृदय** ≡) **इन्द्राक्षीस्तोत्र** -) **कमलनेत्र** -) **चर्पटपञ्जरिका** -) **दानलीला** -) **दुर्गातांडव** =) **पुरुषसूक्त**)॥ **विष्णुसहस्रनाम मूल** ≡) **विष्णुसहस्रनाम**—श्री विश्वनाथ शास्त्रीकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। भगवान के १००० नाम पृथक् २ अर्थ सहित दिये हैं।-) **नासकेत** भा० टी० ।≈) **सत्यनारायण** भा० टी० ।) **गणेशचतुर्थी** ≈) **शिवतांडव**)॥ **शिवमहिम्न** -) **हनुमानचालीसा** -) **सर्वव्रतोद्यापनचन्द्रिका**—उद्यापन विषय का अत्युत्तम ग्रन्थ—पं० चन्द्रमणि शर्मा कृत १।) **संस्कार सूर्योदय**—द्वितीय भाग पंडित चंद्रमणि शर्मा कृत १॥) **विवाह-पद्धति**—पं० ज्ञानचंद कृत भा० टी० सहित १) **कर्मठगुरु**—पं० मुकुन्दवल्लभ जी कृत १॥)

वेदान्त ग्रंथ

आशावती उपाख्यान—हिन्दी में अत्युत्तम ग्रंथ है।॥) **गर्भगीता** -) **प्रश्नोत्तरी** भा० टी० -)॥ **भगवद्गीता**—मूल तावीजी १ इंच पर लंबी चौड़ी, जर्मनी से फोटो में उतारी हुई तावीज बनाने के लिये १) **भगवद्गीता**—अमृततरंगिणी भा० टी० स्थूलाक्षर १≈) **योगवाशिष्ठ**—भाषा वैराग्य मुमुक्षु दो प्रकरण अत्यन्तस्थूलाक्षर २) **विचार-चन्द्रोदय**—पं० पीतांबर कृत २) **विजयवचनामृत**—अत्युत्तम १) **वैराग्यशतक**—भाषा कवि हरदयाल कृत ॥) **सारुक्तावली**—कवि हरदयाल कृत तथा सरल हिन्दी टीका सहित।) **सुखमनि साहिब** भा० टी० स्थूलाक्षर स्वा० परमानंद कृत २) **ज्ञानमाला** ≡)

व्याकरण ग्रन्थ

सव्याकरण सरलानुवाद पद्धति—पं० अचिन्त्यरामकृत। हिंदी में संस्कृत व्याकरण तथा अनुवाद के लिये ॥।) **लघुसिद्धान्त कौमुदी**—पं० विश्वनाथ जी कृत उपेन्द्रविवृति तथा स्नातक लक्ष्मीनारायण कृत हिन्दी टीका सहित। अत्यन्त उपयोगी १) **सिद्धान्त कौमुदी**—बालमनोरमा तथा तत्त्वबोधिनी दो सरल संस्कृत टीका सहित छात्रोपयोगी, चार भागों में सम्पूर्ण ६) **संस्कृत अनुवाद शिक्षक**—प्रो० रामचंद्र कृत ॥।) **अनुवादचन्द्रिका**—ले० पं० चक्रधर हंस, चतुर्थावृत्ति २) **लघुकौमुदी**—विस्तृत भाषा-टीका और पूर्ण रूपसिद्धि सहित, पं० श्रीधरानन्द जी कृत, प्रथम भाग २॥) द्वितीय भाग छप रहा है।

आयुर्वेद-ग्रन्थ

गुणों का खजाना—सरल हिन्दी भाषा में। स्व० स्वामी परमानन्द जी उदासी ने सरल भाषा में गृहस्थों के उपकारार्थ बनाया है। यह पुस्तक पांच विभागों में विभक्त है। प्रथम भाग में यूनानी तरीके से शरीर की उत्पत्ति और शारीरिक रोगों की औषधियों का निरूपण है और अनेकों रोगों पर चलने वाली आज़माई हुई दवाइयों का वर्णन है। दूसरे अध्याय में धातुओं के शोधन मारण और उत्पत्ति तथा परीक्षाओं का निरूपण है। तीसरे अध्याय में बाल उड़ाने का साबुन तथा अन्य साबुन बनाना, लकड़ी पर सुनहरी रंग करना, रंगों के वार्निश बनाना आदि स्याही कुशता, दवाई आदि २४१ गुण दिये हैं जिनको बना कर पुरुष हजारों रुपये कमा सकता है। चौथे में संखिया मारना, रस बनाना, पारा मारना, बांझ स्त्री का इलाज, प्रमेह का इलाज, हाजमे की गोली आदि १११ गुण, पांचवें में फलों के गुण तथा दाल आदि के गुण हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण पुस्तक में ६७५ गुणों का वर्णन है। सब प्रकार के तेल, स्याही, साबुन, शरबत, अर्क आदि बनाने के तरीके इसमें लिखे हैं। ४०० पृष्ठ की इस सम्पूर्ण पुस्तक का दाम २)

चरक संहिता—सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालङ्कार कृत तन्त्रार्थदीपिका नामक विस्तृत तथा अत्यन्त सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक संहिता का इस से अच्छा छात्रोपयोगी सुविस्तृत हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं छपा। मूल के अर्थ को बड़े विस्तृत रूप से तथा प्रमाणयुक्त खोला गया है। प्रथमावृत्ति हाथों हाथ बिक गई। आजकल के युद्ध के जमाने में हर एक चीज़ अत्यन्त महंगी होने पर भी जनता की मांग को देखते हुए इसका द्वितीय संस्करण छाप दिया है। संपूर्ण दो बढ़िया कपड़े की जिल्दों में। मूल्य २५)

ज्वरतिमिरभास्कर—श्री कायस्थचण्ड विरचित तथा आयुर्वेदाचार्य पं० नानकचन्द जी कृत हिन्दी टीका सहित। पहली बार छपा है। सर्व प्रकार के ज्वर के लिये इसके योग अत्यन्त उपयोगी हैं। मू० ४)

भावप्रकाश—(केवल ज्वराधिकार) विहार परीक्षोपयोगी। सुप्रसिद्ध विद्वान् आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्त जी शास्त्री कृत अत्यन्त सरल हिन्दी अनुवाद सहित तथा ज्वर-परिशिष्ट सहित। लगभग ३२० पृष्ठ। मूल्य १।)

नवनावनीतक—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सम्पूर्ण तथा सरल भाषा टीका सहित। मूल्य ३) रु०। प्राचीन समय के आयुर्वेदिक बहुत से ऐसे ग्रन्थ लुप्त हैं जिनका हमें नाम भी ज्ञात नहीं—उनमें ही आयुर्वेद का एक १७०० वर्ष का प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ **नावनीतक** नाम का भी है। जो कि ले० बावर नामक एक अंग्रेज विद्वान् को पूर्वीय तुर्किस्तान में चीन देश के निकट मिला और भारतीय गवर्नमेंट ने इसे डा० हर्नल प्रौढ़ विद्वान् द्वारा सम्पादन कराकर छपवाया था, जिस का दाम लगभग ५०) के करीब है इतना दाम होने पर साधारण जनता उससे कोई लाभ नहीं उठा सकती थी। श्रीयुत पं० सदानन्द जी शास्त्री (रसतरंगिणी के रचयिता) ने इस कठिन ग्रन्थ के सभी त्रुटित अंशों को तथा अशुद्धियों को बड़े प्रयत्न से पूर्ण किया है तथा साथ में हिन्दी अनुवाद भी दिया है। मूल्य केवल ३) रु०।

चिकित्सा का एक अचूक तथा अत्युपयोगी ग्रंथ !

मेघविनोद—श्रीमेघ मुनि प्रणीत। श्रीमेघमुनि जैन धर्मावलंबी पञ्जाब में बड़े प्रसिद्ध तथा अनुभवी वैद्य हो गये हैं। इस पुस्तक में उन्होंने हर प्रकार की 'बिमारी के ऊपर अपने अनुभव से अजमाए हुये बहुत बढ़िया नुस्खे दिये हैं। पुस्तक छन्दबद्ध भाषा में लिखी गई थी परन्तु सर्वसाधारण को उसका कोई लाभ नहीं था। पंजाब के वैद्य प्रायः इस एक ही पुस्तक से सर्वप्रकार की अचूक चिकित्सा करते हैं। पुस्तक आज तक गुरुमुखी (पंजाबी) लिपि में ही कई बार छप चुकी थी परन्तु हिन्दी भाषा में इसका एक भी संस्करण नहीं था। इसी त्रुटि को देखते हुवे हमने लाहौर सनातनधर्म आयुर्वैदिक कालिज के प्रिंसिपल आयुर्वेदाचार्य पं० नरेन्द्रनाथ शास्त्री जी से इसका सरल हिन्दी अनुवाद कराकर पहली बार छापा है। अनुवादक ने बड़े प्रयत्न से इसका अनुवाद किया है। अब यह पुस्तक हर एक साधारण से साधारण मनुष्य के लिये भी उपयोगी हो गई है। हर एक मनुष्य को इसे अवश्य ही अपने पास रखना चाहिये। इसमें बताए गये नुस्खों की औषधियां बाजार से बड़ी आसानी से मिल सकती हैं इसलिये अनजान से अनजान भी इसका उपयोग कर सकता है। इसमें हर एक रोग का निदान तथा उसकी चिकित्सा सरल से सरल रीति में दी है। सब योग अत्युत्तम हैं। धातुओं का संशोधन और मारण भी दिया है। हमारा दावा है कि अनजान से अनजान मनुष्य भी इसे पढ़कर बड़े से बड़े रोग का शर्तिया इलाज स्वयं कर सकता है। इसके नुस्खे अचूक हैं और निदान ऐसे सरल तरीके से समझाया है कि आसानी से समझा जा सकता है। सब योग अत्युत्तम तथा अनुभवसिद्ध हैं, तथा—पुस्तक १३ अध्यायों में समाप्त है। **प्रथम अध्याय में**—नाड़ी, मूत्र, मुख, नेत्र आदि परीक्षा के सरल तरीके, शकुन तथा स्वप्न का विचार, कालज्ञान, साध्य तथा असाध्य रोगी, रुधिर निकालने के तरीके, मान-तोल, नक्षत्र कष्टावली, बूटी विचार, तेल पाक विधि, काढ़ा की विधि—वात, कफ, पित्त के लक्षण तथा निदान। **दूसरे अध्याय में**—हर एक प्रकार के ज्वर के लक्षण, ज्वर के भेद, तथा उनकी चिकित्सा। **तीसरे अध्याय में**—चिन्तामणि रस, रामबाण रस, संजीवनी गुटिका, पञ्चानन गोली, ब्राह्मी गोली, लवंगादि चूर्ण बनाने के तरीके तथा उपयोग। **चौथे अध्याय में**—अतिसार संग्रहणी अर्श अजीर्ण मन्दाग्नि के सब भेद उनके लक्षण, अनेकों अनुभव में आए हुवे नुस्खें। **पांचवें अध्याय में**—किसी, अरुचि रक्तपित्त, क्षय, कास (खांसी), हिक्का श्वास आदि के सब भेद, उनके निदान, स्वरभंग रोगों के लक्षण तथा अनेकों अजमाए हुये नुस्खे। **छठे अध्याय में**—छर्दि, विसूचिका, दाह, मूर्च्छा, मदात्यय, उन्माद, अपस्मार तथा बद्धकोष्ठ रोगों के सब प्रकार के भेद, उनके निदान। **सातवें अध्याय में**—वातव्याधि, वातरक्त, उरुस्तम्भ, आमवात, शूल, उदावर्त, गुल्म, हृद्रोग; मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों के सब प्रकार के भेद, निदान तथा चिकित्सा दी है। **आठवें अध्याय में**—मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, प्रमेहपिडका भेद, उदर-शोथ, वृद्धि, गलगंड, गंडमाला, अपची, ग्रन्थि, अर्बुद, श्लीपद रोगों के सब भेद, निदान, लक्षण तथा हर एक पर अनेकों अचूक नुस्खे। **नौवें अध्याय में**—विद्रधि, व्रण, भग्न, भगन्दर उपदंश, शूक, कुष्ठ, शीतपित्त, उदर्द, अम्लपित्त, मसूरी आदि रोगों के सब भेद, निदान लक्षण तथा चिकित्सा। **दसवें अध्याय में**—कर्ण, मुख, नासा, नेत्र, शिर आदि रोगों के सब भेद, निदान, लक्षण तथा चिकित्सा। **ग्यारहवें अध्याय में**—वाजीकरण, स्त्रीरोग, प्रदर, बाल रोगों के सब भेद, निदान, लक्षण तथा उनकी चिकित्सा। **बारहवें अध्याय में**—विषाधिकार, विरेचन, नस्य, धूमपान, मिश्रित प्रकरण—निघण्टु प्रकरण, दुग्ध, दधि, मूत्र, तैल आदि हर एक प्रकार के बनाने के तरीके तथा गुणादि दिये हैं। **तेरहवें अध्याय में**—हर एक प्रकार के धातु के लक्षण, मारने की विधि, शोधन की विधि, अवलेह प्रकरण, घृत तैल साधन विधि, तैलाधिकार, आसव अरिष्ट अधिकार, गुडिकाधिकार, पाकाधिकार हैं तथा अनेकों प्रसिद्ध नुस्खों के बनाने के तरीके दिये हैं। इस प्रकार यह पुस्तक चिकित्सा में हर एक प्रकार से पूर्ण है। मात्राएँ भी समयानुकूल दी हैं। इस उपयोगी पुस्तक के नुस्खे बना कर मनुष्य हजारों रुपये शर्तिया कमा सकता है। अत्युपयोगी पुस्तक का दाम केवल ४) रु० रक्खा है।

रसेन्द्रसारसंग्रह—सम्पूर्ण—मूलमात्र—छोटा गुटका साइज। मात्राएँ आजकल के समयानुसार दी हैं। यंत्रों के चित्र सहित पक्की जिल्द सहित। मूल्य सिर्फ १) रु०

भावप्रकाशनिघण्टु (हरीतक्यादि)—पण्डित श्री विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालङ्कार प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वैदिक कालिज कृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित। इसमें हर एक बूटी का पूर्ण विवरण दिया है वनस्पति के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर), तना, काष्ठ आदि हर एक का वर्णन है। वनस्पति कब फूलती है, किस भूमि में किस ऋतु में किस काल में संग्रह करना चाहिये। औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और उनकी मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। यद्यपि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि वनस्पति के पर्याय वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये पर्याप्त हैं किन्तु उसे हर व्यक्ति नहीं समझ सकता इस लिये उन्हें भी व्यक्त कर दिया है जहां २ आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन, एलवा मुसव्बर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भी भिन्न २ भाषाओं में दिये हैं। जहां पर इस पुस्तक में आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहां पाश्चात्य वनस्पतिवेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचारों को भी यथास्थान लिखा है। पाश्चात्य औषधिविज्ञान को साथ रखने से वैद्यगण वा विद्यार्थी को अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियां जो विशेष गुण करती है तथा अत्यन्त लाभप्रद हैं उनका पता लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमों के सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्रायः वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया

गया है। एक बहुत बड़ी विशेषता इसमें यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई हैं तथा औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्प-नाशन के लिये क्या देना चाहिये। अतः यह सर्वगुणसम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। छात्रों तथा वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इसमें छूट नहीं पाई। संपूर्ण पुस्तक लगभग १००० पृष्ठ में है प्रायः सभी पाठशालाओं तथा कालिजों में विद्यार्थी इसे ही उपयोग कर रहे हैं। यू.पी. गवर्नमेंट ने अपने आयुर्वेद विद्यालयों के लिये इसे ही नियत किया है। सजिल्द का मूल्य ४॥) रु०

भैषज्यरत्नावली—लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित तथा आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालङ्कार कृत सरल भाषाटीका सहित। तृतीयावृत्ति बड़ी सजधज कर तैयार हुई है। पहली दो आवृत्ति हाथों हाथ बिक गई थीं और लोगों की मांग धड़ाधड़ आ रही थी। अब की बार बहुत परिवर्द्धित कर दी गई है अर्थात् जितने योग इस संस्करण में मिलेंगे वह किसी भी आवृत्ति में आपको नहीं मिल सकेंगे। दूसरे विशेष गुण तो यह है कि इस संस्करण में सर्वत्र ही हर एक औषधि की मात्रा (doses) को समयानुकूल बना दिया है। जो किसी संस्करण में भी नहीं। आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में प्राचीन समय के अनुसार औषधियों की मात्रा बहुत ज्यादा है जो इस समय उलटी हानि कर देती हैं, विशेषकर साधारण वैद्यों को तो मात्रा देने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है, इसी लिये इस संस्करण में इस कठिनाई को भी दूर कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त इस तीसरे संस्करण में भिन्न भिन्न योगों के अन्त में जहां जहां आवश्यक जंचा विशेषवचन दिया गया है। इसमें जहां पाठान्तरों में कहीं योग का रूपान्तर दिखाया गया है वहां यह भी बताने की चेष्टा की है कि उस योग को रोग की किन अवस्थाओं में प्रयोग किया जाता है वा कराना चाहिये। व्याख्या में जहां जहां परिभाषा के अनुसार मान को दुगुना करना चाहिये वहां दुगुना ही करके लिखा गया है। अतः हर एक औषध निर्माता यदि व्याख्या में कहे गये मान से औषध बनायेंगे तो औषधि ठीक बनेगी। पुस्तक वैद्यसमाज के बड़े काम की वस्तु है। तृतीय संस्करण दो भागों में। मू० १०)

भैषज्यरत्नावली सटीक—लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा परिवर्द्धित तथा आयुर्वेद चक्रवर्ति पं० नरेन्द्रनाथ जी शास्त्रि कृत अतिसरल संस्कृत व्याख्या सहित। पुस्तक में अनेकों नये योग दिये गये हैं। टीका अत्यन्त सरल है। विद्यार्थियों के अति उपयोगी है। पुस्तक लगभग १३०० पृष्ठ में समाप्त हुई है। सजिल्द ८)

योगरत्नाकर—सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र कृत भूमिका तथा श्रीयुत विद्याधर जी विद्यालङ्कार कृत सरल हिन्दी भाषा टीका सहित। चिकित्सा के उपलब्ध संग्रह ग्रन्थों में यदि कोई अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है तो योगरत्नाकर उन में से एक है। १ कायचिकित्सक के लिये जिन २ बातों का जानना आवश्यक है वे सब इस ग्रन्थ में दी गई हैं। २ जो संग्रह ग्रन्थ आज तक उपलब्ध हैं वे एक हिस्से का ही संग्रह करते हैं, परन्तु इस ग्रन्थ में निदान, चिकित्सा, औषधिनिर्माण, मूत्र, नाड़ी आदि की परीक्षा आदि सम्पूर्ण आवश्यक विषयों का समावेश है। परन्तु इसके अत्युपयोगी होते हुवे भी खेद का विषय तो यह था कि साधारण वैद्य जो संस्कृत से अनभिज्ञ हैं इस रत्न से तनिक भी लाभ न उठा सकते थे। इसी कमी को पूरा करने के लिये हमने वैद्य पं० श्री विद्याधर जी से भाषा टीका कराई है। इसमें सुवैद्यप्रशंसा आदि प्रस्तावना के बाद चतुष्पद-दूष-परीक्षा, शकुनरोग-परीक्षा तथा च तदन्तर्गत नाड़ी-परीक्षा, मूत्र-परीक्षा, मल-परीक्षा, स्पर्श-परीक्षा, रूप-परीक्षा, दृक्परीक्षा, आस्य-परीक्षा, जिह्वा-परीक्षा, काल-ज्ञान, देश-भेद, वातादि-दोष-प्रकोप, त्रिदोष कर्म, दोषत्रय-शमन, आम-व्याधि लक्षण तत्प्रतिकार, वयोविचार, प्रकृति-विचार-परिभाषा, प्रतिदिनोपयोगी धान्यादि फल, कन्द-शाकगुण, आदि सिद्धान्तादिगुण, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, जल, दूध, तक्र, घृत, तैल, मधु, इत्र आदि के गुण मूत्राष्टक त्रिफलादि मुख्य गुण, पञ्चविध-कषाय-कल्पना, चूर्ण कल्पना, वटक-कल्पना, अवलेह-पाक, स्नेह-पाक, आसवादि विधि, धातू-पधातु तथा रसोपरसादि का शोधन मारण, सत्वपातन, क्षारकल्पन, अभाववर्ग, वमन, विरेचन, नस्य, कर्णपूरण, रक्तस्रुति आदि आदि और अन्त में वाजीकरण-रसायन एवं रोगानुसार देय अनुपान का संग्रह है। इसमें उपर्युक्त सम्पूर्ण विषय अत्यन्त विस्तार से दिये हैं और प्रायः सम्पूर्ण औषध ही जो कि ग्रन्थकर्ता ने संग्रह किये हैं अत्युपयोगी एवं दृष्टफल हैं। हर एक चिकित्साप्रेमी को इसे एक बार अवश्य पढ़ना चाहिये। सम्पूर्ण ग्रन्थ १५०० पृष्ठ में समाप्त हुआ है। २ बढ़िया जिल्दों में मूल्य १५) रु०।

रसरत्नसमुच्चय सचित्र—अनुवादक–अनेक ग्रन्थों के लेखक, डी. ए. वी. आयुर्वेदिक कालिज लाहौर के सीनियर प्रोफेसर, गुरुकुल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यापक, आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त, आयुर्वेदशास्त्री-वैद्यभूषण-रस-विशेषज्ञ पं० श्री **धर्मानन्द** जी शर्मा।

छपाई, कागज बहुत बढ़िया निर्णयसागर के शुद्ध टाइपों में। २३ चित्रों सहित। पृष्ठ संख्या लगभग १२५०। पक्की कपड़े की जिल्द सहित। मू० ५) रु०।

रसशास्त्र के मौलिक रसग्रन्थों में रसरत्नसमुच्चय का स्थान सर्वोच्च है। इसमें पाये जाने वाले स्वर्ण, रजत आदि का निर्माण तथा विविध रोगों को दूर करने के लिये उत्तमोत्तम रस तथा कल्प अपना सादृश्य नहीं रखते। परन्तु यह ग्रन्थ जितना उच्च है उतना ही गूढ़ और क्रियात्मकता में कठिन भी है। इसके पूर्ण ज्ञान के बिना पढ़ने में वास्तविक लाभ नहीं हो सकता है। इतना उपयोगी होते हुये भी इसका सच्चा स्वरूप जताने वाला कोई भी सरल हिन्दी अनुवाद नहीं था। इसी त्रुटि को देखते हुये हमने उपरोक्त रसशास्त्र-विशेषज्ञ तथा दीर्घ-अनुभवी वैद्य जी से इसका सरल से सरल तथा सर्वसाधारण के उपयोगी हिन्दी अनुवाद कराया है। गन्धक, अभ्रक, सोना, लोहा, ताम्बा आदि खनिजों की उत्पत्ति, भेद, स्वरूप का आज के वैज्ञानिक ढंग से विस्तृत वर्णन भी दिया है तथा हर एक चीज़ कहां २ पाई जाती है आदि अनेक विषय देकर इसे

सर्वोपयोगी बनाया है। औषधियों की मात्रा आजकल के अनुसार दी हैं ताकि सर्वसाधारण वैद्य भी आसानी से इनका प्रयोग कर सकें। प्रायः प्रत्येक स्थान पर अपने अनुभवों को तथा दूसरों के विचारों को विशेषवचन में दिया है। यन्त्रों के २३ चित्र दिये हैं जिनके बनाने में कोई भी कष्ट अनुभव न हो! इस प्रकार इस संस्करण को आज तक के निकले सब संस्करणों से विशेष उपयोगी तथा सरल बनाया गया है। छात्रों तथा अध्यापकों दोनों के ही बड़े काम की चीज है इसलिये हमारा आग्रह है कि रसरत्नसमुच्चय की हिन्दी-टीका खरीदते समय अवश्य ही रसविशेषज्ञ पं० धर्मानन्द जी का अनुवाद ही खरीदें। आजकल युद्ध के समय, कागज आदि अत्यन्त महंगा होने पर भी सचित्र १२५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ५) रु०

रसेन्द्रसारसंग्रह-सचित्र—लाहौर के सुप्रसिद्ध वैद्यरत्न श्रीनरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित तथा सुप्रसिद्ध कविराज श्रीविद्याधर जी विद्यालङ्कार कृत सरल हिन्दी टीका सहित। तृतीय संस्करण को संशोधन अनेक ग्रन्थों के टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्रीयुत जयदेव जी विद्यालङ्कार ने बड़ी योग्यता से प्रायः सभी जगह अपना विशेष वक्तव्य देकर किया है। यह संस्करण इतना उपयोगी हो गया है कि कोई भी विषय छूटने नहीं पाया। मात्राएँ भी सब समयानुकूल दी हैं। ६०० पृष्ठ में समाप्त है। पहले संस्करणों से दुगुना हो जाने पर भी छात्रों के उपकारार्थ हमने केवल ४) रु० नियत कर दिया है। आयुर्वेद साहित्य में इससे सस्ता कोई भी ग्रन्थ नहीं। इस टीका की उपयोगिता इसी से स्पष्ट है कि यह तीसरा संस्करण भी प्रायः समाप्त हो रहा है। भारतवर्ष के प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यही संस्करण धड़ाधड़ चलता है।

शल्यतन्त्र (सचित्र)—आयुर्वेद के आठ अंग हैं, जिनमें शल्यतन्त्र भी है, प्राचीन ग्रन्थों में से सुश्रुतसंहिता का ही मुख्य प्रतिपाद्य विषय शल्यतन्त्र है। परन्तु उस प्रणाली के बहुत काल से लुप्त हो जाने के कारण प्रायशः वैद्य उससे अनभिज्ञ ही रहते हैं। इसी कमी को पूरा करने के लिये हिन्दी में शल्यतन्त्र विषय पर कविराज अत्रिदेव विद्यालङ्कार ने यह पुस्तक अति परिश्रम से लिखी है। इसमें आधुनिक शल्यतन्त्र (Surgery) के अनुसार परन्तु टिप्पणी में सुश्रुत आदि के प्रमाणों को दर्शाते हुए अवश्यज्ञातव्य विषयों पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला गया है। आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिये तथा दूसरे वैद्यों के लिये जो इस विषय में अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहते हैं, वा कर्म करना चाहते हैं, अत्युपयोगी है। यह आयुर्वेद जगत् की एक बड़ी कमी को पूरा करता है। इसमें अनेकानेक शल्यकर्म-निदेशक-चित्र सोने पर सुहागे का काम करते हैं। जिससे विषय करामलकवत् स्पष्ट हो जाता है। मू० ४) रु०

चरक संहिता—श्रीचक्रपाणिदत्त कृत "आयुर्वेददीपिका" तथा वाग्भट्टशिष्य श्री जज्झटाचार्य कृत "निरन्तरपद" नामक दो प्राचीन संस्कृत व्याख्या समेत तथा अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ के मंत्री सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्त जी शास्त्री कृत छात्रोपयोगी अत्यन्त सरल टिप्पणी समेत ११) रु०

अनङ्गरङ्ग—महाकवि कल्याणमल्ल विरचित। यह नवीन संस्करण हमने पुनः युरोप से उपलब्ध अनेक हस्तलिखित प्रतियों पर से डा० शमिडिट द्वारा संशोधन करा कर बढ़िया कागज पर सजिल्द छपवाया है। मू० १-८-०

अष्टाङ्गहृदय—अरुणदत्त कृत सर्वाङ्गसुन्दर संस्कृत व्याख्या तथा सौहृत्य टिप्पणी सहित। छपाई, कागज निर्णयसागर से बढ़िया। पक्की जिल्द सहित। मू० रु० ६)

कन्दर्पचूड़ामणि—श्रीवीरभद्रप्रणीत तथा पं० रामचन्द्र शास्त्री विरचित सुविस्तृत तथा सारगर्भित संस्कृत व्याख्या सहित बढ़िया टाईप तथा बढ़िया कागज। मू० १०)

कुचुमारतन्त्र—श्रीकुचुमार मुनि प्रणीत मू० ।)

चक्रदत्त—सटीक-श्री शिवदास सेन कृत प्राचीन सरल संस्कृत टीका सहित। विद्यार्थियों के लिये विशुद्ध तथा सस्ता संस्करण। द्वितीयावृत्ति। पक्की कपड़े की जिलद मू० ३।।)

पञ्चसायक—श्री ज्योतीश्वराचार्य विरचित तथा विस्तृत टिप्पणी सहित। द्वितीयावृत्ति बहुत बढ़िया एन्टिक पेपर पर छपी है। मूल्य ३-४-०

रतिरहस्य—श्री कोक्कोक विरचित तथा श्री काञ्चीनाथ कृत संस्कृतव्याख्या सहित। पक्की कपड़े की जिल्द। मू० ३।।)

रसहृदय तंत्र—जगद्गुरु शङ्कराचार्य के गुरु श्रीमद्भगवद्गोविन्दपाद विरचित तथा मुग्धावबोधिनी नामक प्राचीन संस्कृत टीका सहित। नया संशोधित संस्करण २।) रु०।

रसेंद्रचूडामणि—सोमदेव विरचित। रसविषय का प्राचीन ग्रन्थ। प्रथम बार छपा है। मूल्य २) रु०

स्वस्थवृत्त—(चरकसंहितान्तर्गत) :मनुष्य कैसे स्वस्थ रह सकता है इसका इसमें वर्णन है। सरल भाषा-टीका सहित, पुस्तक हरएक मनुष्य के लिये अत्यन्त उपयोगी है। तृतीयावृत्ति। मूल्य १) रु०

त्रिदोषविमर्शः—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गत-त्रिदोषवाक्यसंग्रहश्च। लेखकः—पण्डितो धर्मदत्तः, गुरुकुल-आयुर्वेदमहाविद्यालयाध्यक्षः, विद्यालङ्कारः, सिद्धान्तलङ्कारः, आयुर्वेदभूषणम्। मू० १।।) रु०

साबुन विज्ञान

हिन्दी में यही एक मात्र प्रमाणित बड़ी पुस्तक है जिस में विभिन्न प्रकार के सभी साबुनों के बनाने की प्रमाणित विधि हैं। इसके मुकाबले की एक भी पुस्तक अभी तक हिन्दी में नहीं है। इसमें साबुन बनाने की सामग्री, तथा पूरे नुस्खे एवं सुगन्धित और रंगदार तथा हर प्रकार के साबुनों के बनाने और ढालने की अनेक विधियां विस्तार से दी हैं मूल्य २) रु०

इनके अतिरिक्त संसार भर की हिन्दी-संस्कृत पुस्तकें मिलने का पता :—

मोतीलाल बनारसीदास हिन्दी-संस्कृत पुस्तक विक्रेता, सैदमिट्ठा, लाहौर।

जैन-पर्वनिर्णयः (संवत् २००३ विक्रम)

चैत्र शुदि १ बुधवार २१ चैत्र ३ अप्रैल नूतनवर्षारम्भ श्रीविजयानन्द सूरीश्वर (आत्माराम जी)‡
चैत्र ,, ७ चंद्रवार २६ चैत्र ८ अप्रैल आयंबिल ओली पर्व प्रारम्भ ‡महाराज जन्मदिन
चैत्र ,, १३ रविवार २ वैशाख १४ अप्रैल जन्मतिथि श्री १००८ महावीर स्वामी
चैत्र ,, १५ मङ्गलवार ४ ,, १६ अप्रैल आयंबिल ओली संपूर्ण चैत्र पुनम श्रीसिद्धाचलजीपर्वदिन
वैशाख शुदि ३ शनिवार २२ ,, ४ मई अक्षय तृतीया श्री ऋषभ देवस्वामी वर्षी तपपारणादिन
ज्येष्ठ शुदि ८ शुक्रवार २५ ज्येष्ठ ७ जून विजयानन्द सूरीश्वर (आत्माराम) जी महाराज स्वर्गदिन
आषाढ़ शुदि ८ शनिवार २३ आषाढ़ ६ जुलाई आषाढ़ चौमासी अठाई प्रारम्भ
आषाढ़ शुदि १४ शनिवार ३० ,, १३ जुलाई चौमासी चौदस
,, ,, १५ रविवार ३१ ,, १४ ,, आषाढ़ चौमासी अठाई संपूर्ण
श्रावण ,, ५ शुक्रवार १८ श्रावण २ अगस्त नेमनाथ भगवान का जन्मदिन
भाद्रपद वदि १२ ,, ८ भाद्रों २३ ,, पर्युषण पर्व अठाई प्रारंभ
,, ,, ३० चन्द्रवार ११ ,, २६ ,, श्री कल्पसूत्र वाचनारम्भ
,, शुदि १ मंगलवार १२ ,, २७ ,, वीर जन्मोत्सव
,, ,, ४ शुक्रवार १५ ,, ३० ,, संवत्सरी पर्व अठाई संपूर्ण
,, ,, ११ शनिवार २३ ,, ७ सितम्बर जगद्गुरु विजय श्री हीरसूरी जी का स्वर्गदिन
आश्विन ,, ७ बुधवार १६ आश्विन २ अक्टूबर आयंबिल अठाई प्रारम्भ
,, ,, १५ गुरुवार २४ ,, १० ,, ,, ,, संपूर्ण
कार्त्तिक वदि ३० ,, ८ कार्त्तिक २४ ,, दिवाली पर्व श्री १००८ महावीर स्वामी निर्वाण दिन
,, शुदि १ शुक्रवार ६ कार्त्तिक २५ ,, श्री महावीर संवत् २४७३ शुरु गौतमस्वामी केवलज्ञान
,, ,, २ रविवार ११ ,, २७ अक्टूबर भाईदूज विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज का जन्मदिन
,, ,, ५ बुधवार १४ कार्त्तिक ३० अक्टूबर ज्ञान पञ्चमी (सौभाग पञ्चमी)
,, ,, ७ शुक्रवार १६ कार्त्तिक १ नवम्बर कार्त्तिक चौमासी अठाई शुरु
,, ,, १४ ,, २३ ,, ८ ,, चौमासी चौदस
,, ,, १५ शनिवार २४ ,, ६ नवंबर कार्त्तिकचौमासी अठाई संपूर्ण श्रीसिद्धाचलजी पर्वदिन
मार्गशिर ,, ११ गुरुवार २० मार्गशिर ५ दिसम्बर मौन एकादशी १५० कल्याणक पर्वदिन
पौष वदि १० बुधवार ४ पौष १८ दिसम्बर पौष दशमी श्री पार्श्वनाथ जन्मदिन
माघ वदि १३ चन्द्रवार ७ माघ २० जनवरी मेहरुतेरश श्री ऋषभदेव निर्वाण दिन
फाल्गुण शुदि ७ गुरुवार १६ फाल्गुण २७ फरवरी फाल्गुण चौमासी अठाई प्रारम्भ
फाल्गुण ,, १४ गुरुवार २३ फाल्गुण ६ मार्च चौमासी चौदस
फाल्गुण ,, १५ शुक्रवार २४ फाल्गुण ७ ,, फाल्गुण चौमासी अठाई संपूर्ण
चैत्र वदि ८ शनिवार २ चैत्र १५ मार्च ऋषभदेव जन्म तथा दीक्षादिन वर्षीतप प्रारंभ ❀
[❀ श्री केशरीयानाथ जी मेला

ज्योतिष कार्यालय के नियम

श्री मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र वर्षफल टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाए जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा २ विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछने वालों को पत्र लिखते समय ठीक २ वक्त लिख भेजना चाहिए। जन्मपत्र की फ़ीस ५) रु० से २५०) रु० तक। वर्षफल ५) से २५) रु० तक। टेवा १।) रु०। शुद्ध विवाह मुहूर्त प्रश्न और ग्रह मेलापक (कुण्डली मिलान) की फ़ीस २।) रु०। भारत से बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, ब्रह्मा, जापान, अमेरिका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुण्डली बनाने की फ़ीस ५) रु०। आयुर्निर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोगविचारादि) २५) से १००) तक। प्रत्येक कार्य की आधी फ़ीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फ़ीस भेज दें। आधी फ़ीस पेशगी आए बिना कार्यारम्भ नहीं होता। पत्र व्यवहार जहां तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में करना चाहिए। बैरंग-पत्र वापस किए जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी-पत्र भेजना ज़रूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है।

व्यापार के चान्स—अनुभवसिद्ध एक तरफे पक्के चान्स कभी २ आते हैं, प्राचीन ढंग के विचार से तेजो मन्दी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आने वाले सोना, चाँदी, बाजरा, गेहूँ रुई के २४ चान्स पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिये और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये। नोट—जो सज्जन हम से प्रत्यक्ष मिलना चाहें, वे जवाबी कार्ड भेजकर मिलने की तारीख निश्चय कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना, अम्बाला के मध्य सरहन्द जङ्क्शन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय—ग्रीष्म में ८ से ११ तक मध्याह्नोत्तर ३ से ६ तक। शीतकाल में १० बजे से शाम के ४ बजे तक। बाहर से अकेले आकर शान्त चित्त से एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिषकार्यालय (मार्तण्डभवन) रलवे स्टेशन के पास है।

शुभेच्छुः—राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष—श्रीमार्तण्डज्योतिष कार्यालय कुराली (पंजाब)

शीघ्रता करें ! शीघ्रता करें !!

भस्मों के बनाने तथा प्रयोग करने की अचूक पुस्तक

रस-विज्ञान

लेखकः—सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य पं० धर्मानन्दजी वैद्य
प्रिंसिपल, तनेजा आयुर्वेदिक कालिज लाहौर ।

आयुर्वेद शास्त्र में रस, उपरस, धातु, उपधातु आदि का शोधन मारण एक ऐसा विषय है जो ठीक तरीके से बन जावें तो उनके सेवन से प्रायः हर एक प्रकार के असाध्य रोग भी ठीक हो जाते हैं । अगर कहीं वह ठीक न बनें अर्थात् कच्चे ही रह जावें तो उसके कारण बजाये फायदे के उल्टा नुकसान हो जाता है । इसीलिये ऐसे कठिन प्रकरण को हमने उक्त वैद्य जी से सरल भाषा में विस्तृत विवेचन से लिखाया है ताकि अनजान से अनजान मनुष्य भी इस पुस्तक में लिखे तरीकों से उपरोक्त रस, उपरस, धातु, उपधातु आदि का शोधन, मारण तथा उनका गुण या प्रभाव और उनका भिन्न २ रोगों में भिन्न २ द्रव्यों के साथ प्रयोग विधि समझ सके । इस पुस्तक में केवल वही आजमाए हुय तरीके दिये गये हैं जिन से उपरोक्त भस्म आदि शास्त्रविधि तथा अनुभव के अनुकूल बन सकें और सब से बड़ी खूबी यह है कि इस सारे प्रकरण को इतना सरल कर दिया गया है कि अनजान मनुष्य भी इन भस्मादि औषधियों को बना कर दुःखी जीवों का उपकार कर सकता है और हजारों रुपये भी कमा सकता है । पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है और हर एक को इसे अपने पास रखना चाहिये । इस महंगाई के जमाने में छापने पर भी लगभग चार पांच सौ पृष्ठ की पुस्तक का दाम केवल ४) रु० रखा है । पुस्तक बहुत थोड़ी छपी है इस लिये शीघ्रता करें ।

मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, सैदमिट्ठा, लाहौर ।

हमारे पुस्तकालय से लाहौर,

कलकत्ता, बंबई, काशी, लखनऊ, यूरुप आदि समस्त स्थानों की छपी वेद, वेदान्त, व्याकरण, दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद आदि हर एक विषय की पुस्तकें बड़ी रियायत से मिलती हैं । आप को इधर उधर लिखने की आवश्यकता नहीं । जिस पुस्तक की भी आपको आवश्यकता हो तुरन्त हमें लिखें । पता हमारा याद रखें:—

पताः—

मोतीलाल बनारसीदास
पुस्तकां वाले, सैदमिट्ठा बाजार,
लाहौर ।

... ओर से बम्बई संस्कृत प्रेस लाहौर में छपा ।

मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, सैदमिट्ठा, लाहौर ।

लाहौर ।

यह पंचांग बघाट दरबार की ओर से बम्बई संस्कृत प्रेस लाहौर में छपा ।